



# कवि-श्री माला

\* उर्वू \*

कवि :

मुहम्मद इफ्ताल

सम्पादक-अनुवादक

मुहम्मद हसन



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक

बीहलाल भट्ट

मन्त्री

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

दिल्लीनगर, बर्मा



सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण—१९९९

मार्च १९९२

मूल्य—रु. २/-



मुद्रक

बीहलाल भट्ट

राष्ट्रभाषा प्रचार

दिल्लीनगर, बर्मा



## आमुख

इसका विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्षी अपने कार्य का लक्ष्य ०५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मन्त्रालय के आनेवाले रजत-जयन्ती महोत्सवके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके मान्य कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट कविका परिचय 'कवि-की भाषा' की पच्चीस पुस्तकोंने हिन्दी-भाषा-संस्थाद्वारा सार्वजनिक करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके समक्ष आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ कविका-सर्जकका परिचय करना एक कठिन कार्य है फिर भी अपनी भाषाओंके ध्यानमें रखते हुए जम्पानाम्य उन-उन भाषाओंके विद्वानोंकी सहायता से ही सुशुद्ध कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कविकी रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यका परिचय और कवि विशेषका परिचय दिया गया है। जिस भाषाके ये कविकीका चयन किया गया है, उनका चयन करते समय सन् १९०० से पूर्वका साहित्य और १९०० से बादका साहित्य—इस धाराके एक विभाजन-रेखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९०० के पूर्वके तथा १९०० के बादके साहित्यमें प्रचलित विचार-धाराके एक विशेष प्रत्यक्ष अन्तर्भाव-सा पाया जाता है।

डॉ० मुहम्मद इमामजी प्रस्तुत पुस्तकमें कवि-परिचय और कविकाओंके सम्पादित तथा अनुवादित कर खरी साहित्यिके इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। संघमें संकलित साहित्य परिचयके भी समूह अहमद 'अबोध' ने तैयार किया है। पुस्तकमें संकलित कविकाओंका चयन भी 'अबोध' की सहायतासे उपलब्ध हुआ है। संघकी आयुष्मण्डलिकाइन्दिरा देवी ने भी श्री ली एच. अहमदजी (डी०, सर के के इन्स्टीट्यूट ऑफ अन्वर्सेटिंग आर्ट्स, बम्बई) का उत्तर सहयोग मिल है उसके लिए समिति समीचीन आभारी है।

इसके अतिरिक्त लार्ड तथा अन्यत्र दृष्टियोंमें विमल-विमल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिल है उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

अन्त में प्रस्तुत संघ पाठकोंके खचित एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

*K. P. Singh*

सचिव,

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, बर्धा

## अनुक्रमणिका

|                     | पृष्ठांक |
|---------------------|----------|
| उर्दू-साहित्य-परिचय | १        |
| कवि-परिचय           | ३७       |
| काव्य-सञ्चय         | ५९       |

कवि-धी माळा  
उपू

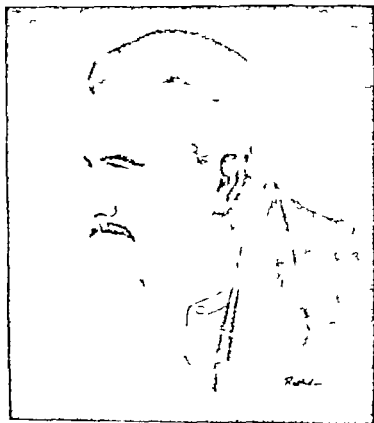


मुहम्मद इकबाल

## अनुक्रमणिका

|                     | पृष्ठांक |
|---------------------|----------|
|                     | १        |
| उर्दू-साहित्य परिचय | ३७       |
| कवि-परिचय           | ५९       |
| काम्य-सङ्ग्रह       |          |

कवि-थी माछा  
उर्दू



मुहम्मद इकबाल





# उर्दू साहित्य परिचय

[ प्रारम्भसे १९२० तक ]



उर्दू भाषा

और

उसका साहित्य

• • •

प्रारम्भिक-काल—१ (दक्षिण)

दक्षिण भारतपर अभाउहीन ब्रिजनीके आक्रमणके बाद हो ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ बरीं जिन्होंने दक्षिण भारतमें उत्तर भारतकी मिस्री जुली बोलीको विकसित होनेके लिए उपयुक्त वातावरण उत्पन्न कर दिया। इसमें पहली घटना है मुहम्मद तुगलकका बिस्लीकी जगताको यह आजा रैमा कि वह दिल्ली छोड़कर देवगिरि (बीकानाबाद) आबाद करे। इसरी उसके एक अधिकारी बकर खाँका विद्रोह करके अभाउहीन हुसैन बंमो बहमनी बनकर दक्षिणमें बहमनी राज्यकी स्थापना करना। भिन तीनों बहमनीने स्वभावतः दक्षिण भारतमें एक ऐसा वातावरण उत्पन्न कर दिया जिससे कामान्तरमें एक भाषा और साहित्यका विकास सम्भव हो सका।

हुसैन बंमो बहमनीने दक्षिणमें जिस बहमनी राज्यकी स्थापना की वह सन् १३४७ ई से १५२६ ई तक लगभग दो सौ वर्षोंतक दक्षिणमें राज्य करता रहा। अन्तमें अर्बान् सन् १५२६ ई में वह राज्य समाप्त होकर १—अमाद शाही २—बुरीद शाही ३—निजाम शाही ४—गारिद शाही और ५—मुतुब शाही नामक पाँच राज्योंमें विभक्त हो गया।

उत्तर भारतीयोंके बलिषर्मे पहुँचनेके कारण जो एक नई भाषा तथा साहित्यका विकास हो रहा था उसमें सबसे पहली रचना इती बहमनी कालमें प्राप्त होती है। स्वाजा बन्दानेबाज येसूदराज के पहले व्यक्ति है जिन्होंने उक्त भाषामें रचनाएँ की और जिनकी रचनाएँ प्राप्त होती हैं। स्वाजा बन्दानेबाज येसूदराज हिन्दीके सुप्रसिद्ध मुस्लिम सन्त मिर्जागुरूजी भीष्मदाके शिष्य तथा उत्तराधिकारी नसीरुद्दीन चिराम देहलवीके प्रधान शिष्य तथा उत्तराधिकारी थे। कहते हैं कि एक बार नसीरुद्दीन चिराम देहलवी पालक्रीपर कहीं जा रहे थे। पालक्री उठाकर चलनेवालोंमें उक्त येसूदराज भी थे। उनके बड़े-बड़े बाल पालक्रीमें फँस गए पर उन्होंने इससे हुंनेबाके कष्टकी और ध्यान न किया और अपने आध्यात्मिक मुस्की पालक्री उठाए चलते रहे। जब किसीके ध्यान दिखानेसे नसीरुद्दीन चिराम देहलवीको पता चला तो उन्होंने येसूदराज कहकर उन्हें सम्बोधित किया तभीसे वह येसूदराजके नामसे प्रसिद्ध हुए। और जब १४१२ ई में वे बलिषर्मे अपने विचारोंका प्रचार करने तथा लोकनुषारके लिए पर्चे और बहोकी जनतापर उनका व्यापक रूपसे प्रभाव पड़ा तो बन्दानेबाज अपनी मकसदबलककी उपायसे विभूषित किए गए।

स्वाजा बन्दानेबाज सन् १४१२ ई. में बुलबर्ग (बौलबुग्गा) पहुँचे और वही स्वामी रूपसे रहने लगे। स्वाजा बन्दानेबाज आध्यात्मिक साधकके साथ ही बहुत बड़े विज्ञान पुरुष भी थे अरबी और फारसीमें आध्यात्मिक विषयपर उनकी अनेक पुस्तक प्रसिद्ध थी। जब वे बलिषर्ग पहुँचे तो प्रत्येक धेकीके लोगोंने उनका हृदयसे स्वागत किया और बहुत ही धीघ उनके अनुयायियोंकी सख्या बढ़ने लगी। इन्ही अनुयायियोंके लिए जो निमन्त्रेह अरबी और फारसी भाषाओंसे परिचित न थे इस नई भाषामें कुछ रचनाएँ कीं। उन्होंने अपने अनुयायियोंके लिए निम्नी रचनाएँ की हैं इस सम्बन्धमें तो निश्चित रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता। उनमेंसे एकाग्र रचनाके अनिश्चित कोई प्राप्त ही नहीं है। जो रचना उनकी प्राप्त है उनका नाम येसूदराज-आधिकीन है। यह रचना एक छोटी-सी पुस्तिकाके रूपमें ही है और इसका विषय धार्मिक है। येसूदराजकी मृत्यु सन् १४२३ ई में हुई।

स्वाजा बन्दानेबाज येसूदराजके बाद उनके पीछे मय्यद मुहम्मद अब्दुल्लाह इनीनीने शेष अब्दुल्लाह बार्दिर जीलानीकी प्रसिद्ध अरबी बुग्नक निजामुल-बिग्नक का उक्त भाषामें अनुवाद किया।

वेक कि कहा जा चुका है बहमनी राज्यका अन्त इन प्रकार हुआ कि वह तब भाषामें विभक्त हो गया। इन स्वतन्त्र राज्योंमें बीजापुरके आदिल शाही राज्यबंद और योल्बुग्गाक बुलबुग्गाही राज्यबंदता भाषा और साहित्यकी उन्नतिकी दृष्टिसे विशेष महत्त्व है। आदिलशाही राज्यबंदके कालमें जो सबसे पहला नाम ज्ञानने आना है वह प्रसिद्ध मुस्लिम सन्त शाह भीरुजी रामुल उरगाऊना है। यह

मुक्त आदिल साहके राज्य—काल सन् १४९०—१५१८ ई मे हुए है। यह और  
यमें साह मीरंजी सम्मुख उस्थाङ्ककी कई रचनाएँ प्राप्त हैं यथा—

१—दाह मरमुबल कुलुब २—सबरस ३—बुधोनामा ४—दाहाबतुक  
झोडत ५—बुधनरुब।

साह मीरंजी सम्मुख उस्थाङ्कके साह बुरहानुद्दीन खानम भी अपने युवके  
सिद्ध सन्त और कवि हुए हैं। उनकी भी रचनाएँ प्रसिद्ध हैं जो इस  
कार हैं।

१—बसीयतुक हाथी २—गुस्तये-बाहिद ३—मसीमुल कलाम ४—  
मुब्लुबासेकीन ५—बघारतुजिक ६—हुज्वतुकम्बना ७—इरसाहलामा ८—  
मुनऊम्तुक ईमाल ९—मुब मुहेला।

साह बुरहानुद्दीन खानमकी मृत्यु सन् १५८२ ई० के लगभग हुई है। इन्होंने  
अपनी रचनाओंकी भाषाको बरनी कहा है। इनकी सभी रचनाएँ पद्यात्मक  
हैं और विषयकी दृष्टिसे सभी आध्यात्मिक हैं। इनकी समस्त रचनाओंमें मुब  
मुहेला बसीयतुकहाथी और इरसाह नामा अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। विषयके  
मन्मीर होनेपर भी भाषा सरल तथा काव्यात्मक सीखर्षसे परिपूर्ण है।

साह बुरहानुद्दीन खानमके पुत्र साह अमीनुद्दीन खासा अपने पूर्वजोंकी  
भांति आध्यात्मिक जीवन बितायेवाले सन्त पुरुष थे। यह और यह दोनों ही प्रकार  
की इनकी रचनाएँ प्राप्त हैं। मुहम्मत नामा और रमुबु-साकेकीन इनकी  
अत्यधिक प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

इन सन्त कवियोंकी पद्यात्मक और पद्यारमक रचनाओंके अतिरिक्त जो  
इनकी पद्यात्मक रचनाएँ उसी प्रकार फारसी मनसबी पर आधारित हैं विस  
प्रकार प्रेम भाषी सुधरी कवियोंकी प्रबन्धात्मक रचनाएँ हैं। अन्य अनेक ऐसे कवियोंकी  
रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं जिनकी रचनाओंके विषय धर्म तथा आध्यात्मिकके स्वरूपपर  
लौकिक रहे हैं। इस प्रकारके रचयिताओंमें सबसे अधिक प्रसिद्ध इबाहीम आदिल  
साह (१५८०—१६२६ ई) हैं। इबाहीम आदिल साहकी केवल इकिदनी भाषा  
और उसके काव्यसे ही प्रेम न वा प्रसूत भारतीय संगीतसे भी उसे अत्यधिक प्रेम  
था। इतना ही नहीं वह भारतीय संगीतका प्रामाणिक ज्ञाता भी था। नबरस  
नामक इबाहीम आदिल साहकी रचनासे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह भारतीय  
संगीतका अच्छा जानकार था। प्रसिद्ध है कि जब इन प्रकारकी पुस्तक लिखनेका  
उसके मनमें विचार आया तो उत्तर भारतसे विद्वानोंको बुलाकर उनसे पहले भाषाका  
अध्ययन किया तत्पश्चात् उक्त पुस्तककी रचना की।

इबाहीम आदिल साहने इस पुस्तकमें ब्रजभाषाका भी प्रयोग किया है और  
अरबी फारसी शब्द भी इसमें पर्याप्त आए हैं। विद्वानोंका अनुमान है कि यह पुस्तक  
१६ वीं शताब्दीके अन्त अथवा १७ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें लिखी गई होगी।

इब्राहीम आदिल साहूकी इस पुस्तक 'नवरत्न' की भूमिका फारसीके प्रसिद्ध कवि तथा लेखक 'जहूरी' ने लिखी है जिसे 'सिंह-नख जहूरी' के नामसे भारतके फारसी साहित्यकी प्रसिद्ध रचनाओंमें माना जाता है।

इब्राहीम आदिल साहूके पश्चात् मुहम्मद आदिल साहू बीजापुरकी राज-परीपर बैठे। मुहम्मद आदिल साहू तथा उसकी पत्नी बीबीकी कविता तथा कवियोंके अत्यधिक प्रेम था। इसकी मलिक ज़ुलतुन बीर बीकनर साहू उनके सम्बन्ध-कामके उत्प्रेक्षनीय कवि हैं। इस्तमी की एक रचना 'शावर नामा' प्राप्त है जो एक प्रबन्धात्मक काव्य रचना है। यह एक फारसी काव्यका अनुवाद है जिसे इस्तमी ने मुहम्मद आदिल साहूकी पत्नीके अनुरोधपर किया था। २४०० श्लोकोंके इस विज्ञान अनुवाद पन्थकी इस्तमी ने कैबल डेढ़ वर्षोंमें समाप्त किया था। अनुवादका काल लगभग १६४९ ई. है।

मलिक ज़ुलतुन की रचना भी प्रबन्धात्मक है। रचनाका नाम हीन बहिरत है। यह रचना अमीर खसरोकी एक फारसी रचनापर आधारित है।

सन् १६३६ ई. में बीजापुरकी राजपरीपर अलीआदिल साहू तृतीय बैठे। वह स्वयं कवि था और प्रसिद्ध कवि मुसरती का इसीके वाक्योंमें सम्मेलन हुआ। मुसरती की रचनाओंमें तीन प्रबन्धात्मक रचनाएँ प्रसिद्ध हैं १—अलीनामा २—मुहम्मदने बिरक ३—शारीये-सिफन्दरी। अलीनामा में मुसरती ने दक्षिण भारतमें मुसलमणों मराठों आदिल साहिबों और ब्रह्मघाहियोंके उक्त संघर्षकी कहानी लिखी है जो घटित प्राप्त करनेके लिए उस कालमें चल रहा था। इस रचनामें पहले अलीनामा नामक भाग भी अत्यधिक सुन्दर विषय विधा है। मुहम्मदने इरक में उसने मनीहर और यमुनाकलीकी उक्त प्रेम कथाका सुन्दर वर्णन किया है जो उक्त कालमें दक्षिणमें अत्यधिक लोकप्रिय प्रेम कथा थी तथा जिसे फारसीके काव्य कवि भी अपनी काव्य रचनाका विषय बना चुके थे। शारीये-सिफन्दरी मुसरती की अष्टौ रचना है जो १६४० ई. में बीजापुरके विघ्नरत और मुसरती के मृत्युके कारण पूरी न हो सकी।

बीजापुरके आदिल साही कालके कवियोंमें हाशिमि बीजापुरी भी एक प्रसिद्ध कवि हुआ। हाशिमि बीजापुरीकी रचना 'सुमुद्र-वलेगा' है। इनमें लगभग बारह हजार श्लोक हैं। हाशिमिकी मृत्यु १६९७ ई. में हुई।

इन कवियोंके अनिर्दिष्ट इस कालमें काव्य की अनेक कवि हुए हैं जिनके सम्बन्धमें यहां लिखनेकी आवश्यकता नहीं मान्य होगी।

बीजापुरके आदिल साही राजवंशके अनिर्दिष्ट दक्षिणके प्रिय राजवंशका भाग और नाशियर विजानरी दृष्टिसे महत्वपूर्ण स्थान है यह है बीजापुरका मुनुबगारी राजवंश। बहमनी राजवंशकी अन्तिमिके बाद यह राजवंश १६०८ में स्थापित हुआ। भाग और नाशियरकी दृष्टिसे इन राजवंश १६वीं शताब्दीका अन्तिम

वरन विशेष महत्त्वाका है। सन् १२९ में गोलकुण्डके राजमिहासपर मुहम्मद कुली कुतुब गाह बैठा। अल्प विद्येपताओंके अतिरिक्त वह एक महान कवि भी था। प्रसिद्ध है कि उसने एक साबसे भी अधिक घोर कह्ये। वह बखिखनी फारसी और तेलुगुमें कविताएँ रचता था। तेलुगुमें उनका उपनाम तुर्क मान था। बखिखनी का यह पहला कवि है जिनकी मारी काव्य रचना प्राप्त है थीर जिनका फारसीक अकण्ठि क्रमसे संग्रह किया जा सका है।

मुहम्मद कुली कुतुब गाह बाल्यवर्षमें बखिखनीका पहला कवि है जिनने भारतीय वातावरणके अनुसार कविताएँ रची है। वह मुस्लिम त्योहारकी भाँति ही हिन्दू त्योहारों बसन्त होली बिजामी आदिमें भी उत्साहपूर्वक सम्मिलित होता था। साहित्यकी दृष्टिमें मुहम्मद कुली कुतुब गाह ही वह व्यक्ति है जिसे बखिखनीका पहला और सर्व श्रेष्ठ कवि कहा जा सकता है। उसके पूर्वके कवियोंकी भाषामें वह प्रौढ़ता नहीं बिजामी देती जो वास्तवमें मुहम्मद कुली कुतुब गाहकी भाषामें प्राप्त होती है। मातृ भाषा और मातृभाषाकी दृष्टिमें मुहम्मद कुली कुतुब गाहका स्थान अत्यन्त ही।

बली का पूरा नाम शम्सुद्दीन बली उल्काह था। बली उनका उपनाम था। वे बीरंगाबादमें पैदा हुए थे बीस वर्षकी आयुमें वे अहमदाबाद (गुजरात) गए जहाँ कुछ दिनों तक उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा प्राप्त करनेके बाद आपन सम्बन्ध अबुल मयालीके साथ दिल्लीकी यात्रा की। यह यात्रा सम्भवतः बली ने सन् १७ में की थी। दिल्लीमें बली ने दाह सादुल्काह गुजरात से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। कुछ दिनोंके बाद अहमदाबाद लौट आए। सन् १७०० में बलीने फिर दिल्लीकी यात्रा की थी। सन् १७४१ ई में अहमदाबाद (गुजरात) में उनकी मृत्यु हुई।

भाषाकी दृष्टिसे बली की भाषावे तीन रूप हैं। एक रूप अर्थात् दिल्ली वासके पहलेका शुद्ध बखिखनी है दूसरा दिल्ली जानेके बादका अरबी मिश्रित बखिखनी है। और तीसरा वह है जिसे दिल्लीकी तत्कालीन भाषा अथवा रेखता कह सकते हैं।

### प्रारम्भिक-काल—२ (दिल्ली)

सन् १७०० में बली के दिल्ली पहुँचनेपर तथा उनकी काव्य-रचना देखन पर दिल्लीवालोंको इस सम्बन्ध पता चला कि वे अपनी बाल्यकालकी भाषाकी भी काव्य रचनामें प्रयुक्त कर सकते हैं और दूसरी ओर बली की दिल्लीमें एक एसी भाषा प्राप्त हुई जो बखिखनीके बखिखनीसे समानता रखता हुए भी बड़ी अधिक परिमार्जित थी। यह परिमार्जित दिल्लीकी भाषाके लिए स्वाभाविक भी था। एक तो वह दिल्लीकी स्थानीय भाषा थी दूसरे उमका कई पीढ़ियोंमें प्रयोग होना चला था और



तः अतः बहु दक्षिणमें पहुँची हुई भाषाकी अपेक्षा ठी निरक्षय ही एक निम्न वातावरण पहुँची थी उसे अधिक परिष्कृत होना ही चाहिए था। स्वभावतः जब बली के हिस्सेमें इस प्रकारकी भाषा प्राप्त हुई तो उसे उन्होंने निस्संकोच स्वीकार कर लिया। और जब बली दक्षिण ओट्टे की यही परिष्कृत भाषा उनके साथ दक्षिण गई। निरक्षय ही बली ने खानबुसकर अपनी भाषाको फारसी मिश्रित बनाकर लपट नहीं किया प्रामुख उसे उन्होंने उसके उस सम्बन्ध वातावरणके निषेध कर दिया जो बाल्यवर्षमें उसका अपना वातावरण था और जिसके बिना उसके विकासकार्य अथक ही रहता।

इस कालके कवियोंमें अत्यधिक प्रसिद्ध कवियोंके नाम इस प्रकार हैं —

उरदुलीग मजमून (मृत्यु १७४२ ई) साह मुबारक नाबक (मृत्यु ७२० ई) मुहम्मद शाकिर नाबी बहूसीग हाशिम (१७००-१७९२ ई) जने मारदु मिरबा मजहूरे जानेजीना एकरम ताबी फुजा आदि।

इस विकास कालमें दिल्ली और उसके आसपास ऐसे महान कवि उत्पन्न हुए कि भाषा और काव्य विकासकी चरम सीमापर पहुँच गया। इन कवियोंमें उन्हें विशेष ख्याति प्राप्त हुई तथा जो इतिहासमें घटा बनकर रहनेवाले हैं उनमेंसे कुछ के नाम इस प्रकार हैं —

सीता रस और और हुसन बजीर बीक नासिर मोयिन अकर बाब।

मीर का बाल्यक नाम मीर लकी था। मीर उपनाम है। वे मृत्यु ७२४ ई में अकबरशाह आगठमें पैदा हुए। किसी-किसी इतिहासकारने मीर पिनाका नाम मीर अमुस्ताह किया है किन्तीने मीर मृतकी। पर निश्चित तौर पर उनके पिनाका नाम मामूम नहीं है। मीर की मातृ इन बर्षकी ही थी पिनाका बेहाल हो गया। इन प्रकार मीर का जीवन प्रारम्भमे ही कठिनाइयोंमें लगा। इन्हीं कठिनाइयोंके कारण मीर आकरने दिल्ली चले गए, यहाँ मुहम्मद रैत कलीम नामक एक सज्जनके नाम मीर की बहुलका विवाह हुआ था ही खाने मारदु जी इनके सम्बन्धमें मीर के माता लकी ने रूते थे। यही कि प्रारम्भमें कुछ दिनों तक मीर खाने मारदु के यहाँ रहे। पर खाने मारदुने मीर का स्वभाव मिला न था इसलिए बहुत जल्दी ही मीर को खाने मारदुवा से छुड़ाया गया। दिल्लीमें रहते हुए मीर ने बहुतसे छन्द-भाषी व्यक्तियोंके ही सीखी की। पर मीर की उमी प्रचार कभी लकीचका जीवन ज्ञान न था किन प्रकार उन समय दिल्लीका जीवन नईद अखिर बना रहता था। इन कारण यचना चाहिए कि मीर का बहु जीवन जो उनके बाल्यके वर्षों उपरन्ध्र उनमें बाल्यवर्षमें दिल्लीने मंचटुभं अखिर जीवनकी यथाही है।

जब मीर की रचनाओंमें रूप बने है —

दिल्ली दरवासीका क्या मजदूर है।

यह नगर ही मर्तवा सूझा गया ॥

। वास्तवमें दिल्लीके कूटनेकी ही बात होती है। मीर की रचनाओंमें दिल्लीकी कल्पपूर्ण कहानी जिस प्रकार काव्यकी भाषामें हमें प्राप्त होती है उस प्रकार अग्यन ही नहीं मिलती। मीर की आपबीती और बागबीती दोनोंमें एक प्रकारकी जो मानता भी उतने उनके काव्यको कल्याण तथा बेदनासे परिपूर्ण कर दिया है। और उन्हें यह स्वान दे दिया है जो जहाँ तक नबक काव्यका सम्बन्ध है किसीको प्राप्त ही हो सका। मीर के परबर्ती कवियोंमें मीर की जिस प्रकार प्रशंसा की जायद ही किसी कविकी प्रशंसा इस प्रकार उसके परबर्ती कवियों की होगी।

‘शास्त्र कहते हैं —

रखते के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो शास्त्र ।

सुनते हैं अपने जमानेमें कोई मीर भी या ॥

जिसी प्रकार —

‘शास्त्र अपना यह झूठा है कौते ‘शास्त्र’ ।

आप बेबहेरा है जो नोतकिरे ‘मीर नहीं ॥

मीर —

न हुआ पर न हुआ ‘मीर’ का अन्धाम नसीब ।

जोक पारोने बहुत जोर पज्जमें मारा ॥

यदि अनेक प्रशंसापूर्ण काव्य मीर के परबर्ती कवियोंने मीर के सम्बन्धमें द्ये है।

मीर हसनका पूरा नाम मीर बुलाम हसन वा हसन उपनाम है। पिताका नाम मीर जाहक था। मीर सन् १७१६ ई में दिल्लीमें पैदा हुए बापू कर्पकी शायुमें पिताके साथ छैबाबाद गए कुछ दिनोंके बाद लखनऊ गए मीर नहीं स्थायी रूपसे रहने लग। ये पहले अपने पिताको अपनी काव्य रचना दिखाते थे। लखनऊ पहुँचनेके बाद मीर स्याउदीन क्या के पिप्य बने। अन्तमें स्थाया मीर ररे मीर उद्दी मीर और चौदा का अनुकरण करने लगे।

सन् १७८६ ई में मीर हसनका देहान्त हुआ।

उनकी रचनाओंमें एक काव्य-संग्रह तथा अनेक मसनवियाँ (प्रबन्ध-नाम्य) और एक फारसी भाषामें रचता के कवियोंका मयन है।

नबक काव्यमें भी मीर हसनका स्वान उन्पेक्षणीय है पर जिन रचनाओंमें उनको सबसे अलग स्थान दिया है वे उनकी मसनवियाँ हैं। मसनवियोंमें भी मसनवी ‘महेदकबयान’ जिसे मसनवी मीर हसन भी कहा जाता है ऐसी रचना है जिनकी मूलनामों कोई अग्य रचना नहीं टह्यती।

नबीर अकबरवादीका नाम वाली मुहम्मद है नबीर उपनाम है। ये सन् १७४० ई में दिल्लीमें पैदा हुए। परन्तु नबीर का सारा जीवन मायघ अर्थात् अकबरवादीका बीता।

आयरैके शाहजहाँ महम्मद वहाँ नबीर ने अपने जीवमके रिम विद्याये में सन् १८३० ई में उनकी मृत्यु हुई और उसी वरमें जिसमें रहने में जगदी समाधि बनाई गई।

जौड़ का नाम शेख मुहम्मद इब्राहीम था। जौड़ आपदा उपनाम है। सन् १७८९ ई में उनका जन्म हुआ और सन् १८३४ ई में पटनाकी मृत्यु हुई। वह जन्मसे मृत्यु तक दिल्लीकी कब्रियाँ छोड़कर कहीं न गए। प्रसिद्ध है कि एक बार महादजा बन्दूकालने यह हैदराबाद बुलाया था पर वे न गए। इसी घटनासे सम्बन्धित उनका निम्न वेष्य बहुत प्रसिद्ध है —

जहाँ है मुल्के-बकामें इन विनों कब्रें-सखुन।

तीन जामे जौड़ वर दिल्लीकी कब्रियाँ छोड़कर॥

बीस बयको आयुष बहादुर साह बकरने जो उस समय मुगलशाहके उत्तराधिकारी थे जौड़ को अपना काम-मुक बना लिया। बकर की प्रशंसामें उस समय जौड़ ने जो कविता लिखी उसपर उन्हें साकारानि-द्विष की उपाधि प्रदान की गई। जौड़ के प्रिय्यामें कई प्रसिद्ध कवि हुए हैं। बकर आमार माबक बीरान जहौर अतबर और बाप इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं।

शानिब का नाम मिर्जा अबदुल्लाह बेग था। सन् १७९७ ई में आयरैके इनका जन्म हुआ। अभी पाँच ही वर्षके हुए थे कि पिताका देहात्य हो गया। कुछ दिनों तक बचाने उनका पालन-पोषण किया पर बार बय बार उनकी भी मृत्यु हो गई। जब अबदुल्लाह बेगको ननिहालमें रहना पड़ा। ठेरह वर्षकी आयुमें दिल्लीके एक प्रसिद्धिग कुत्तमें सनरा विवाह हो गया और तबमें वे स्वामी बकम दिल्लीमें ही रहने लगे। जिस समय अबदुल्लाह बेग दिल्लीमें रहने लगे वे दिल्ली काब्य-बर्षाका केन्द्र बनी हुई थी। जब उनकी बचिको आयुष होनेका उपयुक्त अवसर प्राप्त हुआ। दिल्लीमें अभी तक ऐसी श्विति थी कि फारसीमें काब्य-रचना करना विशेष महत्त्वकी बात समझी जाती थी। कुछ ऐसे कवि भी थे जो फारसीमें ही अधिग्राह्य रचनाएँ करने थे। ऐसे फारसी कवियोंमें मिर्जा अबदुल्लाह कारिर बेरिल से अबदुल्लाह बेग सबसे अधिक प्रभावित हुए और काब्य रचनामें उनका अनुकरण करने लगे।

दिल्लीके सनरासीय सिष्ट समाजकी बचिके अनुसार अबदुल्लाह बेग बर्षात् शानिब भी फारसी और देवना में काब्य-रचना करने लगे और अपने केवला काब्यवर इना विरवान भी हो चला था कि वह फारसीमें मुल्ता बरत हुए शिगमकोष कहने लगे थे —

पर कोई कहे कि रेखाता क्योंकि ही रखे कारणी ।

मुफ्तए-याक्ति एक बार पढ़कर उसे सुना कि पों ॥

रेखाता के कवियोंमें याक्ति के स्थानके सम्बन्धमें इतना ही कहा जा

सकता है कि गत पचाम वर्षोंमें याक्ति पर जनेक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखस चुके हैं । याज भी याक्ति का अध्ययन करनेवालोंकी कमी नहीं है । और एसा महसूस होता है कि भविष्यमें भी याक्ति का अध्ययन होता रहेगा ।

## विकास-कास—२

### सम्बन्ध

दिल्लीकी केन्द्रीय राज्य-याक्तिके समाप्त होनेका परिणाम यह हुआ कि दिल्लीके वास-योजनामें जनेक छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गए । इन राज्योंमें अजमेर, राजपुर, ताण्डा फर्रुखाबाद फर्रुखाबाद अजीमाबाद तथा हीरपुराबाद मुख्य हैं । इनमेंसे कुछ राज्य तो बहुत जल्दी ही समाप्त हो गए पर अजमेरका राज्य बहुत दिनों तक स्थिर रहा । सन् १७२४ ई के लगभग इन राज्योंकी स्थापना हुई और सन १८३६ ई तक यह अपने पुरे गौरवके साथ चलता रहा ।

यद्यपि मुजावद्दिल्लिाके राज्य-नात्ममें ही सौरा सोब कुगा तथा जाहिक आदि या चुके थे पर वास्तविक रूपसे आमफुहीलाके राज्य-कास ही उर्दू साहित्यका सम्बन्धमें विकास हुआ । १९वीं शताब्दीके प्रारम्भमें अजमेरका राज्य पूर्णरूपसे स्थापित हो चुका था अतः जो कवि दिल्लीकी तबाहीके कारण दिल्ली छोड़कर यहाँ आते उनका यथोचित स्वागत किया जाता । निम्नलेह् इस प्रकारके स्वागतमें दिल्लीकी गीता रिखालेका भी जोड़ा बहुत साथ रहता होता । हमारे अजमेरके धामकीकी कला तथा साहित्यकी और स्वाभाविक रुचि भी प्रेरक सिद्ध होती है । प्रारम्भमें दिल्लीसे आनेवाले उन लोगोंमें जिन्होंने सखनऊके साहित्यिक क्षेत्रकी अत्यधिक प्रभावित किया जिनका ममहूदी खुरखन तथा भीर हुमन विशेष महत्व रखत हैं ।

कहना न होमा कि ये चारों कवि जो सखनऊके जीवनसे प्रभावित भी हुए और सखनऊके साहित्यिक क्षेत्रकी प्रभावित भी किया दिल्लीसे ही सम्बन्ध पहुँचे थे । और इसका कारण राजनीतिक वा अर्थात् दिल्लीकी तबाही । एक बार दिल्ली बन्दार हो रही थी और हमारी और सखनऊ आपाद हो रहा था । सखनऊकी इन मावारीका सम्बन्ध हर क्षेत्रमें था । सब ही सखनऊ अपने आपकी हर क्षेत्रमें सखनऊके मिला रिखाता चाहता था । यह सब जो एक जन्मे समय तक दिल्लीकी केन्द्रीय राजकीके अधीन सुबेदारके द्वारा स्थापित होता रहा था केन्द्रीय याक्तिके निरस्त होनेक साथ साथ स्वशासन हाथ-निर निकालने पुरु कर दिने थे । मही तक कि पाजीउहोन हीरने ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी महायता केन्द्र बाबुदाहकी उगाधि लागू कर भी और उन नाम मावके चले आने हुए सम्बन्धकी भी समाप्त कर दिया था सन् १०० वर्षोंमें जन्म

या रहा था। इस राजनैतिक परिवर्तनकी प्रतिक्रिया लखनऊके सारे जीवनमें उभर आई। कोई क्षेत्र ऐसा न बचा जिसमें लखनऊने दिल्लीसे मिल्न अपना स्थापन बनानेका प्रयत्न न किया हो। भाषा और साहित्यके क्षेत्रमें लखनऊस वही अधिक अनुकूल परिस्थितियाँ भी उत्पन्न हो गई थीं। आये दिनोंके राजनैतिक परिवर्तनोंके कारण जो दिल्लीके जीवनमें अस्तिवृत्ता थी सो ठी भी ही देवी और विदेशियोंकी कूट खमोटने आधिक संकट भी उत्पन्न कर दिया था। ऐसी बर्षामें दिल्लीके लोगोंके सामने प्राकृतिक संकटोंमें यह प्रश्न आता ही रहता था कि —

‘हमने यह जाना कि दिल्लीमें रहें जायेंगे क्या ?’

घानेकी समस्याका जब दिल्लीमें समाधान न मिल सका तो लोखरिस्लीकी याद हृदयमें किमें हुए और मिटी हुई दिल्लीका मुनगान करते हुए भी अपनी प्यारी दिल्लीकी छोड़नेकी विचार हो गए। रिस्ली छोड़नेके बाद वहाँ लोगोंकी घानेकी समस्याका समाधान रिखाई पड़ता था वह लखनऊ ही था। लखनऊके घानक भी दिल्लीसे बढ़कर लखनऊको बनाना चाहते थे और इस प्रकार दिल्लीसे स्वतन्त्र अपने अस्तित्वकी महत्ताका प्रदर्शन करके आनैतिक सम्मोच भी प्राप्त करना चाहते थे अतएव दिल्लीसे जो भी बुनी व्यक्ति लखनऊ आता लखनऊमें उसका स्थापन किया जाता और लखनऊके रूपमें उनको दिल्लीकी पत्नियोंकी याद मुतानेका प्रयत्न किया जाता। ऐसे बुनी व्यक्तियोंमें ही रैखता के के कवि भी थे जिन्होंने आधिक संकटोंमें विरह होकर लखनऊकी राह ली थी।

इत्या का पूरा नाम इत्या अल्ता थी था उन्होंने अपने नामके ही अगले अजीबको अपना उपनाम बना लिया था। इनके पिताका नाम मायाबस्ताह था। मायाबस्ताह दिल्लीमें मुघियाबाद चले गए थे वहीपर इत्या का जन्म हुआ। इत्या मुघियाबाद छोड़कर चाह आलमके राज्यकालमें दिल्ली पहुँचे। यद्यपि बहु बहु समय था जब दिल्लीपर नादिरशाहका हमला हो चुका था। दरबार नष्ट हुआ था और शाहआलम नाम बाबकी ही बाहरगाह रह गए थे। पर उन्होंने इत्या का बड़ा आदर-जम्मान किया। पर इत्या की महत्तावाचाटे अनुभार दिल्लीकी परिस्थिति न थी। अतः कुछ दिनों बाद वे दिल्लीमें लखनऊ पहुँचे। लखनऊमें उन्होंने शाहआलम मुनमान टिकोहके वहाँ नीकरी कर ली और थोड़े समय बाद अपने बिनोरी स्वभाव और प्रयत्नोंसे मुन्नेमान टिकोहके बाम्ब-मुद बनडकी का स्थापन के किया।

पर इत्या किस स्वभावके व्यक्ति थे उनको हमनेसे ही मन्तोप होनेवाला न था अतः विनी-न-विनी प्रकार प्रयत्न करके लखनऊके तरतामीन घानक मबाद मबादत अथी यदिके दरबारमें पहुँच गए जहाँ बहुत समय तक उनका जीवन कुछ और मन्तोपके नाम बीना। अन्तमें उनके बिनोरी स्वभावने मबादके घानको उनकी

रसे केर दिया और उनके जीवनके अन्तिम दिन बड़ी ही दुःखपूर्ण अवस्थामें बीते ।  
इन्धा का लखनऊ ही में सन् १८१७ ई में देहांत हुआ ।

एक काव्य-संग्रहके अतिरिक्त इन्धा की दूसरी महत्त्वपूर्ण रचना 'दरियाए  
शाहजद' है । इस पुस्तकमें भाषा-विज्ञान व्याकरण तथा काव्य-शास्त्रपर विचार किया  
जा है । यह पुस्तक फारसीमें है पर इसका सम्बन्ध बड़ी बोझीसे है । तीसरी  
हल्कपूर्ण रचना जो कहानीके रूपमें है 'रानी केतकीकी कहानी' है । इस कहानीको  
इन्धा ने यह प्रयत्न करके लिखा है कि हिन्दवी छुट किरी और भाषाका पुट न  
हाने पाए ।

मसहूड़ी का नाम शेख मुकाम हमदानी था मसहूड़ी उनका उपनाम है ।  
मसहूड़ी' अमरोहाके रहनेवाले थे वे मुवावत्सामें दिल्ली चले गए थे । दिल्लीमें रहते  
पूरे वे बहूँके कवि-सम्मेलनोंमें जाते-जाते रहते थे । इस प्रकार साहित्यिक जीवनसे  
भी उनका सम्बन्ध था । कुछ दिनों तक दिल्लीमें नौकरीकी खोजमें भटकते रहे ।  
अन्तमें लखनऊ चले गए, वहाँ मिर्जा मुलेमान सिक्कोहके यहाँ नौकर हो गए और अन्तमें  
मुल्मान सिक्कोहके काव्य-ग्रन्थके स्थान तक पहुँच गए । यहाँ मसहूड़ी और इन्धा  
ने अपने स्वार्थोंको सुदृढित रखनेके लिए सपड़े होते रहते थे । वे सपड़े इतने बढ़  
गए थे कि एक दूसरेको नीचा दिखानेके लिए बहुत नीचे तक उतर आते थे ।  
निस्सन्देह इस प्रकारके सपड़े लखनऊके उस जीवनके स्वामाधिक परिणाम थे जिसने  
लखनऊको विकसित तथा जानीब-शमोबकी ओर उन्मुख कर रखा था और  
लखनऊके साहित्यको भी बहुत हद तक प्रभावित कर रखा था ।

मसहूड़ी की मनमा उच्च कोटिके नाम्नाचार्योंमें की जाती है  
कविके रूपमें भी वह पर्याप्त प्रसिद्ध है । हाँ उनकी अपनी कोई निश्चित  
सीधी नहीं बन सकी जिसका कारण बड़े-बड़े कवियोंके अनुकरणकी ओर उनकी  
धृति थी ।

जुरमथ जिनका नाम शेख कलन्दर बख्श था दिल्लीसे फैजाबाद आए थे  
उन्होंने बड़ी शिक्षा प्राप्त की थी । जिस समय वे दिल्लीसे लखनऊ आए लखनऊमें  
मिर्जा मुलेमान सिक्कोहके दरबारकी बड़ी धूम थी । मुलेमान सिक्कोह साहजकामके पुत्र  
थे और आठफुहीम्हारे राज्यकालमें लखनऊ चले आए थे । वे स्वयं तो कवि थे ही  
कवियोंका बड़ा आदर-सत्कार भी करते थे स्वभावतः दिल्लीसे जो भी कवि लखनऊ  
आता था मुलेमान सिक्कोहकी छत्रमें अवश्य पहुँचता था । जब जुरमथ आए  
तो वे भी उच्च मुलेमान सिक्कोहके दरबारी बन गए । उस कालके राज्याधिक  
कवियोंकी तरह जुरमथ मुसहूड़ी और इन्धा में दरबारमें मुख्य स्थान प्राप्त  
करनेके लिए परस्पर जो बातें बला करती थीं और एक दूसरेको नीचा दिखानेके लिए  
जिस प्रकारके पहचान रहे जाने थे वे नामान्तकालीन राज्याधिक साहित्यका अच्छा  
उदाहरण हैं ।

दिम्बीस जी प्रसिद्ध कवि लखनऊ आए थे उनमें एक मुल्ताम हसन भी थे जो मीर हसनके नामसे प्रसिद्ध हुए। हम मीर हसनके पिताका नाम बाहिक बा। 'बाहिक' उपनाम ही मामूम होता है। बाहिक दिम्बीसे फैजाबाद गए जहाँ मीर हसन भी उनका साथ गए थे। मीर हसनकी प्रसिद्धि महानबी सहस्रसत्रमान के कारण है। इस महानबीके पउनेसे उक्त कालके बीबनकी समझनेमें पर्याप्त सहायता मिलती है।

भापा और साहित्यके विकासकी दृष्टिसे लखनऊम जिनको विशेष महत्व प्राप्त हुआ है उनमें नासिख साहिब मनीम अनीस बबीर मुख्य हैं।

नासिख का नाम शेख इमाम बख्श बा। फैजाबादमें उनका जन्म हुआ था पर लखनऊम उनके बीबनके अधिकारों दिन व्यतीत हुए। काब्य-रचनामें बहुत दीप्त उनकी ऐसी प्रसिद्धि हुई कि बड़े-बड़े राज-कर्मचारी उनके शिष्य बन गए। हम प्रचार यद्यपि उन्होंने राज दरबारसे अपना सम्बन्ध स्थापित नहीं किया पर उनके इर्द-पिर्द राज दरबारका आभावरण बना रहता था। ऐसी स्थितिमें उनको दरबारके नियमोंका पालन करना पड़ता था। पर उनका स्वाभिमानी उन्हें ऐसा करने न देता था। ऐसी स्थितिमें उन्हें लखनऊ छोड़ना पड़ा और उन्होंने अपने बीबनका कुछ काल इलाहाबाद कानपुर फैजाबाद तथा बनारसमें बिताया।

लखनऊमें भापा और साहित्यका जो विकास हुआ है उसमें सबसे बड़ा धाम नासिख का हो है। नासिख भापाके सम्बन्धमें बहुत सगर्भ और सावधान रचनेवाले व्यक्ति थे। हमका परिचय यह हुआ कि लखनऊम भापा बहुत कुछ परिवर्तित हो गईं। बहिरी दृष्टिसे यद्यपि नासिख को कोई उच्च स्थान प्राप्त नहीं हो गया पर भापाके मूळ प्रयोग और कर्मचारियोंका बचावकर प्रयोग उनकी लक्ष्य बनी विशेषता है। भापाकी और विशेष ध्यान देनेके कारण भापा ही अक्षय परि-मात्रित हो गईं, पर विचार और भाषाके स्वातंत्र्य लोभोंका ध्यान वाक्यके बाह्य धम धम-बोवना तथा अर्थकार-वीरतापर ही केन्द्रित हो गया जो वाक्यकारमें लखनऊके वाक्यकी विशेषता बन गई।

नासिख की ही भाषा काया है इन्होंने आदिता भी लखनऊके प्रसिद्ध बहिरीमें हुए हैं। आदिता के पिता काया आदीबख्श मराठ मुन्नाइरीकाके नाममें दिम्बीम फैजाबाद बन गए। आदिता का बहीपर जन्म हुआ। वाक्यकारमें ही पिताका वैशाल्य हो गया जिसमें उच्च शिष्या प्राप्त न कर सके। बड़े हीनगर तथा विद्या मुन्नाइर लकी था। ताकती के पहाँ मोर ही गए और उन्होंने साथ लखनऊ जाने आए। उन समय लखनऊम इत्या और मुन्नाइरी के बीच साहित्यिक संलग्न पना हुआ था। आदिता मुन्नाइरी के शिष्य हो गए। पर कुछ ही दिनी बाद मुन्नाइरी से विदाई हो गया और लखनऊ आया नाम्म लखन ही टीपमें रहने लग गए।

नासिख और आतिथ के समसामयिक होनेके कारण उस समयमें सखनऊके कवि भी दो भागोंमें बँट गए थे। कुछ सौंद नासिख के प्रभावमें थे और कुछ आतिथ के। परिपामस्वरूप इन दोनों महाकवियोंके बीच कभी-कभी भौंक-भौंक भी हो जाया करती थी। साम ही भाषा और काव्यकी दृष्टिसे यह बड़ा काम हुआ कि इस प्रतिस्पर्धिक कारण दोनों महाकवि अपनी रचनाओंपर अधिक सम्मीलनात्मक ध्यान देने लग गए।

आतिथ की भाषा बहुत सुन्दर सरल और प्रवाहपूर्ण है। नासिख और आतिथ से सबसे बड़ा घेद यह है कि नासिख की भाषा जहाँ अनावश्यक रूपसे वर्णकारोंसे लची हुई है वहाँ आतिथ की भाषा बहुत सरल तथा स्वाभाविक है। आतिथ को सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने भावोंको प्रभावपूर्ण तथा चित्ताकर्षक भाषामें व्यक्त करत हैं। आलोचकोंका कहना है कि इस दृष्टिसे भीर और नासिख के बाद यदि किसीको स्थान दिया जा सकता है तो वे आतिथ हैं।

मसीम का पूरा नाम पण्डित रमाचन्द्र कौल था। मसीम उनका उपनाम है। वे काश्मीरी ब्राह्मण थे। आतिथ के दिव्योंमें इनका मुख्य स्थान है। वेस इन्होंने मजल भी लिखी। परन्तु इनकी प्रसिद्धि मसनवी मुल्जारे मसीम के कारण है। उर्दूके मसनवी साहित्यमें मसनवी सेइइकबान के बाद सबसे प्रसिद्ध मसनवी यही मसीम की मुल्जारे मसीम है। मसीम का १२ वर्षकी आयुमें सन १८४३ ई में सखनऊमें देहाल हुआ।

यद्यपि उर्दूके सारे काव्यमें जिस प्रकार मजलना सर्वाधिक प्रचलन रहा है उसी प्रकार सखनऊमें भी मजल काव्य ही सर्वाधिक रचा गया है। पर जिस समय सखनऊ नासिख और काव्यकारोंके कारण काव्यके बाह्य रूपपर अधिक ध्यान देनेवाला था और रचनाओंमें स्वाभाविकताके स्थानपर कृत्रिमताका अधिक-अधिक प्रचार हो गया था। सखनऊके काव्यकारोंमें दो ऐसे कवियोंका उदय हुआ जिनकी रचनाओंने उक्त अमूल्य अथवा अस्वभाविकताके स्थान पर स्वाभाविकताके स्थान पर अधिक ध्यान देनेवाला था और रचनाओंमें स्वाभाविकताके स्थानपर कृत्रिमताका अधिक-अधिक प्रचार हो गया था। सखनऊके काव्यकारोंमें दो ऐसे कवियोंका उदय हुआ जिनकी रचनाओंने उक्त अमूल्य अथवा अस्वभाविकताके स्थान पर स्वाभाविकताके स्थान पर अधिक ध्यान देनेवाला था और रचनाओंमें स्वाभाविकताके स्थानपर कृत्रिमताका अधिक-अधिक प्रचार हो गया था। सखनऊके काव्यकारोंमें दो ऐसे कवियोंका उदय हुआ जिनकी रचनाओंने उक्त अमूल्य अथवा अस्वभाविकताके स्थान पर स्वाभाविकताके स्थान पर अधिक ध्यान देनेवाला था और रचनाओंमें स्वाभाविकताके स्थानपर कृत्रिमताका अधिक-अधिक प्रचार हो गया था।

यद्यपि यहाँ जहाँ दिया मुसलमानोंका प्रभाव रहा है वहाँ वहाँ इन मजलियों व मसिपोंसे हिन्दी-अ-हिन्दीका प्रचलन भी बढ़ता रहा है। इसीविषये मसिपोंका प्रचलन बँधनेमें भी मिलता है। पर इसमें मन्दैह नहीं कि मसिपोंकी साहित्यिक महत्त्व



लखनऊमें ही प्राप्त हुआ। लखनऊमें भी सर्वाधिक शनीस और दबीर की रचनाओंमें।

शनीस' और दबीर के पूर्व लखनऊके मतिषा कवियोंमें सर्वाधिक प्रतिष्ठ दिख्सीर फ़रीह बलीक और जमीर हुए हैं। इन्हीं जमीर के लिखा शनीस और दबीर हुए जिन्हें निस्सन्देह मतिषाह काव्यका पूर्व और अन्त कहा जा सकता है।

शनीस का पूरा नाम मीर बकर शनीस था। शनीस इनका उपनाम है। इनके पिताका नाम मीर बलीक था। मीर बलीक फ़ैजाबादमें रहते थे। फ़ैजाबादमें ही मीर शनीसका सन् १८४४ में जन्म हुआ। बड़े हुंतेपर शनीस अपने पिताके साथ फ़ैजाबादसे लखनऊ चले आते पहुँचि बाहर थे केवल इकाहाबाद बसाराह हुंदाबाद और परगना गये। लखनऊमें बाहर जाना वे पसन्द नहीं करते थे जब कभी बाहर जानेका प्रसंग आता था तो कहते कि मेरी कविताको इसी पहरके लोग ठीकसे समझ सकते हैं अथवा स्वामीके लोग इसका क्या आनन्दन करेंगे। लखनऊमें ही सन् १८७४ ई में शनीस का देहान्त हुआ।

मतिषा के हमारे कवि मिर्जा सुलामत शनी दबीर थे। दबीर का जन्म दिख्सीमें हुआ। दबीर के पिता दिख्सीसे लखनऊ चले आये थे वही दबीर का लाल जीवन बीता। जैसा कि कहा जा चुका है शनीस और दबीर समताधिक कवि थे। अतः दोनोंमें प्रतिस्पर्धा भी हुई ही रही और लखनऊके मतिषा काव्यसे पितृवसी रहनेवाके लोग शनीसिने और दबीरिसेके नाम से दो भागोंमें बँट गये।

शनीस और दबीर के काव्यकी विशेषताओंके सम्बन्धमें यही कहा जा सकता है कि जिस प्रकार शानिख और आशिष की भाषा तथा वर्णन शैलीमें कृत्रिमता और स्वाभाविकता पायी जाती है उनी प्रकार शनीस और दबीर की रचनामें है।

शनीस की रचनाओंमें उर्दू सरलता तथा स्वाभाविकता है वही दबीर की रचनाओं में स्तब्धता और कृत्रिमता। शनीस और दबीर की रचनाओंके इसी घेरेने शनीस को लोकप्रिय बनाया और दबीर सोदप्रिय न हो सके।

जैसा कि कहा जा चुका है शनीस और दबीर के इन मतिषा काव्य में लखनऊके उम जोबबको जो हर प्रकारसे आनन्द शनीस तथा दिखानिगा की और अचलर का और साहित्य भी जिनके लिए प्रेरक मित्र ही रहा था उनीकी कविको मोह दिया। और इन प्रकार लखनऊकी भाषा और काव्यमें लज्जुलन आ गया।

### आधुनिक-काल (पद्य) रामपुर और हुंदाबाद

सन् १८३७ के स्वतन्त्रता संशामक विद्रोह होने तथा अंग्रेजी राज्यके वृद्धयमें स्थापित हो जानेके बाद दिल्ली और लखनऊके उर्दू छात्रोंके भावने जीवन मारल सम्बन्धी अदिल समराजों आ गयी। राज्यके इन प्रकार परिष्कार ही पानेक बार

जब उनके स्थिरे यह सम्भव न रह गया था कि पूर्ववत् अपने अपने स्वानोंपर रह सकें उसी प्रकार जीवत बिठा सकते थे जिस प्रकार अभी तक बिठाते जा रहे थे। मरणाशयोंकी कृष्टि मात्र पायके उन स्वानोंकी ओर मयी जहानि घासक बोड़ी का साहित्यिक रचि रखत थे।

इन स्वानोंमें जहाँ दिल्ली और सखनऊके शासक उन १८२७ ई के पक्षे विशेष रूपस जिनका उल्लेख किया जा सकता है वे इस प्रकार हैं —

फर्रुखाबाद अमीराबाद मुसिफाबाद टाका टोंक मंत्रालय घोषा रामपुर और हैदराबाद। इन स्वानोंमें सर्वाधिक महत्व रामपुर और हैदराबादका है।

अप्य स्वानोंकी अपेक्षा रामपुरमें उर्दू शासक अधिक संख्यामें एकत्रित हुए इसका एक कारण तो यह था कि रामपुर दिल्ली और सखनऊके बीच ही है। दूसरा कारण यह था कि रामपुरके शासकोंको स्वयं भी शासकोंसे रचि भी और वे शासकों के विद्वानोंको अपना मीकर न समझकर बराबरीका व्यवहार करते थे। नवाब युमुज्जमीन स्वयं उर्दू और फारसीके शासक थे। इसी प्रकार नवाब युमुज्जमीन के उनके पुत्र नवाब कश्मीरवाली भी शासकों तथा साहित्यिकोंका बड़ा सम्मान करत थे। इसका परिणाम यह हुआ कि रामपुरमें दिल्ली और सखनऊके शासकोंका एक अथ समुदाय एकत्रित हो गया और इस प्रकार रामपुर दिल्ली और सखनऊका सा स्वरूप बन गया।

यों जैसा कि कहा जा चुका है कि रामपुरमें दिल्ली और सखनऊके अथ शासकोंकी अच्छी संख्या एकत्रित हो गयी थी पर इनमेंसे अधिक श्यानि प्रायः शासक इस प्रकार हैं —

मौर मुजफ्फर अली अमीर मोख इमदाद अली बहुर मुन्गी अमीर अहमद अमीर मिर्जावाँ शाय बख्शक उम्मीम कश्मीर हय 'शादिक शाही आदि। इनमें मुन्गी अमीर अहमद अमीर मीनाई अमीर मिर्जावाँ शायका सर्वाधिक महत्व है।

अमीर सन् १८२८ ई में ममीरगंज हैदर के राज्य शासकमें सखनऊ पैदा हुए। वे सखनऊके प्रसिद्ध मुस्लिम सन्त मखदूम शाह मीना जिनकी समा सखनऊमें है—के बंसज हैं। इसी कारण मीनाई कहलाने है। वास्तविकामें इनको शासकीय मीरक पैदा हो गया था। इनका समय भी बड़ा ही था सखनऊ काशाबरम शासकीय सत्ता हुआ था। सखनऊके इस प्रकारके शाशासनने अमीर मीनाईको भी प्रभावित किया और वह भी बोड़े ही समयके अन्त्यमें एक अच्छे शासक रूपमें प्रसिद्ध हो गये। सन् १८२२ ई में इनकी श्यानि तत्कालीन शासक नवाब आदिल अमीरके दरबारमें पहुँची। राज्यकी ओरसे इनको बुलाया गया तथा इन

रचनामें सुनी मयी और ये दरबारसे सम्बन्ध हो गये। परन्तु बोहे ही दिनों बाद अर्थात् १८२७ ई. में जब नवाब बाजिद अली खांको विरसवार करके कककते भेज दिया गया और जखनऊ में खेस बिमड़ गया तो उन अनेक घायरानी भी स्वस्थि विपन्न मयी जिनका दरबारसे सम्बन्ध था। पर कुछ जिनके बाद अमीर मीर्जाकी रामपुरके ठाकानीन छासक नवाब बुमुक अलीखाने रामपुर बुला लिया वहाँ अमीर २३ वर्ष तक जावर तथा सम्मान पूर्वक रहे। अन्तमें १९. ० ई. में ये हैदराबाद गये वहाँ कुछ दिनोंके बाद बीमार हुए और त्रिहत्तर वर्षकी आयुमें इनका देहान्त हो गया।

अमीर की रचनामेंकी पर्याप्त तस्का है यह और यह दोनों ही उन्होंने लिखा है। वे केवल एक अच्छे छावर ही नहीं प्रत्युत् भाया और काम्यके मर्मज्ञ भी थे।

उन्के दूसरे छावर जिनका रामपुर और फिर हैदराबादके दरबारसे सम्बन्ध रहा है तथा जो विशेष रूपसे उल्लेखनीय है वे हैं बाप देहली। बाप का पूरा नाम मिर्जाखी बा बाब उनका उपनाम है। सन् १८३१ ई. में दिल्लीमें पैदा हुए। बाप के पिताका नाम नवाब यम्मुद्दीनखी था। ये नवाब जियाउद्दीन खी लोहाके घामके पाई थे। नवाब यम्मुद्दीनखीका देहान्त जिस समय हुआ उस समय दाग की आयु केवल साठ वर्ष की थी। पिताके देहान्तके बाद बाप की बाल्याने मिर्जा मुहम्मद मुस्लाह उनके मिर्जा कवरक बहादुर खांके मुखसे विवाह कर लिया। जिस प्रकार मायाके साथ बाप लाग किले पहुँचे। लाग किला वहाँ जिन राज घायरीकी खर्चा रहती थी बाप का पालन पोषण तथा शिक्षा-बीता हुई।

सन् १८३६ ई. में बापके पिता मिर्जा कवरक देहान्त हो गया। इसके एक ही वर्ष बाद सन् १८३७ ई. में वर्ष माया जिनके द्वाराय लागी दिल्लीबागकी दिल्ली छोड़ना पड़ा बाप भी अपने वृद्धत्व सहित दिल्लीके बिकरवार रामपुर पहुँचे। इस समय नवाब बुमुकअलीखी वहाँ राज्य करते थे जो बाप की बहुसंख्य आर्जन थे। बाप बुकराज नवाब बम्बेअलीखी के मुसाहिब और बम्बेअलीके शारीया नियुक्त किये गए थे। बाप २४ वर्ष तक रामपुरमें रहे। रामपुरका जीवन इनकी मुख शान्तिवा जीवन का कि बाप रामपुरकी मायामपुर करते थे। सन् १८५६ ई. में नवाब बम्बेअलीखीकी अनायासिक मृत्युने बाप की तारी मायाभार पानी केर दिया और उन्हें रामपुर छोड़ना पड़ा। बाप रामपुर छोड़कर दिल्ली पहुँचे। दिल्लीमें कुछ दिन रहनेके बाद सन् १८८८ ई. में हैदराबाद पहुँचे। पर इन मायाने उनकी इच्छानुसार कोई काम न बन तथा असु फिर दिल्ली बसे गये। तीस वर्षके बाद फिर हैदराबाद गये। इस बार उनकी अनायासिक मृत्यु हुई। पहले पहले उबरी माड़े बाद भी इनके आर्थिक वेगन दिया गया पर कुछ ही दिनोंमें एक हजार

नामिक और फिर पत्रह सी नामिक हो गये। बाप समाप्त बनाएँ बर्ष हैरतबारमें रहे। सन् १९ २ ई में हैरतबारमें ही बाग का देहान्त हुआ।

बाप के कई काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं गुलजारे बाग बाफ़्तगारे बाप महताबे बाप और यादगारे बाप ये चार बापकी पत्रलोके संग्रह हैं। फरयादे बाप नामसे एक मसमबी भी है। इन रचनाओंके असावा गवाब रामपुर और निजामकी प्रगंठामें कुछ कमीसे हैं और एक सहरें बाघोब दिल्लीकी बरबासीसे सम्बन्धित रचना हैं।

जिन प्रकार मीर ब सीश और ब'नालिब इत्या ब मुसहफी जालिब ब नामिब और अनीम ब खीर आदि मसमामयिक कबियोंमें परस्पर प्रतिद्वन्द्विता रही है उमी प्रकार अमीर और बाप भी मसमामयिक प्रतिद्वन्द्वी कविके रूपमें प्रसिद्ध हुए हैं। निस्मन्नेह अमीर और बाप की प्रतिद्वन्द्विता का सम्बन्ध ब्यक्तिगत सीमा तक कभी नहीं पहुँचा और न कोई ऐसी घटना बटी है जिनमें यह कहा जा सक कि उक्त छापरोंमें एक दूसरेसे प्रति किसी प्रकारका मनी मालिग्य रहा है। हाँ अमीर और बाप के छिप्य जिनकी पर्याप्त संख्या की खबर ही अने गुफ़ी रचनाओंकी प्रगंठामें बिपली की भाँड़ी बट्ट आलोचना कर दिना करते थे। परन्तु अमीर ने और न बाग हीने इन प्रकारकी आलोचनाओं को कभी पगन्ध किया है।

बाग की गजमें प्रमाद मुल मुकन है उर्दू भाषाका बलना हुआ प्रमाहपुरं क्य बाग की पत्रलोंकी सबसे बड़ी बिगपता है।

## हैरतबार

उर्दू भाषा और साहित्यके विकासकी दृष्टिमें रामपुरके अनिखिल जिन स्वातको बिषेय महत्व प्राप्त है वह निस्मन्नेह हैरतबार है।

जिन प्रकार उर्दू भाषा और साहित्यके विकासका प्रारम्भिक काल हैरतबार है उमी प्रकार उर्दू भाषा और साहित्यके आधुनिक कालका सम्बन्ध भी हैरतबारमें है।

निजामुसमुक आमदगाह प्रथम ( १९७१ ई—१७८० ई ) जिनका नाम मीर कमबहिन था। फरसीके छापर थे। फरसीमें उनके दो काव्य-संग्रह हैं। मसमब है उर्दूमें भी उन्होंने रचनाकी हो पर वह प्राप्त नहीं है।

आमदगाही राजबंठमें मीर महबूब अनी था आमदगाह पट्ट मीर उनके पुत्र मीर उम्मान अनीगाँवा काल उर्दू भाषा और साहित्यकी उन्नति तथा विकासकी दृष्टिमें उल्लेखनीय है। यद्यपि दिल्ली और लखनऊमें हैरतबारके बहुत दूर होनेके कारण उम्माद और यह कथन हुए कि —

इन दिनों मुझे बकनमें है बड़ी बड़े सलून।

कीन बाप 'बीक पर दिल्लीकी पत्तियाँ छोड़कर।।

हैदराबाद न पञ्च पर फिर भी हैदराबाद (रखन) की कड़े सधुने बहुषोंको अपना अपना स्वान छोड़नेके लिये विवश कर लिया। जैसा कि लिखा जा चुका है उन्के दो प्रतिष्ठ घायर अमीर और 'बाग' को इस कड़े सधुने लीज ही लिया जा। इनके अतिरिक्त अन्य भी कई प्रतिष्ठ घायर और साहित्यिक समय समयपर हैदराबाद की ओर विचते रहें और वहाँ उनको स्वान मिलता रहा। प्रसिद्ध विद्वान सम्य अली बिलखमी मौलाना शिबली गोमानी मौलाना हामी' पण्डित रतननाथ 'सरघार मौलवी अम्मुल हसीम शरर आदि बहुतेसे साहित्यिक हैदराबाद दरबारसे सम्बन्धित रहे। तथा इसी प्रकार बहुषोंको हैदराबादसे आर्थिक सहायता मिलती रही है।

यद्यपि रामपुर और हैदराबादकी रियासतोंने दिल्ली और कन्नडके घायरोंको आधय दिया और इस प्रकार घायर परम्परागत रूपमें शायरी करते रहे परन्तु इनके साधनोंकी एक सीमा थी। अतः उक्त रियासतोंमें न ही मारे घायर और साहित्यिक आधय ही पा सकते थे और न यही सम्भव था कि जिनको आधय प्राप्त था उनकी स्वायी रूपसे बहु प्राप्त ही रहता। ऐसी रूतामें बार-बार घायरोंको आधय प्राप्त करनेके लिए इधर उधर बीड़ना पड़ता था। परिशाम-स्वरूप घायरोंको कल्पनाओंके अतिरिक्त यथार्थकी पथरीली भूमिका भी अनुभव प्राप्त हुआ। दूसरी ओर अंग्रेजी शासनकी स्थापनाके साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षाका भी प्रचार हुआ। जिन प्रकार अंग्रेजी शासन केवल एक जातिका दूसरी जातिपर शासन मात्र ही न था उसी प्रकार अंग्रेजी भाषाकी शिक्षा किसी विधिसे भाषाकी शिक्षा मात्र ही न थी। प्रत्युत अंग्रेजी शासनके माध्यमसे वहाँ हमारा सम्पर्क आधुनिकताके साथ हो गया वहाँ अंग्रेजी भाषाने हमें आधुनिक विचार तथा दृष्टिसे परिचिन करवा।

यह शैल यद्यपि अंग्रेजोंके पूर्व विदेशियोंके सम्पर्कमें जा चुका था पर बहु विदेशी एशियाई देशोंके ही रहनेवाले थे इसलिये एक सीमा तक ही उस सम्पर्कने वेदबामियोंके संस्कारोंको सजसोरा था। पर अंग्रेजोंका सम्पर्क ऐसा न था वे एक योरोपीय जातिके साथ थे। उस योरोपीय जातिके जहाँ आधुनिकताका सम्पूर्ण रूपमें उदय हो रहा था। अतः अंग्रेजोंके सम्पर्कमें तथा अंग्रेजी भाषाकी गिराने हमारे जीवनके प्रत्येक क्षेत्रको न केवल सजसोराही प्रत्युत प्रभावित भी किया।

अंग्रेजी भाषाके साथ-साथ जय अंग्रेजी साहित्यका परिचय मिला तो मागो हमारी आँखें खुल गयीं। अभी तक हम साहित्यको केवल पठनसे रचना ही समझते थे। अन्य भाषाओंकी तरह ही उर्दूमें भी एक प्रकारकी पद्यात्मक रचना जिते गजन बह्य जाता है जनी भा रही थी जो हम जीवनके अनुभव न थी जो अंग्रेजी उग्यके कारण उत्पन्न हो रहा था। अंग्रेजी साहित्य न केवल कोई विविध प्रकारके पद्य ही साहित्य था प्रत्युत उनमें पद्यके अतिरिक्त कहानी उपन्यास नाटक निबन्ध आदि अनेक प्रकारकी रचनाएँ थीं। स्वभावतः उर्दूवा घायर और साहित्यिक भी बुर्रुमें इन प्रकारका साहित्य रचनेकी बात सोचने लगा।

बंदिजी राज्यकी स्थापना और बंदिजी भाषाकी शिक्षाके माह उत्पन्न परिस्थितिके अनुसार जिन लोगोंने उर्दू कविताका विद्या-परिवर्तन किया है उनमें सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद और मौलाना अक़ताफ हुसैन हाजी हैं।

निस्सन्देह उर्दू धारणीके विद्या परिवर्तन करनेवाके ये दोनों महानुभाव ऐसे न थे कि जिनका बंदिजी भाषा और साहित्यसे कोई विशेष परिचय था वह बंदिजी साहित्यकी रूप रेखासे उन अनुवादके द्वारा ही परिचित हुए थे जो बंदिजी राज्यकी ओर से कराये गये थे। पर इन अनुवादके आधुनिकताके साथ साथ उनको उर्दू साहित्यकी श्रुतियोंका भी पता चला गया। परिणाम स्वरूप उन्होंने उर्दू काव्यकी एक ऐसा रूप देना चाहा जो अपनी सारी परम्परासे भिन्न न होते हुए भी आधुनिक जीवनकी माँगको पूरी कर सके।

मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद सन् १८९२ या १८९३ ई में दिल्लीमें पैदा हुए। पिताका नाम मौलवी मुहम्मद बाकर था। मौलवी मुहम्मद बाकरका उस्ताद जीक से मित्रताका सम्बन्ध था अतः उन्होंने आजाद को जीक की सेवामें रै दिया। आजाद ने जीक की ही देखरेखमें प्रारम्भिक शिक्षा पायी और काव्य धारणसे भी परिचय प्राप्त किया।

सन् १८९७ ई में पिता मारे गये जीक की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। पर दिल्लीमें कोई सहायक तथा सम्बन्धी न रह गया तो आजीविकाकी खोजमें आजाद काहीर चले गये वहाँ वे शिक्षा विभागमें नौकर हो गये। थोड़े ही दिनोंमें अतालीफ पंजाब नामक पत्रके सहायक सम्पादक ही गये। शिक्षा विभागने इनसे कससुल हिन्द तथा अन्य कई पुस्तके लिखवाई।

अपस्त सन् १८९७ ई में आजाद ने एक व्याख्यानमें कविताके सम्बन्धमें अपने नये विचार प्रकट किये जिसमें उन्होंने उर्दू और फारसी काव्यकी श्रुतियोंकी ओर लोगोंका ध्यान आकृष्ट किया। इन्हीं विचारोंके प्रचारके लिए कुछ दिनों बाद काहीरमें अजुमने पंजाब नामक एक संस्थाकी स्थापना हुई जिसके सत्वावधानमें ८ मई सन् १९०४ ई को वह पहला मुद्रायत (कवि सम्मेलन) हुआ जिसमें नये विचारोंके अनुसार जीवन और प्रकृति वर्णनसे सम्बन्धित कविताएँ पढ़ी गईं। कवि सम्मेलनके पूर्व आजाद ने भाषण दिया जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूपमें कहा कि कवितामें वास्तविकता तथा म्यानीयता अवश्य होनी चाहिये।

आजाद की कुछ कविताओंका संग्रह उनके पुत्र मुहम्मद इब्राहीमने सन् १८९९ ई में प्रकाशित करवाया है।

आजाद के अतिरिक्त मौलाना अक़ताफ हुसैन हाजी का स्थान है। हाजी सन् १८९७ ई में पानीपतमें पैदा हुए। हाजी के पिताका नाम स्वाजा ईब्राद बरक था। हाजी सभी नौ बचके हुए थे कि इनके पिताका देहान्त हो गया।

‘हाली’ की विद्या बीबाका प्रबन्ध इनके बड़े भाई और बहनने किया। सन् १८५४ ई. में हाली चुपकेसे दिल्ली चले गये। दिल्लीमें गवाबिस जलीसे कुछ दिनों तक अरबी भाषाका अध्ययन किया। सन् १८५५ ई. में पानीपत लौट आये। सन् १८५६ ई. में हितार कलकत्तीमें लौकरी कर ली पर १८५७ में फिर वापस पानीपत चले गये। तीन बार बर्ष पानीपतमें रहनेके बाद गवाब मुसलमानों से छेपटा से मुक्तकाय हो गई। छेपटा के पास बहामीपठान बिना बुकन्दसूत्रके हाली जादू बर्ष तक रहे। यहाँसे वे काहीर पहुँचे जहाँ गवर्नमेण्ट बुक बिरोमें एक लौकरी मिल गयी। यहाँ हाली को अंग्रेजीसे उर्दूमें अनूदित पुस्तकोंकी भाषा सुझ करवा पड़ता था। बिबिस उन्हें आधुनिक विचारोंकी जानकारी प्राप्त हो गई। चार बर्षके बाद हाली फिर दिल्ली पहुँचे जहाँ उनको ऐम्बो अरैबिक स्कूलमें शिक्षकका स्थान मिल गया। यही तर सय्यद महमद खाँ से उनका परिचय हुआ। सर सय्यद महमदखाँ के अनुरोधसे हाली ने मशी-अबद-इस्लाम नामक काब्य लिखा जो मुगलसे हाली के नामसे प्रसिद्ध है।

हाली की मन्त्र रचनाओंमें मुताबत बेबा बरखास्त चुपकी बाद निघाटे उम्मीर तथा बीबाने हाली आत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

हाली मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद हाथ स्थापित अनुमने पंजाब के मुघलरोमें भी सम्मिलित हुआ करते थे। हाली ने अपनी चार कविताएँ बरखास्त निघाटे उम्मीर मनाबिरवे खम-ओ-इस्ताफ और हुम्बेवात इनो अनुमनके मुघलरोमें पढ़ी थी।

सन् १९०४ ई. में हाली को सन्तुक्त-उलमाकी उपाधि मिली। सन् १९१४ ई. में हाली का पानीपतमें ही स्वर्णवास हो गया।

इन बातके कविबोधें अरब इलाहाबादीका स्थान सबसे अत्यम है। अरबकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहाँने उर्दूमें बिल प्रचारकी रचना की है उन प्रकारका व्यंज न तो उनके पूर्व किसीने किया है और न बादमें ही कोई लक्ष्मणापूर्वक उनका अनुकरण कर सता। अरबकी रचनाओंमें बहु मात्रा अलगाप जलजता है जो अंग्रेजी उम्बके विरुद्ध तन्वीनीन सुरिभम मानममें था। अरब बचन सरकारी लौकरी के पर उनका लनेदन लौक हुरप अंग्रेजी ही नहीं अंग्रेजी उम्बके भावभन आवेवाली सारी बाणोंका विरोधी था। अरब यदि सरकारी लौकरीमें न होंगे और गुरुवर सारी बाणें बहु पाण तो नि मन्हेह के इनने बड़े लयन व्यंग्य केन्द्रक न होने। अरबके समयावधिक व्यंगियोंमें सर सय्यद और हाली भी थे। सर सय्यद इन विभागधारा प्रतिनिधित्व कर रहे थे कि मुगलमनोंकी अब न अंग्रेजी उम्बके प्रति विशेष और अलगाव ब्रह्म करनेन लाभ ही मानता है और न अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजी विद्याकाके बलिपारने। बलि के इन बधमें थे कि मुगलमनोंको अंग्रेजी उम्बके साथ सहयोग करना चाहिये और अंग्रेजी विद्या प्राप्त करके सरकारी

नीतिरिषोंमें जाना चाहिये। इसी उद्देश्यको सम्मुख रखकर उन्होंने बर्मीगढ़ कासेबकी स्थापना की थी पर अकबर किसी रूपमें भी यह माननेको तैयार न थे। यद्यपि स्वयं सरकारी लीकरीमें थे। इस प्रकार अकबर मुसलमानोंकी उस मनोवृत्तिवा अपने काममें प्रतिनिधित्व करते थे जो मुस्लिम शासनकी समाप्तिके कारण मुसलमानोंमें उत्पन्न हो गई थी। इसी मनोवृत्तिकी प्रतिनिधित्व उलमा राज नीतिके क्षेत्रमें कर रहे थे।

अकबर इलाहाबादकी पुरा नाम अकबर हुसैन था। अकबर सन् १८४६ ई में इलाहाबादकी तहसील बारा में पैदा हुए। सन् १८६६ में मुस्लिमानीकी परीसामें सफल हुए जिससे नायब तहसीलदार बना दिये गये। सन् १८७० ई में हार्डिकोर्टमें अपह मिला गयी और उन्होंने बकासतकी परीसा पास कर ली। कुछ समय तक बकासत करनेके बाद बाज हो गये। सन् १९०३ ई तक अकबरका न्यायालय विभागसे क्रिस्ती-न-क्रिस्ती रूपमें सम्बन्ध बना रहा। इसी बीच उनको ज्ञान बहादुरकी उपाधि भी मिल गई और इलाहाबाद विश्वविद्यालयके फेलो भी चुन लिए गये। सन् १९२१ ई में अकबरकी मृत्यु हुई।

अकबर की रचनाओंके कई संग्रह निकल चुके हैं उनकी रचनाओंका प्रचार भी पर्याप्त है। अकबरकी रचनाओंको ठीकसे समझनेके लिए इस्लाम धर्म तथा भारतीय मुसलमानोंकी संस्कृतिके साथ ही अकबरके कालकी राजनैतिक तथा सामाजिक दशाका ज्ञान भी आवश्यक है।

इस कालके अन्य कवियोंमें विशेष रूपसे उल्लेखनीय मुहम्मद इस्माईल मेरठी मुन्शी दुर्गा सहाय मुरार पं बुजनारायण चक्रवर्त और डा मुहम्मद इकबाल हैं। मुहम्मद इस्माइल मेरठी १२ नवम्बर १८४४ ई में मेरठमें पैदा हुए। सोलह वर्षकी आयुमें शिक्षा विभागमें भीतर हो गये। सन् १८९९ ई में पेशान ली और सन् १९१७ ई में उनका ब्रेहान्त हो गया। इस्माइल मेरठीकी पाठ्य पुस्तकोंका बड़ी ख्याति है जो मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद की पाठ्य पुस्तकोंका बजावमें रहा है। इनकी पाठ्य पुस्तकें प्रवाह पूर्व भाषा और विषयकी दृष्टिमें अत्यधिक महत्वपूर्ण रही हैं।

मुरार अहाबादमें सन् १८७३ ई में पैदा हुए। १७ वर्षकी अवस्थामें सन् १९१० ई में मुरार का ब्रेहान्त हो गया। जामे मुरार और कुमलानये मुरार नामक उनकी रचनाओंके संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

चक्रवर्त सन् १८८२ ई में मयनठमें पैदा हुए। सन् १९०८ ई में चक्रवर्त ने बकासत शुरू की और सन् १९३६ ई में उनका ब्रेहान्त हो गया। बुद्धे कान नामक उनका काव्य संग्रह बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एतदा तथा देशभक्तिमें परिपूर्ण रचनाएँ की हैं जिनका एक समयमें बड़ा महत्व था।



का मुहम्मद इकबाल उर्दूके उन महान कवियोंमें हैं जिनकी संख्या अधिक नहीं है। इकबाल केवल कवि ही न थे प्रत्युत् वे एक बहुत बड़े विचारक थे। इकबालकी सामान्य रचनाओंको देखकर उनके सम्बन्धमें किसी प्रकारका निर्णय करना इकबालके प्रति सम्भाव्य करना ही है। परन्तु उनके साथ कहना पड़ता है कि इकबालके प्रति यह सम्भाव्य बहुत दूरीसे होता था। ऐसा है और इकबालके प्रसन्न और विरोधी दोनों ही अपने अपने दृष्ट इस सम्बन्धमें भ्रम लेते रहे हैं। इकबालके द्वारा कहा हुआ निम्न शेर उनके प्रति लौकिक दृष्टिकोण और उनकी साम्प्रदायिक स्थितिको धारण बड़े मानिक दृष्टसे व्यक्त करता है।—

जाहिसे तप नजरने मुझे काफिर जाना।

और काफिर यह समझता है मुसलमाना हूँ मैं ॥

तात्पर्य यह कि इकबालके काव्यको समझनेके लिए पहले अध्ययनकी आवश्यकता है। ऐसा पहला अध्ययन जो पूर्ण और पवित्री दर्शन द्वारा धर्मसाराय विज्ञान इतिहास तथा राजनीति आदि विषयोंकी आत्मसात् कर ले। चाहेने इकबाल को समझनेके लिए इस्लामी विचारधाराओं और इतिहासके साथ प्येटी नीचे बंधनों और आइडनस्टीमसे भी जमीनीति परिचित होना आवश्यक है।

इकबाल सन् १८७४ ई में सियालकोट (पंजाब) में पैदा हुए। प्रारम्भिक शिक्षा उन्हें सियालकोटमें प्राप्त हुई। बादमें लाहौर चले गए। दर्शन शास्त्रमें एम ए कर लेनेके बाद उच्च शिक्षाके लिए इंग्लैण्ड गए जहाँ उन्होंने कैम्ब्रिज की पास कर ली तथा अपनीसे दर्शन शास्त्रमें पी. एच. डी की डिग्री प्राप्त की। बहासि वापस आनेके बाद उन्होंने लाहौरमें कैम्ब्रिज की शुरू कर दी। उन्होंने कुछ दिनों तक पंजाबकी राजनीतिमें भी भाग लिया। सन् १९३१ में भारतके मुसलमानोंके प्रतिनिधियोंके रूपमें वे बोलमेज परिषदमें भी सम्मिलित हुए। सन् १९३६ ई में इकबालका स्वास्थ्य बिगड़ने लगे तथा और सन् १९३८ ई में अर्ध-बालमें उनका स्वर्णवात हो गया।

इकबालने उर्दू और फारसी दोनोंमें रचनाएँ की हैं। उर्दू रचनाओंमें जाने-दरस बादि-जिबोत जैसे शरीर और अमृगाने द्विवाक है। फारसीमें उनकी अनेक रचनाएँ हैं। इकबालके मातृभाषाको पूर्ण रूपसे समझनेके लिये फारसी भाषाका ज्ञान भी आवश्यक है।

इन नामके अर्थ उल्लेखनीय कवियोंके गुण के नाम इन प्रकार हैं। साद अजीबाबारी रियाज शीराबादी तादी लयनगी आरतु लयनगी

जाहिसे तप नजर-नकीने दृष्टिकोण मानिक व्यक्त। काफिर-विषयी धर्म मान्य।

छानी बसामूनी सीगाब अकबरवादी बसबर गोंडवी बिगर मुयवावादी  
हमरन मोहानी गूह मारवी खादि।

### आधुनिक कास पद्य—२

उर्दूके सायरोंमें इस नई डगर पर बकनेवाले सायरोंकी सूची पर्याप्त कम्बी  
है। जिसमेंके प्रत्येकका नामोल्ख करना भी यहाँ सम्भव नहीं है। जो सायर  
अधिक प्रसिद्ध हो चुके हैं उनके नाम इस प्रकार हैं —

जोस मसीहावादी हुकूम चाकंधरी सागर निवामी अखतर  
धीरानी फिराक मोरखपुरी रबिय सिद्दीकी एहसान बानिय क़ैम अहमद  
क़ैम मजाब क़दरवी बानिसार अक़तर, अलीसरदार चाक़री साहिर  
मुधियानवी क़ैदी खाबमी मबरकू मुक़तनापुरी अर्ज मक़सियानी जमनाब  
भाबाब ।

जोदके काव्य संग्रह है — शोक-ओ-सदगम नरस-ओ-निगार छिन्न-  
ओ-निघात हर्फ-ओ-हिकामत रामिन-ओ-रैय मुशुक-ओ-ससासिछ  
समूम-ओ-मबा शरोह-ओ-खरोउ ।

जोस हफ़े खाबिर नामक एक बड़ा काव्य लिख रहे हैं जिसमें मनुष्य  
के वैज्ञानिक विकासका विरोध है।

हुकूम चाकंधरी चाक़बर पंजाब के रहनेवाले सायर हैं। इनके  
अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। साहनामए इस्काम उनकी ऐसी रचना  
है जिससे वे बहुत ही कोकभिय हुए हैं।

सागर निवामी मेरठके रहनेवाले हैं। ये सीमाब अकबरवादीके  
शिष्य हैं इनकी भाषा भी सरल बोलचालकी भाषा है राष्ट्रीय विधियोंपर तथा राष्ट्रीय  
नेताओंपर इनकी रचनाएँ हैं। इनके बाद-ए-मउरिफ मौज-ओ-साहिल तथा  
रैय महरक तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

अक़तर धीरानी टीकके रहनेवाले थे। मुबाबस्वामें ही उनका देहान्त  
हो गया। उर्दूके स्वच्छन्दतावादी कवियोंमें अक़तर धीरानीका उच्च स्थान है।  
इनके ६-७ कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

रबिय सिद्दीकी ग्वालानपुरके रहने वाले हैं यादगुरुके सायरोंमें रबिय  
का ठेका स्थान है। रबिय की भाषा फ़ारसी मिश्रित है और इकबालसे  
प्रभावित है।

फिराक मोरखपुरीका पूरा नाम रजुपति सहाय है। फिराक उनका  
उपनाम है। उर्दूके वर्तमान कवियोंमें फिराक का स्थान बहुत ठेका है। फिराक  
की गजब और बहादुरी न केवल प्रसिद्ध ही हैं प्रत्युत काव्यकी दृष्टिमें भी बहुत  
उच्च हैं। फिराक उर्दूके उन कवियोंमें हैं जो अंग्रेजी साहित्यसे भी भारी-

बालि परिचित हैं और आधुनिक ज्ञान-विज्ञानसे भी अच्छी कामकाशी हैं। वही कायनाथ मसजद रम्ब-ओ-दिनाबाद धोल-ए-साब दखनमिस्तान 'किराऊ की इकलौकी संज्ञा है तथा स्व फ़ारसीका उग्रह है।

एहसास शायिख भी एक अच्छे कवि हैं। किस्तान और मजदुरोंके जीवन पर इनकी रचनाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इनके भी कई काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

श्रेष्ठ अहमद 'श्रेष्ठ' प्रगतिशील कवियोंमें सबसे अधिक पढ़े-लिखे व्यक्तियोंमें हैं अंग्रेजी साहित्यके साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञानसे भी वे अच्छी तरह परिचित हैं। इधर पाकिस्तान बननेके बाद बहुत दिनों तक वे अपने विचारोंके कारण पाकिस्तानकी जेलोंमें रह चुके हैं। प्रगतिशील विचारके कविबोधपर सबसे अधिक श्रेष्ठ का ही प्रभाव पड़ा है। श्रेष्ठ के दो काव्य संग्रह तसद-ए-करिबाही और दस्त-ए-महा प्रकाशित हो चुके हैं।

मजाब का पूरा नाम अल-उल्लह है। मजाब उपनाम है। मजाब का स्वाम भी बहुत ऊँचा है। अलीगढ़में शिक्षा प्राप्त करनेके बाद कुछ दिनों तक अल इन्डिया रेडियोमें नौकर रहे पर अपने प्रगतिशील विचारोंके कारण मीथ हो जम्होने नौकरी छोड़ दी। मजाब की कविताओंका एक संग्रह माहज नामसे प्रकाशित हो चुका है। प्रगतिशील कवियोंमें वे बड़ी ही कोमल भावनाओंके कवि थे। उनकी रचनाओंमें तरवालील भारतीय मुक्त समाजकी आशाओं उमंगों कल्पनाओंका प्रतिबिम्ब मिलता है। सन् १९५२ ई में उनकी अकाल मृत्यु हो गई।

श्री निहार अफ़्ग़न भी प्रगतिशील कवियोंमें हैं। इतना भी अच्छा स्वाम है। अलीगढ़में शिक्षा समाप्त करके ग्वालियर और भोपालके कालेजमें अध्यापन कार्य किया है। उनकी दो रचनाएँ लतासित और अन्न नामा प्रसिद्ध हैं।

अली मरदार जाकरीका स्वाम भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है। मजाब के भाबिसीमें अली मरदार जाकरीका स्वाम बहुत बड़ा है। उनकी रचनाएँ नाम्बवाही विचार-आद्यमें प्रकाशित हैं। उन्होंने कविताकी उन आरसीकी प्राप्ति का एक प्रयोग भी किया है तथा किया है जिसपर वे विश्वास रखते हैं। अली मरदार जाकरी के कई काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें मृत्यु से है —

अम्बदा निगारा युनकी लकीर कपूरकी बीबार एतिया जाम उगा तथा नई दुनियाकी मजाब।

माहिन मुहिबानवी भी एक उच्च कोटि के कवि हैं। तल्लिबी नामका उनका एक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुका है। ताजमहल नामक उनकी एक कविता बहुत लोकप्रिय है।

ईश्री आजमी मोहम्मिद तथा प्रगतिशील कवि हैं। गंधार आज़िरी एक नामक दो काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

मजबूत सुल्तानपुरीकी विनेमा बगवसे सम्बन्ध होनेके कारण अच्छी ब्यापि है। जैसे मी न एक अच्छे कवि है। पञ्चम नामक उनका एक काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है।

अर्ज का पूरा नाम बाबुमुकुन्द है। अर्ज उनका उपनाम है। अर्जके हस्त रत्न और बंम-ओ-आहंग काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आजकल वे केन्द्रीय सरकारके उर्दू मासिक आजकल के सम्पादक ह।

बनघाब आबाद पञ्जाबके प्रसिद्ध उर्दू कवि हैं। उनके पिता तिलोकचन्द महम्म भी उर्दूके प्रसिद्ध कवि थे। आबाद की बेकरी और तिलारों से बरों तक वो काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

### उर्दू गद्यका प्रारम्भ

उर्दू-ए-फ़रीम के लेखक मौलाना अब्दुस हकके अनुसार उर्दू गद्यकी प्रारम्भिक रचनाएँ सेब ऐनुद्दीन गम्मुक हम्म (मृत्यु सन् १३९२ ई) की पुस्तिकाएँ हैं। पर ये पुस्तिकाएँ अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी इसलिये निश्चित रूपमें इनके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं कहा जा सकता। पर बहाबा बन्वानेबाज मेसूरचण्ड (सन् १३९८ ई) की रचना मेबरान-उस-आयेकीन जो कि प्राप्त हो चुकी है उर्दू गद्यकी पहली रचना ठहरती है। मेबरान-उस-आयेकीन के बाद अन्यमम सी बर्षोंक किसी गद्य रचनाका पता नहीं चलता। सी बर्षोंके बाद जो दूसरी गद्य रचना प्राप्त होती है वह बीजापुरके शाह मीरानो सम्स-उक उरदाक की रचना शरह मरसूम-उस-मुसूब है। यह रचना सन १४९६ ई के लगभग की है।

प्रारम्भिक कालकी तीसरी गद्य रचना शाह बुर्हानुद्दीन जातनकी बरमन उस-हकायक है इसका रचना काल भी सन् १५८२ ई के पूर्व है।

चौथी रचना सन् १६२२ की अहफाम-उस्ममात है इसके रचयिताका नाम मौलाना अब्दुल्लाह है।

दिल्लि भारतकी बहिष्करी रचनाओंमें सब एग सबसे प्रसिद्ध तथा साहित्यिक रचना है। इसका रचना काल सन् १६३१ ई है और रचयिताका नाम मुस्ता बजही है।

इस कालकी कुछ अन्य रचनाओंका भी पता चलता है पर बिनाय अन्य उम्बन्धीय रचनाएँ नहीं हैं। सबरम के बहिष्करी गद्य रचनाओंका बिषय धार्मिक है तथा धार्मिक उद्देश्योंको सम्मुख रख कर रची गई है। सबरम ही एकमात्र साहित्यिक रचना है।

उत्तर भारतकी सबसे पहली गद्य रचना शाह अब्दुल्लाह अब्दानी की करबल कथा या इह मजलिस है। इसका रचना काल सन् १७३२ ई है।

करबल कवा के बहुत समय बाद मिर्जा रफीज चौदा मे अपने बीवान मसिदाकी भूमिका यद्यपि लिखी है जो उनके कुस्लियात ( बन्ध्यावकी ) में थीरु है।

सौदा की इस भूमिकाके लगभग बाइस वर्ष बाद अर्थात् सन् १७८८ ई. में साह रफीउद्दीनने कुरान घरीफका उर्दुमें अनुवाद किया। और दो वर्ष बाद अर्थात् सन् १७९० ई. में साह अमूलु नादिरने भी कुरान घरीफका उर्दुमें अनुवाद किया।

इस कालकी दूसरी पद्य रचनाओंमें साह इरमाईल सहोदकी तकबिरत-ऊफ-ईमान और सेउते मुस्तजीम विशेष प्रसिद्ध हैं।

इन धार्मिक रचनाओंके अतिरिक्त प्रारम्भिक रचनाओंमें मीर अता हुसैन लहमीन की गीतर्ज मुरस्सा है। यह पुस्तक एक फारसी रचना किस्म-ए-बहार शब्दों का उर्दु अनुवाद है।

### कुछ योरोपियन लेखक तथा फोर्ट विनियम कालेज

भारतमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीके प्रभावके बढ़नेके साथ-साथ दो वर्गोंमें बोलिया निवासियाका भारतमें सम्मिश्र आया। कुछ योरोप निवासी तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीके नौकरके रूपमें यहाँ आये और कुछ उनके प्रचारकके रूपमें। किन्तु यहाँ तक बढ़ाके जीवनके परिचय प्राप्त करनेका प्रयत्न वा होनेके लिए यह आवश्यक था कि वह इन देशकी किसी ऐसी भाषाको सीखनेका प्रयत्न करे जिसके माध्यमसे इस देशकी बहु मध्यक जनताके सम्पर्कमें वे आ सकें। इन उद्देश्यों के लिये उर्दु भाषा हिन्दुस्तानी सीखनेका प्रयत्न किया। इस प्रकारके विदेशियोंमें किन्तु उर्दु भाषा हिन्दुस्तानी सीखने और अपने योरोपवासियोंको सिखानेका प्रयत्न किया उनमें विद्विष्ट व्यक्तिमेंके नाम इस प्रकार हैं —

जान जोगुजा केटलर, जर्मन पारसी मुख्तियार बख्शानिन मुख्तियार बख्तियार, इण्डियन, पारसी मार्टिन आदि।

इन योरोपीय लोगोंने विशेष रूपसे व्याकरण और गण्य कौसोमी रचनाकी ओर ही ध्यान दिया क्योंकि उनका उद्देश्य उर्दु सीखना सिखाना मात्र था। हाँ इनमेंसे धर्म प्रचारक पारसियोंमें बाइबिलके अनुबाणीकी ओर ध्यान दिया। अगु

उर्दु भाषा हिन्दुस्तानीका सबसे पहला व्याकरण जोगुजा केटलर द्वारा रचियन गवारा जाता है जिसे उन्होंने सन् १७९३ ई. में रचा। इसी प्रकार जर्मन पारसी धर्मके भी व्याकरण लिखा तथा मिल्ने हिन्दुस्तानी बर्षयासागर एन पुस्तक लिखी। परन्तु सबसे अधिक इन विद्यामें जिन व्यक्तियोंने भाग लिया है और जिन्होंने उर्दु पद्यके विकासके लिए मार्ग निराला है वह हैं डा. जॉन मिलरइण्ट।

जॉन मिलर इण्टने न केवल स्वयं अनेक रचनाएँ कीं अथवा फोर्ट विनियम वाक्यरूप साहित्य-विद्यालय विभागाएँ आरबी देण्डेयमें अनेक पुस्तकें लिखवाईं।

हिस्ती और कब्रानऊसे समय-समयपर अनेक सेवक नाम गिल काइस्टकी उबारवा सुन-सुनकर कब्रकता पहुँचने कये और फोर्ट बिल्डियम कासेबके साहित्य निर्माण विभागसे सम्बन्ध होने कये।

बिन केबकॉनि फोर्ट बिल्डियम कासेबके साहित्य निर्माण विभागम रहकर उर्दू गद्यमे रचनाएँ की है उनके नाम तथा उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं —

मीर अम्मन देहकबी हूदरबख्त हूँचरी मीर छेरबकी अफसोस मिर्जा अमीकुल्ल बहादुर अली हुसीनी मजहर अलीचा बिळा काबिम अली अबाग निहालपन्थ काहीरी बेनीनाउयम जहाँ तथा अस्तुकाक।

इन भारतीय केबकॉनि अतिरिक्त स्वयं मिस्रकाइस्टने भी उर्दूमें अनेक रचनाएँ की हैं। वो इस प्रकार है —

१—अंग्रेजी हिन्दुस्तानी डिक्शनरी (सन् १७९१ ई) २—हिन्दुस्तानी ग्रामर (सन् १७९१ ई) ३—ओरियन्टल डिप्लोमेट (सन् १७९८ ई) ४—कसस-ए-मघरिफी (सन् १८०३ ई) ५—रजनुमा-ए-अबाग-ए-उर्दू (सन् १८०४ ई) ६—ऊबामिद-ए-उर्दू (सन् १८ १ ई) ७—अंग्रेजी बोल बाल (सन् १८२० ई)

आकर गिलकाइस्टने सन् १७८७ ई से उर्दूके सम्बन्धमे सिखना प्रारम्भ किया जिसका क्रम बीस वर्ष तक चला रहा। सन् १८४१ ई में पेरिसमें गिलकाइस्टका देहांत हुआ। मिस्रकाइस्टकी रचनाओंकी संख्या जिसमे छोटी-बड़ी सभी प्रकारकी रचनाएँ सम्मिलित हैं एक दर्जन तक पहुँचती है।

गिलकाइस्ट तथा फोर्ट बिल्डियम कासेबके साहित्य-निर्माण विभागसे सम्बन्धित मघकारोंके सामने एक निर्दिष्ट उद्देश्य था। उसी उद्देश्यके अनुसार वे पुस्तक रचते थे पर इनके अतिरिक्त देसमें अन्य भी कई ऐसे व्यक्ति थे जो स्वभावतः गद्य रचनामें प्रवृत्त थे।

इन मघकारोंमें विशेष रूपसे उल्लेखनीय इत्याअस्ताबी 'इत्या रजब अली बेग मुहर तथा फकीर मुहम्मद बी गोया आदि हैं।

इत्या अस्ता बीकी गद्य रचनाओंमें रानी केतकीकी कहानी और हरिया-बे-कताफ्त अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

रजब अली बेग मुहर कब्रानऊके पहले उर्दू गद्य सेवक हैं। ये सन् १७८७ ई में कब्रानऊमें पैदा हुए और सन् १८१७ ई में कब्रानऊमें ही इनकी मृत्यु हुई। इनकी रचनाओंमें मुहर-ए-मुस्तानी वारर-ए-इबक 'दिलपुत्र-ए-मुहम्मद' गुलबार्-ए-मुकर शबिस्तान-ए-मुकर इत्या-ए-मुकर तथा फिसाना-ए-अजायब हैं। मुहर की सर्व श्रेष्ठ रचना फिसाना-ए-अजायब है।

फकीर मुहम्मद गोया कब्रानऊके रहनेवाले थे वह अपने समयके अच्छे कवि भी थे नासिफ़ को वह अपनी काव्य रचना दिखाते थे। सन् १८३० ई में गोया का देहांत हुआ। अतबार-ए-मुहम्मदी नामक फारसी कहानी पुस्तकका

करवक कपा के बहुत समय बाद मिर्जा रफीक मीना में अपने बीवान मसियाफी भूमिका पद्यमें लिखी है जो उनके कृत्स्नियात् ( प्रख्यातमी ) में मौजूद है।

मौसा की इस भूमिकाके लगभग बाह्य वर्ष बाद अर्थात् सन् १७८८ ई. में साह रफीकहीनने कुरान घरीफा उर्दूमें अनुबाद किया। और दो वर्ष बाद अर्थात् सन् १७९ ई. में साह अब्दुल कादिरने भी कुरान घरीफा उर्दूमें अनुबाद किया।

इन नामकी दूसरी पद्य रचनाओंमें साह इस्माईल ग्हीरकी तऊबियत-ऊर-ईमान और सेयत मुस्तकीम विशेष प्रसिद्ध हैं।

इन धार्मिक रचनाओंके अतिरिक्त प्रारम्भिक रचनाओंमें मीर बना हुनेन तहमीन की मीना मुरम्मा है। यह पुस्तक एक फारसी रचना किम्ब-ए-बहार दरवेश का उर्दू अनुबाद है।

### कुछ योरोपियन लेखक तथा फोर्ट विलियम कॉलेज

भारतमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीके प्रभावके बढ़नेके माप-माप हो करोंमें यारोप निवासियोंका भारतमें सम्बन्ध आया। कुछ योरोप निवासी तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीके नीकरके रूपमें यहाँ आय और कुछ धर्म प्रचारकके रूपमें। किन्तु जहाँ तक यहाँके जीवनस परिचय प्राप्त करनेका प्रयत्न या शैलीके लिए यह आश्चर्यक वा कि यह इस देशकी किसी एसा भाषाकी सीखनेका प्रयत्न करें जिसके माध्यमसे इस देशकी बहु संख्याक जनताके सम्पर्कमें वे आ सकें। इन उद्देश्यसे उन लोगोंने उर्दू भाषा हिन्दुस्तानी सीखनेका प्रयत्न किया। इन प्रकारके विरोधियोंमें किन्हींने उर्दू भाषा हिन्दुस्तानी सीखने और अपने योरोपवासियोंको सिखानेका प्रयास किया उनमें विभिन्न व्यक्तियोंके नाम इस प्रकार हैं —

आन जोमुआ केटरट, जर्मन पादरी मुख्य मिन बेन्जामिन मुख्य कालिज बुर्य डाक्टर, हस्ट, पादरी मार्टिन आदि।

इन योरोपीय लेखकोंने विशेष रूपसे व्याकरण और धर्म दोनोंकी रचनाकी और ही ध्यान दिया क्योंकि उनका उद्देश्य उर्दू सीखना सिखाना मात्र था। हाँ इनमेंसे धर्म प्रचारक पादरियोंने वाइबिलक अनुबादोंकी और ध्यान दिया। अन्तु

उर्दू भाषा हिन्दुस्तानीका सबसे पहला व्याकरण थोमुआ केटरट द्वारा रचित समझा जाता है जिसे उन्होंने सन् १७१५ ई. में रचा। इसी प्रकार जर्मन पादरी गृस्टरने भी व्याकरण लिखा तथा मिन्ने हिन्दुस्तानी बर्षमासापर एक पुस्तक लिखी। पर लक्ष्य अत्रिक इस विषयमें जिस व्यक्तिने कार्य किया है और जिसने उर्दू पद्यके विषयमेंके लिए मार्ग दिखाया है वह है डा जॉन गिलक्राइस्ट।

जॉन गिल क्राइस्टने न कश्म स्वयं बनेक रचनाए की प्रयुक्त फोर्ट विलियम कॉलेजके छात्रिय-निर्माण विद्यालय बननी इतरेशमें बनेक पुस्तकें लिखवाई।

दिल्ली और सखनऊँसे समय-समयपर अनेक लकड़ जात गिरफ्तार की जाया जाता था मुनकर कलकत्ता पहुँचने के और फोर्ट बिल्डिंग कारखाने के साहित्य निर्माण विभागसे सम्बन्ध होने लगे।

जिन लेखकोंने फोर्ट बिल्डिंग कारखाने के साहित्य निर्माण विभागमें रहकर उर्दू पद्यमें रचनाएँ की हैं उनके नाम तथा उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं —

मीर अहमम बेहलखी हैदरअब्दुल हैदरी और शेखजी अहमम मिर्जा अलीमुल्हक बहादुर अली हुसीनी मजहर अलीखान बिला काजिम अली अहमम निहालअब्दुल आहीरी बेनीनारायण अहाँ तथा सन्सुखान।

इन भारतीय लेखकोंके अतिरिक्त स्वयं गिरफ्तार करने में भी उर्दूमें अनेक रचनाएँ की हैं। जो इस प्रकार हैं —

१—अबेजी हिन्दुस्तानी बिनअली (सन् १७९३ ई) २—हिन्दुस्तानी शायर (सन् १७९६ ई) ३—बोरियन्दक सिगुइस्ट (सन् १७९८ ई) ४—कमल-ए-मदरिफी (सन् १८ १ ई) ५—रजुमा-ए-अबान-ए-उर्दू (सन् १८ ४ ई) ६—रुबायिद-ए-उर्दू (सन् १८ ९ ई) ७—अबेजी बाल बाल (सन् १८२ ई)

हाकर गिरफ्तार करने सन् १७८७ ई से उर्दूके सम्बन्धमें लिखना प्रारम्भ किया जिसका काम बीस वर्ष तक चलता रहा। सन् १८४१ ई में पेरिसमें गिरफ्तार करने के इच्छा हुआ। गिरफ्तार करनेकी रचनाओंकी संख्या जिसमें छोटी-बड़ी सभी प्रकारकी रचनाएँ सम्मिलित हैं एक दर्जन तक पहुँचती हैं।

गिरफ्तार करने तथा फोर्ट बिल्डिंग कारखाने के साहित्य-निर्माण विभागसे सम्बन्धित गद्यकारोंके सामने एक निश्चित उद्देश्य था। सभी उद्देश्यके अनुसार वे पुस्तक रचना से पर इनके अतिरिक्त रोजमें अन्य भी कई ऐसे व्यक्ति से जो स्वभावतः गद्य रचनामें प्रवृत्त थे।

इन गद्यकारोंमें विशेष रूपसे उल्लेखनीय इच्छाअस्ताखी 'इच्छा अब अली बेग मुदर' तथा कबीर मुहम्मद खान गोया शारि हैं।

इच्छा अस्ताखी की गद्य रचनाओंमें 'रानी केतकीकी कहानी' और बरिया-ये-अस्ताखी अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

अब अली बेग मुदर सखनऊँके पहले उर्दू गद्य लेखक हैं। वे सन् १७८७ ई में सखनऊँमें पैदा हुए और सन् १८१७ ई में सखनऊँमें ही इनकी मृत्यु हुई। इनकी रचनाओंमें मुदर-ए-मुस्तानी शरर-ए-इरक 'सिफूठा-ए-मुहब्बत' मुल्तजार-ए-मुकर पहिन्जान-ए-मुकर इच्छा-ए-मुकर तथा फियाना-ए-अजायब हैं। मुदर की सर्व श्रेष्ठ रचना फियाना-ए-अजायब है।

कबीर मुहम्मद गोया सखनऊँके रहनेवाले थे वह अपने समयके अच्छे कवि भी थे नासिर की वह अगली काव्य रचना लिखते थे। सन् १८५० ई में गोया का देहान्त हुआ। अनवार-ए-मुईनी नामक फारसी कहानी पुस्तकका



करबल कथा के बहुत समय बाद मिर्जा रज़ीब सीशा में अपने बीवान मसियाकी भूमिका पद्यमें लिखी है जो उनके कुस्तिपाठ ( दम्बावली ) में मौजूब है।

सीशा की इस भूमिकाके लगभग बाइस वर्ष बाद बर्बत्त सन् १७८८ ई में छाह रज़ीवहीनने कुपण धरीफका उर्दुमें अनुबाद किया। और दो वर्ष बाद बर्बत्त सन् १७९० ई में साह अब्दुल काबिरने भी कुरान धरीफका उर्दुमें अनुबाद किया।

इस कालकी दूसरी पद्य रचनाओंमें छाह इस्माईल अहीदकी तकवियत-अन-ईमान और शेराते मुस्तक़ीम विशेष प्रसिद्ध हैं।

इन धार्मिक रचनाओंके अतिरिक्त प्रारम्भिक रचनाओंमें भीर अता हुसेन तहसीन की नौतर्न मुरस्सा है। यह पुस्तक एक फ़ारसी रचना किस्म-ए-बहार दरवेश का उर्दु अनुबाद है।

### कुछ योरोपियन लेखक तथा फोटो विलियम कार्नेज

भारतमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीके प्रभावके बढ़नेके साथ-साथ दो स्त्रियों योरोप निवासियोंका भारतमें सम्बन्ध आया। कुछ योरोप निवासी तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीके तीरकरके रूपमें यहाँ आये और कुछ धर्म प्रचारकके रूपमें। किन्तु यहाँ तक यहाँके जीवनमें परिचय प्राप्त करनेका प्रयत्न या बोलनेके लिए यह आवश्यक था कि वह इस देशकी किसी ऐसी भाषाको सीखनेका प्रयत्न करे जिसके माध्यमसे इस देशकी यह संस्कृत जनताके सम्पर्कमें ले आ सके। इस उद्देश्यसे उन लोगोंने उर्दु अथवा हिन्दुस्तानी सीखनेका प्रयत्न किया। इस प्रकारके विदेशियोंमें जिन्होंने उर्दु अथवा हिन्दुस्तानी सीखने और अपने योरोपवासियोंको सिखानेका प्रयत्न किया उनमें विशिष्ट व्यक्तियोंके नाम इस प्रकार हैं —

जान बोसुजा केटकर, जर्मन पादरी थुस्व मिल बेल्गामिन थुस्व काभिन-थुर्न डाक्टर, ह्वाटर, पादरी मार्टिन आदि।

इन योरोपीय लेखकोंमें विशेष रूपसे व्याकरण और धर्म कौशलोंकी रचनाकी ओर ही ध्यान दिया क्योंकि उनका उद्देश्य उर्दु सीखना सिखाना मात्र था। ही इनमेंसे धर्म प्रचारक पादरियोंने बाइबिलके अनुबादोंकी ओर ध्यान दिया। अस्तु

उर्दु अथवा हिन्दुस्तानीका सबसे पहला व्याकरण बोसुजा केटकर द्वारा रचित समझा जाता है जिसे उन्होंने सन् १७१५ ई में रचा। इसी प्रकार जर्मन पादरी थुस्वने भी व्याकरण लिखा तथा मिलने हिन्दुस्तानी वर्षमासापर एक पुस्तक लिखी। पर सबसे अधिक इस विषयमें जिस व्यक्तिने कार्य किया है और जिसने उर्दु भाषाके विकासके लिए मार्ग निकाला है वह है डा. जॉन मिल्लरहस्ट।

जॉन मिल्लरहस्टने न केवल स्वयं अनेक रचनाएँ कीं प्रत्युत फोर्ट विलियम कार्नेजके साहित्य-निर्माण विभागसे अपनी देखरेखमें अनेक पुस्तकें लिखावाईं।

दिल्ली और लखनऊसे समय-समयपर अनेक सेवक बाल गिरु काइस्टकी उधारता सुन-सुनकर कल्पना पहुँचने लगे और फोर्ट बिल्डिंग कासेबके साहित्य निर्माण विभागसे सम्बद्ध होने लगे।

बिग सेबकोने फोर्ट बिल्डिंग कासेबके साहित्य निर्माण विभागमें रहकर उर्दू गद्यमें रचनाएँ की हैं उनके नाम तथा उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं —

मीर अम्मन देहकबी हैबरबख्त हैबरी मीर शेरबखी अफ़सोस मिर्जा अलीअरफ़ बहादुर अली हुसैनी मजहर अलीचाँ बिछा काबिम अली अबात निहालखन् बहाहीरी बेनीनारामन बह्नी तथा अल्फ़काक।

इन माध्तीय सेबकोके अतिरिक्त स्वयं गिरुकाइस्टने भी उर्दूमें अनेक रचनाएँ की हैं। जो इस प्रकार हैं —

१—बैयबी हिन्दुस्तानी बिकसनरी (सन् १७९३ ई) २—हिन्दुस्तानी घामर (सन् १७९९ ई) ३—ओरियण्टल सिगुइस्ट (सन् १७९८ ई) ४—कसस-ए-असीरकी (सन् १८०३ ई) ५—उजुमा-अ-अबात-ए-उर्दू (सन् १८०४ ई) ६—अबाबिह-ए-उर्दू (सन् १८०९ ई) ७—बैयबी बोख बाक (सन् १८२ ई)

इसके अतिरिक्त सन् १७८७ ई से उर्दूके सम्बन्धमें लिखना प्रारम्भ किया जिसका क्रम बीच-बीच तक चकटा रहा। सन् १८४१ ई में पेरिसमें गिरुकाइस्टका देहान्त हुआ। गिरुकाइस्टकी रचनाओंकी संख्या जिसमें छोटी-बड़ी सभी प्रकारकी रचनाएँ सम्मिलित हैं एक दर्जन तक पहुँचती है।

गिरुकाइस्ट तथा फोर्ट बिल्डिंग कासेबके साहित्य-निर्माण विभागसे सम्बन्धित गद्यकारोंके सामने एक निश्चित उद्देश्य था। उसी उद्देश्यके अनुसार वे पुस्तक रचते थे पर इनके अतिरिक्त वेगमें कव्य भी कई ऐसे व्यक्ति थे जो स्वभावतः गद्य रचनामें प्रवृत्त थे।

इन गद्यकारोंमें विशेष रूपसे उल्लेखनीय इन्दाबस्ताबा 'इन्दा रब-अली बेग मुहर तथा फकीर मुहम्मद खाँ गोया' आदि हैं।

इन्दा बस्ता खाँकी गद्य रचनाओंमें राजी केतकीकी कहानी और बय्या-ये-अशाज़न अत्यधिक प्रसिद्ध हैं।

रब अली बेग मुहर कवनऊके पहले उर्दू गद्य लेखक हैं। वे सन् १७८७ ई में कवनऊमें पैदा हुए और सन् १८१७ ई में कवनऊमें ही इनकी मृत्यु हुई। इनकी रचनाओंमें मुहर-ए-मुस्तानी घरर-ए-इपक 'सिगुइ-ए-मुहम्मद' बुलबार-ए-मुहर अविस्तान-ए-मुहर इन्दा-ए-मुहर तथा फिमाना-ए-अजायब हैं। मुहर की सर्व श्रेष्ठ रचना फिमाना-ए-अजायब है।

फकीर मुहम्मद गोया कवनऊके छूनेबाछे थे वह अपनी समयके अच्छे कवि भी थे नासिब को वह अपनी कव्य रचना लिखात थे। सन् १८३ ई में गोया का देहान्त हुआ। अजबार-ए-मुहम्मदी नामक फारसी कहानी पुस्तकका



मौलाना मुहम्मद हुसैन जाज़ाद (सन् १८३६-१९१० ई) की प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं याद-ए-हयात दरबार-ए-अकबरी नैरंग-ए-खयाल सोबानदात-ए-अरस। याद-ए-हयात में उर्दू के कवियोंका वर्णन है। दरबार-ए-अकबरी में जाज़ाद ने अकबर के कासकी सामाजिक और सांस्कृतिक अवस्थाका वर्णन किया है। नैरंग-ए-खयाल में अंग्रेजी (Allegary) का अनुकरण किया गया है। सोबानदात-ए-अरस भाषा विज्ञान सम्बन्धी पहली उर्दू पुस्तक है।

बशादा अस्ताफ़ हुसैन हासी (सन् १८३६-१९१४ ई) की बच पुस्तकोंमें उल्लेखनीय रचनाएँ इस प्रकार हैं हयात-ए-सादी मुक़द्दम-ए-योमर-ओ-शामरी यादमार-ए-नाकिब हयात-ए-जाबेद। हयात-ए-सादी में प्रसिद्ध फारसी कवि शेख सादीका जीवन भरित है। मुक़द्दम-ए-योमर-ओ-शामरी जाकोबनात्मक पुस्तक है। यादमार-ए-नाकिब मिर्जा नाकिबक जीवन और साहित्यसे सम्बन्धित रचना है। हयात-ए-जाबेद सर सम्यक अहमद ख़ाँका जीवन भरित है।

डा नबीर अहमद (सन् १८३६-१९१२ ई) की विशेष उल्लेखनीय रचनाओंमें मेरात-उल-ओस्म बेनात-उन-नास तीबत-उन-नसूह इम्न-उल-बकन आदि हैं। डा नबीर अहमद उर्दूके पहले उपन्यासकार होनेके साथ ही ऐसे लेखक भी थे जिन्होंने सामयिक समस्याओंपर भी प्रकाश डाला है। नबीर अहमद की भाषा भी बड़ी प्रवाहपूर्ण और दिल्लीकी विभूत उर्दू है।

मौलाना छिबली मोमानी (सन् १८३७-१९१४ ई) ने विभिन्न विषयोंपर रचनाएँ की हैं और इस प्रकार उनकी रचनाओं की संख्या भी बहुत है। पर सर्वाधिक प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं अक़्मामून सीरत शूक-नोमान अलफ़ाक़ अक़ मेवासी इम्न-उल-क़क़ाम मबानिह मौलाना-क़म शेखर-उल-अबम सीरत-उन-नबी अरक़क़ाम मबायना असीसब ख़बीर।

पं रतननाथ सरघार (१८४६-१९२१ ई) मुख्यतः उपन्यास लेखक थे, इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं — किसमत-ए-जाज़ाद आम-ए-सरघार सीर-ए-क़ोहसार कामिनी । इनमें सबसे प्रसिद्ध रचना किसाना-ए-जाज़ाद है। इस उपन्यासका जाज़ाद कथा के नामसे देवनागरीमें प्रेमचन्द न संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित किया है।

मौलाना अब्दुल हसीम धरर (सन् १८६०-१९२६ ई) धरर ने सन् १८८७ ई में दिक्क़ुदाब नामक पत्रिका निकाली। इसी पत्रिकामें उन्होंने अपने उपन्यास तथा निबन्ध लिखना प्रारम्भ किया। धरर के प्रसिद्ध उपन्यास इस प्रकार हैं फ़िरदीस-ए-बरी अय्याम-ए-अरब मन्सूर मोहता हुस्तका बाक़ू बबान-ए-बमहाद फ़हीद-ए-बख़। फ़िरदीस-ए-बरी सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। फ़हीद-ए-बख़ा नाटक है। धरर ने यद्यपि कई और नाटक भी लिखे हैं पर नाटककारके रूपमें वे सफल नहीं हो सके।

बिचमे पंचतन्त्र तथा द्वितीयपदेसकी कहानियाँ संग्रहीत हैं। पोसा में उर्दू अनुबाद किया है। पोसा के अनुबादका नाम बुस्तान-ए-हिफ्मत है।

उर्दू बचके विकासके सामूहिक प्रयत्नोंमें दिल्ली काफेज तथा उसकी देहली बर्नाबुकर ट्रांसकेपन सोसायटी का उल्लेख भी आवश्यक है। देहली काफेजकी स्थापना सन् १८२२ ई. में अब्दुल फोर्ट बिल्किम काफेजकी स्थापनाके २५ वर्ष बाद हुई थी। सन् १८४१ ई. में उक्त ट्रांसकेपन सोसायटीकी स्थापना हुई। जिन पुस्तकोंके सोसायटीने अनुबाद कराए हैं उनकी पूरी सूची देना तो सम्भव नहीं है। इतना ही बताया जा सकता है कि सोसायटीने अंग्रेजी बरबी फारसी तथा संस्कृत भाषाओंसे अनुबाद कराए थे। अनुबादकों में विशेष रूपसे उल्लेखनीय धर्म नायक अमीरुल्लाह प्रसाद धीतक प्रसाद बबीरबली तुलाम बली मुहम्मद हुसैन तथा मास्टर रामचन्द्र हैं। मास्टर रामचन्द्रको सबसे अधिक महत्व प्राप्त है। मास्टर रामचन्द्र को दो मौलिक रचनाएँ बजाम-ए-नोजगर तबकिल-उक-काम-ए-बीन विशेष रूपसे प्रसिद्ध हैं।

### उर्दू पद्यका विकास-काल

उर्दू पद्यके विकास काफेजो घर सम्बन्ध अहमद खाँसे प्रारम्भ किया जा सकता है। और इस प्रकार इस कालको घर सम्बन्ध काल भी कहा जा सकता है।

घर सम्बन्ध अहमद खाँका जन्म सन् १८१७ ई. में दिल्लीमें हुआ। घर सम्बन्धने अंग्रेजी राज स्थापित हो जानेके बाद की उस स्थिति का जो विशेष रूपसे भारतीय मुसलमानोंके सम्बन्धित थी—की और अधिक ध्यान दिया। उनका अधिकतर साहित्य और शिक्षा प्रचारके क्षेत्रमें अजीब-कामेजकी स्थापना सब कुछ मुसलमानोंकी स्थितिकी सुधारनेके उद्देश्यसे किया गया कार्य है।

घर सम्बन्धने अन्य कार्योंके अतिरिक्त छोटी-बड़ी तीस पुस्तकें लिखी हैं। घर सम्बन्धकी पहली पुस्तक जिसका विशेष रूपसे उल्लेख किया जा सकता है आसाद-ए-सनादीर है। घर सम्बन्धकी सबसे प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण रचना खुदात-ए-अहमदिया समझी जाती है।

२४ दिसम्बर सन् १८७० ई. में घर सम्बन्धने तहजीबुल-इकबाल नामक पत्रिका निकाली। तहजीबुल-इकबाल में घर सम्बन्धके निबन्ध उर्दूके नए पद्यका नमूना कहे जा सकते हैं। इस प्रकार न केवल घर सम्बन्धके निबन्ध उर्दूकोठिके ही हैं प्रत्युत वे नये ढंगके निबन्ध लेखनके जन्मदाता भी हैं।

इस कालके अन्य पत्रकारोंमें मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद खाना अस्ताद हुसैन हाजी या नजीर अहमद, मौलाना शिबली मोमानी पं रतननाथ 'सरदार' मौलाना अब्दुल हकीम खान मुन्शी खन्वार हुसैन मिर्जा मुहम्मद हाजी खाना 'उज्ज्वल' बी.टी. आजाद इस कास्मीरी मौलाना अबुल कलाम आजाद हुसैन मिर्जा मौलाना मुहम्मद बकी मौलाना अफसर खानी खाँ आदि हैं।

मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद (सन् १८३६-१९१० ई) की प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं आब-ए-हयात परवार-ए-मक़बरी नैरंग-ए-खयाल सोखनदान-ए-फ़रस। आब-ए-हयात में उर्दू के कवियोंका बचन है। परवार-ए-मक़बरी में आजाद ने अम्बर के काक़बी सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाका वर्णन किया है। नैरंग-ए-खयाल में बय्यी (Allegary) का अनुकरण किया गया है। सोखनदान-ए-फ़रस भाषा विज्ञान सम्बन्धी पहली उर्दू पुस्तक है।

बराका अस्ताक हुसैन हासी (सन् १८२६-१९१४ ई) की यह पुस्तकमें उस्तेखनीय रचनाएँ इस प्रकार हैं हयात-ए-सारी मुक़द्दम-ए-खोजर-ओ-घायरी 'यादमार-ए-नाख़िब हयात-ए-जावेद। हयात-ए-सारी में प्रसिद्ध फ़ारसी कवि शेख़ मारीका जावन खरिद है। मुक़द्दम-ए-खोजर-ओ-घायरी भाषोपनारमक पुस्तक है। यादमार-ए-नाख़िब मिर्जा नाख़िबक जीवन और साहित्यसे सम्बन्धित रचना है। हयात-ए-जावेद सर सय्यद अहमद खाँका जीवन खरिद है।

डा. मबीर अहमद (सन् १८३६-१९१२ ई) की विधेय उस्तेखनीय रचनाओंमें मेरात-उक़-मौक़म बेरात-उग-नास तीबत-उग-नसूह इल्म-उक़-बनउ खरिद है। डा मबीर अहमद उर्दूके पहल उषन्यासकार होनेके साथ ही ऐंसे लेखक भी थे जिन्होंने सामयिक समस्यारोंपर भी प्रकाश डाला है। मबीर अहमद की भाषा भी बड़ी प्रभावपूर्ण और शिक्षणीकी विगुड उर्दू है।

मौलाना शिबली मौलानी (सन् १८३७-१९१४ ई) ने विभिन्न विषयोंपर रचनाएँ की हैं और इस प्रकार उनकी रचनाओं की संख्या भी बहुत है। पर सर्वाधिक प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं बक़नामून सीरत-अुम-नोमान मसफ़रक अक़ मेराली इस्म-उक़-क़सान मबानहू मौलाना-क़म खोजर-उक़-बय्य 'सीरत-उक़-मबी अक़क़नाम मबाजना असीसुध खरीर।

पं रतननाथ सरघार (१८४६-१९०२ ई) मुख्यतः उपन्यास लेखक थे इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं — किसान-ए-आबाद ज़ाम-ए-सरमार सैर-ए-कोहसार जामिनी । इनमें सबसे प्रसिद्ध रचना किसान-ए-आबाद है। इस उपन्यासका आजाद कथा के नामसे देवनागरीमें प्रेमचन्द ने संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित किया है।

मौलाना अब्दुल हकीम खरर (सन् १८६०-१९२६ ई) खरर ने सन् १८८७ ई में रिक्तनुदाब नामक पत्रिका निकाली। इसी पत्रिकामें उन्होंने अपने उपन्यास तथा निबन्ध लिखना प्रारम्भ किया। खरर के प्रसिद्ध उपन्यास इस प्रकार हैं फ़िरंगीम-ए-बरी अय्याम-ए-अरब मन्सूर मोहना हुसका बाक़ जवाब-ए-बय्यरद फ़हीद-ए-अय्य । फ़िरंगीम-ए-बरी सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। फ़हीद-ए-अय्य नाटक है। खरर ने यद्यपि कई और नाटक भी लिखे हैं पर नाटककारके रूपमें वे सफल नहीं हो सके।

बंगारे नामक एक कहानी संग्रह प्रकाशित किया। यह कहानी संग्रह क्या था बमरा गौला था जो तरकामीन समाजपर पड़ा। धर्म तथा नैतिकता आदिके आदर्शों-पर इस रचनाने ऐसी चोट की कि लोग विक्रमिता उठे। पर इसमें सम्येह गद्दी कि यह रचना विक्रमिता देनेवाली रचना थी किसी प्रकारका रचनारामक बृष्टिकोण इससे सम्भव न था। इसी समय काफी लम्बे मसौसे निम्नाज फतेहपुरीकी निम्नार नामक पत्रिका भी निकल ही रही थी जिसका उद्देश्य भी बहुत कुछ सर्व साधारणके नीति तथा धर्म सम्बन्धी विचारोंपर चोट करना ही था।

बंगारे के प्रकाशनके तीन वर्ष बाद सन् १९३६ ई में प्रेमचन्दकी अध्यक्षतामें कलकत्तमें प्रगतिशील लेखक संघकी स्थापना हुई। जिसने लेखकोंको एक बृष्टि थी। परिणामतः उन्के अधिकांश लेखकोंने प्रगतिशील विचारधाराको अपना लिया। पर बहुतसे लेखकोंने प्रगतिशील विचार धारासे अपने आपको अलग रखा और पुठनी परिपाटीपर चम्बते रहे। ऐसे लेखकोंने जिन्होंने प्रगतिशील विचार को अपना किया तथा मार्क्सके दर्शनको स्वीकार कर लिया था उनकी संख्या एक समयमें बहुत काफी थी। पर धीरे-धीरे क्रमिके विचारोंका भी लेखकोंपर प्रभाव पड़ने लगा और इस प्रकार आजके उर्दू कहानी तथा उपन्यास लेखकोंमें मार्क्सवादी फायदवादी तथा कुछ स्वतन्त्र विचारक हैं।

आधुनिक लेखकोंमें जिनका विशेष रूपसे उल्लेख किया जा सकता है उनमेंसे कुछ इस प्रकार हैं —

कृष्णचन्द, सज्जद हुसैन मिटो, राजेन्द्रसिंह बेबी इस्मैल चुगठारी, उपेन्द्रनाथ अरर हयात उस्ताह-अम्तारी महमद मबीम कासिमी स्वाधा महमद अम्तास मबीम महमद मुमताज मुक्ती हंसराज रज्जर

कृष्णचन्द के उपन्यास तथा कहानी संग्रह इस प्रकार हैं — विक्रमस्त तुफानकी ककिया उस्ता दरकत जब येठ जाने (उपन्यास) बंगारे, जिन्दगीके मोड़पर टूटे हुए तारे अल्लाहाता तीन गुप्ते हम बहपी है समुन्दर दूर हैं अजन्तासे जाये मैं इन्तजार करूँगा एक मिर्जा एक खन्दाक (कहानी) आदि।

मिटोके कहानी संग्रह इस प्रकार हैं 'धुंदा मिटोके अफसाने सज्जदें संय बामी डिम्ने वाली बोटमें नमककी बुदाई सिवाह हाथिये' ठग्ना पीठत मजीद बारघातका छातमा सङ्कके फिनारे चुन्दर आदि। राजेन्द्रसिंह बेबीके प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'दाना-ओ-दान परहन कीब' था।

इस्मैल चुगठारीके कहानी संग्रह 'कमिया' 'बोटें' 'सुई-मुई' 'एकबात'। उपेन्द्रनाथ अरर के कहानी संग्रह 'कौचक' 'बाबी' 'नामूर' 'बटान' आदि।

इनागुल्गाह अस्सारीके कहानी संग्रहका नाम भरे बाजारमें' है।

अहमद शहीम काश्मिरी जो विभाजनके कारण पाकिस्तानमें हैं। उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह इस प्रकार है — अपने चौपास सन्नाटा बाबसे दर-ओ-दीवार, वांछक।

स्नाजा अहमद अस्सासके कहानी संग्रह इस प्रकार है — बाफरानके फूंक' कड़की कहते हैं इस्क जिसको बादि।

अजीज अहमदके दो उपन्यास ऐसी बुद्धि वैसे परती और गुरेज के अन्धावा हो कहानी संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं, रस-ए-नातमान बेकार दिन बेकार रातें।

मुमताज मुस्लीके कहानी संग्रह इस प्रकार है — अतकही महामाहमी, पुन।

हंसराज खबर के कहानी संग्रहोंके नाम इस प्रकार हैं तथा उपक हम लोग।

इन लेखकोंके अतिरिक्त अन्य लेखकोंके नाम तथा उनके संग्रहोंके नाम इस प्रकार हैं —

कुर्रतुल ऐन ( शिवासेठि नामे धीपेका भर ) कुर्रतुलगाह सहाब ( नफसाने ) मेमनाब परबैजी ( बुनिया इनापी ) गुलाम अस्साठ ('बान्सी') महेश्वरनाथ ('बोरीके छार') 'जहाँ मैं रहता हूँ नई बीमाटी माई कात्मि होटक ( हिन्दुस्तानसे पाकिस्तान तक ) मुमताज धीरी ('अपनी नगरिया') हाबर मधर ('बरेके' हाय अस्साह) खुरीजा मस्तुर ('खेल बन्न रोज और बीजार ) इबाहीम बलीष ('बरे' बेहरे, बासीष करोर मिखाटी तिकोना रैठ ) मे हमीद ('बिर्जाका गीत') धीफ्त सिद्दीकी (तीसरा भागमी) इन्दिजार हुसैन (गली कूबे) प्रकाश पण्डित (मीरास) रजिवा सज्जार अहीरका कोई संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ।

उर्दूके हास्य लेखकोंमें भी कुछ लोग उच्च कोटिके हास्य लेखक हो गए हैं उनमेंसे कुछके नाम इस प्रकार हैं रशीद अहमद सिद्दीकी अजीम बेग चुगताई, नवरस चौफ्त पानवी' इम्मियाज अभी 'ताज नाकार हायरवारी हाबी लकलक सिन्धवार अहाजी धफ्तीकुर्रमान कन्हैयालाठ कपूर आदि।

उर्दू हास्य लेखनकी परम्परा १९ शताब्दीसे अबध पंच नामक पत्रसे प्रारम्भ होती है।

उर्दू आलोचकोंमें आज तक विशेष रूपसे उल्लेखनीय आते अहमद मुकर, एहनिषाम हुसैन अजाज अहमद फाफकी एजाज हुसैन मुमताज हुसैन तथा इबाबत बरेलवी हैं। इन आलोचकोंमें अधिकांश मासिकवारी दर्शनक अनुधार साहित्यका सुस्थापन करनेके पत्रपत्री हैं। मजनु मोरखपुरी जैसे कुछ अन्य लोग भी हैं पर



उनको आजकी आलोचनानामें विधिष्ट स्वाग नहीं है यद्यपि गल बर्षोंमें उनका भी आलोचकोंमें अच्छा स्वाग समझा जाता था।

मि.सन्नेहू यहाँ जिन व्यक्तियोंका निबन्धकार, उपन्यासकार, कहानीकार, कब्रवा आलोचकोंके रूपमें उल्लेख किया गया है उनकी संख्या अत्यन्त है। अनेक ऐसे लेखक रह गए हैं जिनका यदि उल्लेख किया जाता तो संख्या और भी अधिक बढ़ जाती। फिर भी इस बातका मया सम्भव प्रमाण रखा गया है कि किसी महत्वपूर्ण व्यक्तिको नाम रह न जाय।

• • •

मुहम्मद इक़्वाल

[ कवि परिचय ]



## मुहम्मद इकबाल

### सूमिका

इस छोटी-सी पुस्तकका उद्देश्य हिन्दी संसारको इकबालका प्रारम्भिक परिचय देना है। इकबाल और टैगोर भारतके उन कवियोंमें हैं जिनकी कविता और अस्तित्वका प्रभाव राष्ट्रभूमिसे बाहर निकल कर सारे संसारमें फैला। उनके सन्देशके भिन्न भिन्न अर्थ समाए गए और भारतीय नवयुवकों और बुद्धि जीवियोंकी अनेक पीढ़ियाँ उनकी कला और उनके द्वारा प्रतिपादित दर्शनकी छायायामें पली और बड़ी। अतः इस छोटी-सी पुस्तकमें इकबालकी कला और दर्शनका पूरा परिचय देना कठिन है। प्रयत्न यही होता कि इकबालके कलात्मक और दर्शनार्थक अस्तित्वका विमल ऐसा चित्रा बनाए कि उसके मूल्यका आभास सामने आ जाए।

एक कविकी विवेककर सांस्कृतिक कवि को दूसरे साहित्यवालोंसे भली भाँति परिचित कराना आसान नहीं है। कविता मनकी मीठ भी होती है और शब्दोंका समन्वय भी। शब्दोंकी यह शक्ति सभी समझी और समझाई जा सकती है जब इस साहित्यके और उस भाषाके मूल संकेतों और उसके सूत्रोंसे पाठक भली भाँति परिचित हों। यही कठिनाई दर्शनके परिचयमें भी है। दर्शन भाषामें पूर्ण रूपमें नहीं मना सकता। दर्शनकी रूपनाओं विस्फेषणों और विचार बीजवका साथ भाषा नहीं दे पाती। जिस कविमें उन दोनों बातोंका सम्मिलन हो पाता है उस कविकी समझना और समझाना और भी कठिन हो जाता है।

उर्दू छापरीके सम्बन्धमें यह विचार प्रचलित है कि वह केवल रोमांस है। उसकी भाव गंभीर है और गंभीर प्रेम विकास और मस्तीकी कहाणी होती है जिसमें भावनात्मक तथा लो होता है परन्तु विचारकी महारह और दृष्टिकी सूक्ष्मता नहीं होती। ऐसी बात लो नहीं है कि यह आरोप एकदम निराधार ही हो परन्तु इसमें अमूर्त सत्य है जो सुठसे अधिक बातक है।

उर्दू छापरी केवल प्रबलता नाम नहीं है और न प्रबलमें केवल प्रेम विकास और मस्ती ही अभिव्यक्त होती है। गंभीरकी शब्दावली अन्य भाषावालोंको प्रोधा देती है। कारण जो कुछ भी हो फरसी कविता प्रबलमें ही एक विशेष रूपका संकेतवार प्रचलित हो गया था। अराब साकी महमूद बुम्बुल कफ़र बहार, जमीर आदिके संकेत न केवल अपने काव्य वाले बर्षमें प्रवृत्त किए गए बल्कि राष्ट्र समान बर्ष नैतिक और धार्मिक विचार भी इन्हीं शब्दों और संकेतोंमें व्यक्त हुए।

जैसे हिन्दी साहित्यके रीतिकालमें कवितापर सामन्ती काय गहरी हो गई थी और भावना और दार्शनिक सूक्ष्मताका स्वान बोधित काव्यत्व अत्यधिक आर्थ-कारिकता और पाण्डित्य प्रदर्शनने प्रह्वन कर लिया था ठीक इही प्रकार उर्दू छापरी भी ऐसे ही मुससे गुबरी। गंभीर इही परम्परावारसे बरनाम हुई और उसे कोरी प्रेमवाची तक ही सीमित कर दिया गया।

इकबालने भी पक्षमें लिखी है परन्तु उनकी पक्षे (केवल कुछको छोड़कर) परम्परा-वारके स्वानपर अनुभव और जीते कायते विचारोंसे पूर्ण है। यह भी ठीक है कि इकबालके मुससे कुछ पूर्व ही उर्दू छापरीमें एक अति हो चुकी थी। इकबालने उस अतिको गया मार्ग और नई दृष्टि बरस्य ही परन्तु इनके पहलेके कुछ कवि इनसे पहले इस नवचेतनाकी नींव डाल चुके थे। इकबालने उस परम्पराकी धार बहाकर चरम सीमातक पहुँचाया।

ई स १८७४ में काहीरकी अनुमते पंजाबका मुलायम कर्नल हालउद्द और भी मुहम्मद हुसैन आजादके नेतृत्वमें हुआ था जिससे उर्दूमें इकबालके छात्र-छात्र नरम या पवित्रनी छापरीके अंतर एक विषयक कविताका चलन हुआ। 'राष्ट्रीय भावनाएँ, बर्बनात्मक कविता और बर्बनात्मक कविता Descriptive Poetry की और कवियोंका स्वान गया। लखनऊमें बुज माउथन चरुवस्त और इनाहावारके हास्य कवि अकबर इनाहावादीने हासी आजाद और सिम्बीकी इस नव्यवाची परम्पराको और बूड़ किया।

इकबालने उर्दू छापरीके इही मोड़को अपनाया था। मुहम्मद इकबालका जन्म स्यालकोट (पंजाब) में २२ फरवरी १८६३ को हुआ था। कहा जाता है कि उनके पुरखे कास्मीरी ब्राह्मण थे और लगभग ३० वर्ष पूर्व वे मुसलमान हो गए थे। इकबालकी प्रारम्भिक शिक्षा पहले स्यालकोट और फिर काहीरमें हुई। स्यालकोट ही में इकबालको राममुल उलेमा और हुसैन जैसे बुद्धि मित्र गए थे जिन्होंने

नहीं फरसी और अरबीके साहित्यके प्रति बख्शी खिच देना क्या भी थी। इकबालने जेटी उम्र ही से छायायी करना आरम्भ कर दिया था और अपने युवके प्रसिद्ध कवि जम् शेखरीको अपना गुरु माना।

शाहकी कविता अपनी सूक्ष्म दृष्टि और विचार शौकताके कारण प्रसिद्ध थी केवल मायाकी सरलता और टकसाली मुहाबरेदार और प्रेम बल्कि नाम विनास और रोमांसके कारण लोकप्रिय थी। शाय मुसायरी और सभाओंके कवि थे। उनकी छायायीमें सस्ती मान्यताकी अधिकता थी। उनकी कवितामें मायाकी सरलता और आम फुस बोझीका मजा या मयूर गहुरईका अभाव पाया जाता था।

इकबाल इस परम्परासे ऊपर उठे। शाहके प्रभावके परिणाम स्वल्प उन्होंने कुछ ग्रहण कही। परिणामतः स्वयं शाहकी पीछ ही विस्थाप्य हो गया कि उनके इस नए सिप्यको उनके नेतृत्वकी अधिक आवश्यकता नहीं है। फिर कुछ दिनों तक हाजी आबाद और अकबरनकी दरबार चलते हुए इकबाल राष्ट्र-प्रेम और राजनैतिक स्वतन्त्रताकी ओर झुके और उनकी मर्में काहीरके मुसायरी और सभाओंके अतिरिक्त सर अशुल कादिरके प्रसिद्ध मासिक पत्र "मकजान" में छप कर सारे भारतमें मधुर हुई।

तीथे ही हुई एबलसे इस बातका सहज ही में अनुमान किया जा सकता है कि इकबालकी मर्में किस हद तक राष्ट्रसे प्रभावित है —

न जाते हमें इसमें तकवार क्या भी  
नपर बाबा करते हुए नार क्या भी  
तुम्हारे पयामीने सब राज खोला  
कता इसमें बरिकी सरकार क्या भी

इसी प्रकार हाजी और अकबरनकी परम्पराके उदाहरणमें इकबालकी मर्में "हिमाक" "नया सिबाक" "सारे बहसि बख्शा हिन्दोस्ता हमाय" और "तम्बारे बई" को प्रस्तुत किया जा सकता है। इसी युगमें इकबालने बख्शीके लिए बहुत सी मञ्जी और नरक मर्में भी लिखीं। "नामाए यतीम" (अनाथोंकी फरमाह) और "अबै पीहरवार" (मोठी बरसानेवाला बालक) भी इसी यमानेकी लिखी हुई हैं जो बादमें संघर्षमें नहीं छपी गईं।

साहीरमें इकबाल को और व्यक्तिवासे प्रभावित हुए। एक प्रसिद्ध विद्वान् सर टामस ओल्फण्डसे जिन्होंने इकबालको रचन छासत्र और पवित्रनी विचारोंके नहरे अध्ययनकी ओर आकृष्ट किया और इनके सर अशुल कादिरमें जा "मकजान" के सम्पादक में और निरन्तर इकबालको उर्दू शायरीकी ओर आकृष्ट करते रहते थे।

रचन छासत्र और कविताका यह संघर्ष काही दिनों तक इकबालके हृदयमें उबल-मुपल मचाता रहा और एक ऐसा यमाना भी आया जब कि उन्होंने

त्याम हेनेका निरचन कर लिया था। जेक बार सर अब्दुल कारिमको उन्होंने  
दिया —

मुदीर मस्जिदसे कोई इकबाल जाके मेरा प्याम कहू दे  
जो काम कुछ कर रही हूँ बीमें उन्हें मजाके गुजन नहीं है।

[सम्पादक मस्जिदसे जाकर कोई मेरा यह सन्देश कहू दे कि सत्तारमें जो  
अधसर पाठ है उन्हें कवितामें बधि नहीं है।]

यह फैसला सर टामस औरलस्वर छोड़ा गया कि इकबालको घेरो घायरी  
छोड़ना चाहिए या नहीं? जेका फैसला इकबाल द्वारा घायरी करने के पक्षमें  
हुआ।

इकबालकी घायरीका पहला दौर १९५ तक समाप्त होता है। इस समय  
उन्होंने यूरोपकी यात्रा की थी। इससे पहलेकी घायरीमें एक ओर गहरी राष्ट्रीयता  
और भारत-प्रेम भरा हुआ है जिसका उदाहरण गया सिवासा "हिन्दोस्तां हमार"  
और "तस्वीरे सर्व" में मिलता है और दूसरी ओर जनपर सुफी मतके उभ मूक विचारों-  
का भी प्रभाव मिलता है जिनका इकबालने बादको बड़ी तीव्रतासे खण्डन किया।  
इकबालने भावे चलकर राष्ट्रवादको त्याग दिया किन्तु भारतका अद्भुत प्रेम  
इनके मनमें उठा बना रहा। इसीका यह परिणाम हुआ कि "बाबेह मामा" में  
हाफेकी "जिबाहन कमिरी" के उगकी कुछ रचनाएँ लिखी मिलती हैं। उन्होंने  
भाएसे नवारी कजेबाबोंको नरकके सबसे निचके भागमें स्थान दिया है।

सन् १९५ में इकबाल बिलायत गए और वहाँ तीन वर्ष रह कर उन्होंने  
केम्ब्रिजके डिप्टी डी म्युनिसिपल पी जेब डी की डिग्री ली और ६ महीने तक उन्होंने  
कनन बुनिवर्सिटीमें अरबी पढ़ाई और कौन्सल हाउसमें लेक्चरर बिये। तीन वर्ष  
परचाप् मबमेंट कालेज साहीरमें दर्शन शास्त्रके अध्यापक नियुक्त हुए। चार वर्ष  
बाद उन्होंने कालेज छोड़कर बॉरिस्टरी आरम्भ कर ली।

१९१५ में "असपारे खुरी" छपी और उसके कुछ दिन बाद "रमूजे ब  
खुशी। ये दोनों नवमें फ़ारसीमें लिखी गई थी। इनमें पहले पहल इकबालकी  
वार्धनिकताकी सखक स्पष्ट रूपमें दिखाई ली। अब इकबाल यह जान चुके थे कि  
उनकी घायरी एक सन्देशकी शोथक है। १९२१ में "बिबरे राह" और एक वर्ष  
बाद "गुनुए इस्लाम" छपी। इनके उपरान्त फ़ारसीमें उनकी तीन रचनाएँ "प्यामे  
मसरिक" (जो गेटेकी रचना West Ostlicher Divan के उत्तरमें मानो  
पीरालिय संस्कृति की ओर से पारिचयात्य संस्कृतिके नाम एक बयाव है) "अबूदे  
अबम" और "बाबेह मामा" प्रकाशित हुई।

इनके अतिरिक्त इकबालने उर्दूमें चार संग्रह प्रकाशित किए। पहला  
"बामे दिव" १९२४ में "बामे जिबरील" १९३३ में और "बर्बे कमीम" १९३९ में  
दिया गया। इन संग्रहों में "बामे जिबरील" का नाम एक बयाव है। इसी समय

फारसीकी दो छम्बी मगमें मुसाफिर और "पसके बायद कर्द" भी प्रकाशित हुई।

बकील होनेके नाते इकबाल स्वतन्त्र विचारक थे। उन्होंने राजनीतिमें भी भाग लिया। उनको राजनीतिकी मूल समस्याओंमें अधिक लगाव था परन्तु राजनीतिकी पैतरेबाजीसे न था वे परिचित ही थे और न इस प्रकारकी राजनीतिमें उन्हें अधिक लगाव ही था। वे बाल इंडिया मुस्लिम लीगके प्रधान भी चुने गए थे और १९३० का उनका अध्यक्षीय भाषण सबमुक्त ऐतिहासिक कहा जा सकता है। इसके करीब एक वर्ष बाद उन्होंने राउण्ड टेबिल कान्फेन्समें भी सम्मेलन भाग लिया था। वे दो बार यूरोप गए तथा यहाँके प्रसिद्ध नेताओं और इज्जत साहिबोंसे भी मिले।

विज्ञानसे इकबालको अत्यन्त गहुर लगाव था। उन्होंने काबूल यूनिवर्सिटीकी स्थापनामें महत्वपूर्ण भाग लिया था। इसी प्रकार जामिया मिस्बियासे भी उनको बहुत दिलचस्पी थी। १९२८ में उन्होंने मजाम मीमूर, ईदगाह और अनीगढ़ आदिका दौर करके अपना भाषण क्रम पूरा किया जो बादमें इस्लामके धार्मिक दर्शनकी नई रचना के नामसे अंग्रेजीमें छपा। १९२२ में उन्हें सर की मुयाधि मिली।

इकबालकी रचनाओंमें सर्व शास्त्र (Economics) पर एक पुस्तक "इस्लामके धार्मिक दर्शन की नई रचना (अंग्रेजीमें) और कबितामें (उर्दू मसह) बागि बिदा वाले जिबरील सर्वे करीम और अमगाने हिजाज और (फारसी में) अतपारे खरी " "रमुने बेखुशी" "बबुरे बजम" "जावेद नामा" पयासे मसफिर " "पसके बायद कर्द" "मसाफिर" और उर्दू संपह "अमंगाने हिजाज" का फारसी भाग शामिल है। इनके अतिरिक्त उनकी दो ऐसी रचनाओंका भी पता चलता है जिन्हें इकबाल पूरा न कर सके। उनमें एक उर्दू पद्यमें रामायणका अनुवाद था और दूसरे अंग्रेजीमें "The book of a forgotten prophet" (सूने हुए पैगम्बरकी पुस्तक) है।

इकबाल कबिके अनिश्चित राजनीतिज्ञ और विज्ञान शास्त्रीक रूपमें भी प्रसिद्ध हुए। राजनीतिमें उनके उम ब्याख्यात्मक आधारपर (जो उन्होंने इलाहाबादमें १९३० में मजलिस मीनके-अधिबैठकमें समापति पहल किया था) कुछ लोग उन्हें पाकिस्तानका निर्माता भी घोषित करते हैं किन्तु इकबालने अपने ब्याख्यातमें जो बयाना की थी वह पाकिस्तानके आधुनिक रूपस भिन्न है। साम्प्रतमें इकबालने मुस्लिम राष्ट्रोंके एक ऐसे आधारकी रचनाका प्रस्ताव रखा था जो तुर्कीस आरम्भ होकर भारतके मुस्लिम-बहु-अध्याक प्रांतों तक फैला हुआ हो।

यह ध्यान रखना चाहिये कि इकबालने कभी राजनीतिमें सक्रिय रूपमें अधिक भाग नहीं लिया और इस रूपमें उनका महत्व कम है। कहा जाता है कि



मौलाना मुहम्मद खबीने एक बार इकबालसे डिफ्रायलके रूपमें यह कहा था कि अपनी कवितासे तो जनतामें जाय इतना उत्साह और उन्मत्त पैदा करते हैं परन्तु राजनीतिमें सक्रिय भाग नहीं लेते। यह क्या बात है? इकबालने तुरन्त उत्तर दिया कि भाई कवि तो अपने राष्ट्रका कल्याण होता है जिसकी कर्मात्मियोंको मुन मुनकर भोलापण झूम उठते हैं। स्वयं पाचना उसका काम नहीं।”

इकबालके जीवनके अन्तिम दिन कष्ट और रोय वसित बधामें बीते। पहले उनके गलेपर फाकिशका प्रभाव हुआ जिससे उनकी वाचाय जाती रही। फिर माँझोंमें तन्त्रकीक आरम्भ हुई और वह सररास मसूरके पास मूपासमें चिकित्साके लिए आकर रहे। किन्तु कोई लाभ नहीं हो पाया। २५ मार्च १९३८ को उनका देहान्त साहौरमें हो गया। एशिया और योरोपके सभी प्रसिद्ध बुद्धिजीवियोंने इकबालके देहान्तपर भयान्त्रिमियाँ व्यपित कीं।

इकबालकी कविताका युग १९ वीं शताब्दीके अन्त और २ वीं के आरम्भके २५-३० वर्षकी अवधिका है। यह वह समयका था जब एक ओर तो योरोपमें वैज्ञानिक क्षमता और सक्रिय चरम सीमाकी ओर उन्नतरी की और दूसरी ओर ऐशिया और विशेषकर मुस्लिम राष्ट्र पछाधीनता और राजनीतिक गुलामीके दौर अन्धकारमें बिरते जा रहे थे।

तुर्की जो कभी मुसलमानोंका सबसे प्रकृतधामी देश था अब निर्बल हो गया था और योरोपका “बीमार आदमी” कहलाने लगा था। अन्ध सभी मुस्लिम राष्ट्र का ही पराधीन हो चुके थे या उनमें भीतरी फूट और संघर्ष तीव्रतासे चल रहा था। जाबीरखानीने मुसलमानोंकी बधा बिबाह रही थी और वे परिश्रम और कार्यक्षेत्रसे दूर होते जा रहे थे। एशियाके दूसरी जातियों और राष्ट्रोंकी बधा भी अधिक ठीक न थी और वे सब पतनकी परम सीमा तक पहुँच चुके थे। सबसे आश्चर्यकी बात तो यह थी कि उन्हें यहाँ तक भान न रहा गया था कि वे किस सीमा तक पतित हो चुके हैं बल्कि अपने अज्ञानिस्तकों और नेताओंको भली-भाँति पहचाननेकी क्षमता भी खो बैठे थे।

हिन्दुस्तानी मुसलमानोंमें घर सम्पन्न अहमद खाँके नेतृत्वमें पाश्चात्य शिक्षा और सम्पत्ताका प्रभाव पड़ना तो आरम्भ हो गया परन्तु नवमुदक इस शिक्षापद्धति और सम्पत्ताकी बाहरी चमक चमक और टीम टामसे प्रभावित हो रहे थे और इसी धुनमें वे अपनी परम्परा और अपने उच्चतर अतीतकी पूज बैठे थे।

उत्तर योरोप बहुरे संस्कृतिमें था। इकबालने अपने बहुतेसे दूसरे साधियोंकी भाँति जिस राष्ट्रवार स्वतन्त्रता औद्योगिकरण और संघर्षीय प्रथात्मिकके जिस रूपकी भारत और एशियाके सभी पछाधीन राष्ट्रोंके बु-बौला एक मान इलाज समझ रहे थे स्वयं योरोपमें वह छाया विमान संस्कृतिमें बिरा हुआ बिबाई दिया। इस संस्कृति की रूप से—एक आधुनिक और दूसरा नैतिक। आधुनिक दृष्टिसे योरोपमें मशीनों

और कारखानों में जीवनकी सभी आवश्यक वस्तुओंको बहुत बड़ी संख्यामें बाजारोंमें उपलब्ध कर दिया था। परन्तु जनताके लिए उन्हें माल बेचना भी सम्भव नहीं रह गया था। जहाँ एक ओर पूँजीपतियोंके मुनाफे बढ़ रहे थे वहीं दूसरी ओर जनता कंगाल होती जा रही थी। मित्र-मित्र राष्ट्रोंके उद्योगपति अधिक मुनाफेकी चिन्तामें दिन प्रति दिन जोर स्पर्धाकी होड़में मजदूरोंका वेतन कम करने उनपर कामका बोझ बढ़ाने सस्ते शर्मोपर कच्चा माल खरीदने और नई मशीनोंका पता लगानेकी निरन्तर खोजमें लगे हुए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि एक तो हर राष्ट्रकी जनता को भारोंमें बंट गई एक पूँजीपति और उनके समर्थक और दूसरे इन मूल्यके विधानमें परिवर्तन चाहनेवाले मजदूर लोग।

इस औद्योगिक होड़ने राजनीतिक स्तरपर उपनिवेशोंके सिद्धे राष्ट्रोंमें नई तनातनी पैदा कर दी। हर उन्नत देश अपने-अपने उपनिवेश चाहता था और उससे अन्तरराष्ट्रीय व्यापार और उसके पश्चात् महायुद्धकी शायं बेस पड़ी। इधर राजनीतिक यह भी देख रहे थे कि पार्लियामेंटों द्वारा जो प्रजातन्त्र स्थापित हो रहा है वह वास्तवमें केवल पूँजीपतियोंका शासन ही है और प्रजा मनुष्योंमें जनशक्तके अतिरिक्त और किसी प्रकारका धाम नहीं लेती। इसीलिए मार्क्स और उनके साथियोंने इस औद्योगिक और राजनीतिक विधानके विरुद्ध आवाज उठाई और समाजवाद और साम्यवादका स्वप्न देखा जिसमें शोषण न हो। कारखाने राष्ट्र और सरकार द्वारा मुनाफेके लिये नहीं बल्कि आवश्यकताओंको पूरी करनेके लिये चलाने चाहिए और एककी बराबरीका सिद्धान्त स्वीकार किया जाय और मजदूरोंकी सरकार स्थापित हो। इसीकी प्रतिक्रियामें पूँजीवादके अत्यन्त भयंकर रूप नाजीयम और फासिजममें प्रकट हुए जिनकी जड़ें अन्धे राष्ट्रवाद और घरेलू व्यक्तिगतवादमें फैली हुई थी।

वैदिक कल्पे योरोपका यह पतन और भी भयावह था। इसी मसीही युद्धमें साम्राज्य व्यक्ति इतना व्यस्त और कारोबारी होकर रह गया था कि उसके जीवनका मुख आधार केवल धन ही रह गया था। उसके सारे सम्बन्ध प्रेम ममता दोस्ती और मित्रता मालवता और हमदर्दी सब कुछ पैसे तक ही सीमित थे। और जिनके पास धन था वे भी एक आन्तरिक हलचलमें फँसे हुए थे। धन उन्हें बाहरके साम्राज्य और मुखके सामान तो देता था परन्तु उनको आत्माका मुख और चरित्रकी प्रकृति प्रदान न करता था। इस प्रकार योरोपका घटित तो जितनी हर एक मुसीबत या भी परन्तु उसकी धारणा दुखी थी। इस उद्वेग-धुलकका घायल सबसे स्पष्ट कल्पे वर्णन (Decline of West) "पश्चिमका पतन नामक पुस्तकमें हुआ।

इसवाक्यमें अपनी पहली योरोप यात्रामें ही योरोपकी इस गम्भीर स्थितिकी परख किया था। उन्हें यह पता लग गया था कि जिस जीवनका स्वप्न वे एशियामें देखा करते थे वह भी पूराकल्पे सन्तोष जनक नहीं है। राष्ट्रवाद राजनीतिक स्वतन्त्रता तो अवश्य रिखा सक्ता है परन्तु वह संसारको मृदाभस्ममें डाले हुए है।

औद्योगिकरण मायिक संकटसे कुछ बाहर निकालनेके साथ साथ पूंजीवाद और अराजकताकी ओर से जाता है और इनसे एक ऐसा बाठावरण पैदा होता है जो मनुष्यको मानवी स्तरसे नीचे गिराकर केवल मशीनका पुर्वा या कमाने जाने पीने ऐस उड़ानेवाला एक बीज बना डालता है।

इकबालकी कविता और उनका दर्शनशास्त्र इसी दुष्ची मानवताकी पुकार है जो एक तरफ राजनैतिक पराधीनता बीमारी अधिष्ठा और पतनमें गिरी है और दूसरी ओर औद्योगिक भ्रूणतिके साथ अरिष्ट और आदिमक अशान्ति और संघर्ष फैला हुआ है। एक ओर मीतका सदाय या दूसरी ओर आत्मा और नैतिकताका कोलाहल। इसी प्रश्नको इकबालने लेनिनकी बवानी खुदाके सामने रखा है —

बहु मौन सा आरम ह कि तु जिसका है मानुष  
अधरिक्तके सुबाबंद सख्तबाने किरौबी  
अपरिबन्धके सुबाबन्द हरकाम्ना फलित्ख्यात।  
अवरिबन्धमें अहुत रोखनीए इकमी हुगर है  
सब यह है कि बेचराने हीन है यह जलभात।

उन्मुक्त परिस्थितियोंमें इकबालकी शायरी आरम्भ हुई। इकबालकी शायरीको समझनेके लिए उनके जीवन अरिष्ट और उनके मनकी नैतिक राजनैतिक और दार्शनिक परिस्थितियोंका ज्ञान भी आवश्यक है।

इकबालने “असदरे खुरी” की भूमिकामें लिखा है —

“अस्तित्वकी समस्याकी छान बीनमें मुसलमानों और हिन्दुओंके विचारारम्भ इतिहासमें एक अद्भुत समानता है और वह यह कि बिच दृष्टिकोणसे भी संकरने गीताकी टीका की है उसी दृष्टिकोणसे मुहईज्जीन इब्ने अरबी ने फुटन सरीफकी टीका की बिचने मुसलमानोंके मन अस्तित्वपर बहुत बहुर प्रभाव आसा है

यहाँ इकबालने हिन्दू अखतवार और इस्लामी लुफी मतकी समानता दिखाई है।

सूफी मतके सम्बन्धमें इकबालका यह विचार काफी दिलों तक रहा कि इस्लामने सशरको त्याग देने और व्यावहारिक जीवनके स्वानपर आध्यात्मिक जीवन बिठानेका बिरोध ही किया या परन्तु जब इस्लाम ईरानमें फैला तो बहकि आर्याई अरिष्ट आध्यात्मिक दृष्टिकोणसे इस्लामके व्यावहारिक अर्थमें इस्लामके स्वानपर स्वयं इस्लाममें इस प्रकारकी प्रवृत्तियोंको जन्म दिया। एक ओर मूलानी दर्शनशास्त्रोंका प्रभाव बड़ा और अफलातून (प्येटी) और उसके सिष्यों नौफलातुनियों (Neo-platonists) के विचार फैल रहे थे और उरीके साथ साथ पाखीव

दर्शन बुद्धदर्शन और वैदिकान्तिक अभ्यात्मवादकी मूल बलीका हासल रसीद और मामून रसीदके राजमें बयबाव तक पहुँच चुकी थी।

इस आधारपर इकबालने आरम्भमें यही विचार प्रकट किया है कि कम-से-कम इस्लामी सूफी मार्गका एक रूप जो "बहरतुल बजूर" (ब्रह्मवाद) में विश्वास करता है वहकस ही ईरानी यूनानी और भारतीय दर्शनका प्रभाव है और सूफी मतका यह रूप इस्लामके मूल दार्शनिक आधारके विरुद्ध है।

"बहरतुल बजूर" क्या है? और सूफी मत और वेदान्तके अभ्यात्मवादमें क्या समानता है? इन प्रश्नोंपर बड़ा मत भेद रहा है।

परन्तु इस्लामी सूफी मतके पक्षवाले यह मानते हैं कि इस्लाम और उसके मूल ग्रन्थ कुरानके दो रूप हैं। एक व्यावहारिक जो समस्त संसारके लिए है और जिसमें राज्य व्यवस्था और नैतिक धार्मिक तथा समाजिक उन्नति और भलाईके नियम बटाए गए हैं। इसका नाम शरीअत है और यह साधारण जनसमुहके लिए है।

परन्तु कुरानके शब्दों और वायकोंके एक आध्यात्मिक और बहरे अर्थ भी हैं जिन्हें केवल बुद्धिसे नहीं समझा जा सकता बल्कि उन तक पहुँचनेमें भक्ति और अज्ञाकी विशेष आवश्यकता होती है। यह जानकारी मस्तिष्कसे नहीं बरन मनकी मौज और प्रेम त्याग तथा एकाग्रचित्तता द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

इस्लामी सूफी मत आरम्भमें तो केवल सीधे साधे जीवन बिटानेपर जोर देता था और अपना आधार कुरान और स्वयम् हजारत मुहम्मदकी वाणी तथा जीने बलीका हजारत बलीकी बातोंको बटाता था परन्तु बीजे बर्ष बीठ जानेके बाद उसका अपना एक विस्तृत दर्शन विधान-सा बन गया और उसके सिद्धान्तोंमें शुद्धता और विचारबीभता आ गई।

उन्होंने पहला प्रश्न यह किया कि बुद्धा और मनुष्यमें क्या सम्बन्ध है और उसके उत्तरमें इस तत्व तक पहुँचे कि संसार और घाटी भौतिक वास्तविकताएँ जो घट घट विभिन्न रूपसे प्रस्तुत हैं केवल एकमात्र ब्रह्मके अस्तित्वके स्वरूप हैं। इसका आधार उन्होंने इस्लामके मूल मन्त्रसे निकाला जिसका अर्थ है, मस्काहके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं और मुहम्मद उसके भेजे हुए पयामी है। इसकी टीका सूफियोंने इस प्रकार की कि इससे संसार और भौतिकताके अस्तित्वको भंग किया गया है और इस्लाम केवल एक ऐसी परम आत्मामें विश्वास रखता है जो हजारों रूपसे प्रकट होती है। इस तरह सूफी अभ्यात्मवादकी नींव पड़ी।

सूफियोंकी बहुत-सी विचार धाराएँ हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध इम्ने अरबी नामक एक सूफी बुद्धि बीबीके विचार हैं जिन्होंने भौतिकताको घम बताया और घारे संसारकी अभ्यात्मवादी एकतापर जोर दिया। उन्होंने तत्वमसि ही की तरह इमा आत्म पर जोर दिया और कहा कि एक मात्र वास्तविकता अभ्यात्मवाद है और जाहिदी बस्तुधोंका मूल बही परमात्मा है और उस तक पहुँचनेका साधन ज्ञान



प्रशंसा की है वह है कार्यशील और कर्मरत व्यवसाय रूप। वे लिखते हैं कि मानवताके इतिहासमें श्रीहृष्यका नाम सदा सम्मान और आदरसे किया जाएगा कि इस सर्वश्रेष्ठ महापुरुषने एक अत्यन्त मममोहक रूपसे अपने राष्ट्र और जनताकी दार्शनिक परम्पराकी आलोचनाकी और इस वास्तविकताको प्रगट किया कि सभ्यता का बर्ष कार्यक्षेत्रसे पूर्व रूपसे अबकाद्य ग्रहण करना नहीं है क्योंकि कृपा और कार्य प्रवृत्तिके अनुक्रम हैं और जीवनका आधार है बल्कि त्यागका बर्ष यह है कि कार्यके परिणामसे क्या न हो।

कार्यकी बड़ है कामना और अभिलाषा। इसी कारण सूखी और सिद्ध अभिलाषाको मिटा देनेका उपरोध देने रहे हैं क्योंकि इससे दुःख और मोहका जन्म होता है।

इन्द्रबाबूने उर्दू छावरीकी इस दर्शनार्थक प्रकृतिको बिसतुल्य उलट दिया। इन्द्रबाबूने कामना और अभिलाषाको जीवनका आधार माना है और जीवनकी पहचान बताया है। जीवन बोर धान्ति का नाम नहीं। यह बोर धान्ति तो पेड़ों और पौधोंको भी प्राप्त है और उनसे कहीं अधिक धान्ति पत्थरों और मण्डक पत्र वस्तुओंको प्राप्त है। जीवन धान्ति नहीं वह तो निरन्तर पठिधील और जगत्त है। यदि मनुष्यक वातावरणमें असन्तुष्ट होने और उसमें गई कामना गई अभिलाषा और नए उत्साहके परिणाम स्वल्प पैदा होती है। इसलिए इन्द्रबाबू धान्तिको मृत्यु और कठिनी जीवनका घातक मानत है।

अतः इन्द्रबाबू बाल्यक हृदयको कामनाओंसे खाली करने और अभिलाषाओंको कुचल बालनेके स्वागपर कामना और अभिलाषाके उपासक हैं। उनको वह मनुष्य वह राष्ट्र और वह समाज पसन्द है जो गई कामनाओंके लिए ब्याप्तुल और उत्सुक हो। कामनासे कार्यका उत्साह पैदा होता है और कार्यस मनुष्य अपने विचारके अनुसार समाजको परिष्कृत करता है और जीवनको नए सन्धिमें बालता है।

इन बातोंकी अभिव्यक्तिके लिए इन्द्रबाबूने कथितार्थे भिन्न भिन्न प्रतीक दिए हैं और पुत्रने राष्ट्रोंकी गई टीका करके व्यक्त किया है। किंगी भावना या उद्देश्यकी कान और उत्साहको वे इरक (प्रेम) का नाम देने हैं। कामनाका वे कुरी (अहितक) कहत हैं और ये दोनों शब्द जनकी छावरीका मूल आधार हैं।

इन्द्रबाबू कामनाकी ब्याप्तुलताको व्यक्तित्वका आधार मानत हैं और इसी लिए वे इरकीय या धैर्यताको उचितार्थे उँचा स्वाग देते हैं। मानवको इन दान्ति अधिक सम्मान प्रदान करने हैं।

धैर्यता या इरकीयके सम्बन्धमें इन्द्रबाबूने जो बार्ने बताने हैं उनके अनुसार इरकीय भी पहले एक प्रवृत्ति या और उसको उचितार्थे सिद्धा दीक्षा देनेका नाम

और विज्ञान नहीं केवल खडा और आन्तरिक ध्यान है। जब मनुष्य अपने अस्तित्वको जो हैता है और अपने अस्तित्व और शैथिल्य के तना या अविद्याको छोड़ता है तभी वह परमात्माका मूल रूप या स्रष्टा है।

अब आध्यात्मिक वास्तविकताको पानेके लिए स्वयं अपनेको जोना आवश्यक है और अपने आपको जोनेका अर्थ यह है कि मनुष्य सबसे पूर्व अपनी कामनाओं लक्षणाओं और अभिलाषाओंको पूरी तरह बचमे कर ले। कातता और कामना ही मनुष्यकी संसारका लोभी बनायी है और उन्हीके लिए मनुष्य बीड़-भूष करता है धम करता है और मुखसे कही अधिक मुख उठाता है। इस प्रकार मनुष्यके शैथिल्य जीवनका आधार कामना ही है।

इस विचारधाराका परिणाम यह हुआ कि एशियामें साधारण रूपसे और भारतमें विशेष रूपसे कर्मसंबंधी अन्तर्गत ध्यान हट गया। शैथिल्य उन्हीके धम समझा जाने लगा। और उसका स्वाम आध्यात्मवाद और भक्तिमे से भिन्न।

भारतीय दर्शनमें तो उपनिषदों और वेदान्तकी यह परम्परा बहुत दुर्लभ थी परन्तु इन्द्रबाबुके अनुसार इस्लाममें जो अरबके कार्यकुशल राष्ट्र और व्यवहार अन्तर्गत परवान बड़ा था सुखी मतका आध्यात्मवादी रूप ईशानमें जानेके बाद आरम्भ हुआ। इसको शायद जैसे प्रसिद्ध विद्वानने कुछ ही मूलानी आध्यात्मवादका अर्थ बताया है और कुछ ईशानके परम्परा मठ और जामोंकी अन्तर्गामी प्रकृति और स्वभावका परिणाम बताया है। कुछ विद्वान उसे भारतीय दर्शनधाराके अर्थी अनुवाद द्वारा इस्लामी संसारमें पहुँचानेका प्रभाव मानते हैं। इकबाबने इसे अर्थका अर्थ बताया है।

कारण कुछ भी नहीं म हो सुखी मत एक अभिलाषा विरोधी अन्तर्गामी मतके रूपमें छारे इस्लामी देशोंमें प्रचलित हुआ। लोग तन की बुनिया और शैथिल्य-वादको छोड़कर तन की बुनियाकी ओरमें जन गए। इसका अर्थ यह प्रभाव पड़ा कि एशियामें साधारण रूपसे और भारतमें विशेष रूपसे उदात्ता प्रेम और एक दूसरेके प्रति प्रेमकी भावना जलपी और त्याग और सांघारिक मोहमे तपस्वी और तप्याधीनता-या पूरकत्व पैदा हो गया। और यही भारतीय धारणाओंकी कविताका मूल मूल बन गया।

उर्दू धारणाकी परम्पराका भी मूल आधार यही है। उर्दू कविताके अर्थ ही से अभिलाषा विरोधी और त्यागवादी विचारकी प्रभावता रही और शायद ओर इती-पर दिया जाता रहा कि जीवन विरह है और प्रियसे मिलनका एक मात्र साधन यही है कि शैथिल्यवादी मुक्ति प्राप्त की जाए और अपनी हस्तीको मिटा दिया जाए। क्योंकि कामनाहीन अभिलाषाहीन बन्धन वेतनाहीन होगा ही मुक्तिका एकमात्र साधन है।

इस परम्पराकी विरोधी प्रकृतिवादी भारतीय दर्शनमें अन्तर्गामीता और भी उदात्ताके पंथमें मिलती है और इसीलिए इकबाबने भीमद् अन्तर्गामीताके विरुद्ध रूपकी

प्रशंसा की है वह है कार्यशील और कर्मरत व्यवसाय रूप। वे सिद्धते हैं कि मानवताके इतिहासमें श्रीकृष्णका नाम सदा सम्मान और भावसे मिया जाएगा कि इस सर्वश्रेष्ठ महापुरुषने एक अत्यन्त मनमोहक रूपसे अपने राष्ट्र और जनताकी दार्शनिक परम्पराकी आलोचनाकी और इस वास्तविकताको प्रगट किया कि सन्यास का अर्थ कामसाधसे पूर्व रूपसे अवकाश ग्रहण करना नहीं है क्योंकि कृपा और कार्य प्रकृतिके अनुकूल हैं और जीवनका आधार है बकिष्ठ त्यागका अर्थ यह है कि कार्यके परिणामसे कमाव न हो।

कार्यकी बड़ है कामना और अभिलाषा। इसी कारण सूफी और सिख अभिलाषाको मिटा देनेका उपदेश देते रहे हैं क्योंकि इससे दुःख और मोहका बन्म होता है।

इन्द्रबाम्ने उर्ध्व धारणीकी इस वर्धनात्मक प्रवृत्तिको विषकृक उच्छट दिया। इन्द्रबाम्ने कामना और अभिलाषाको जीवनका आधार माना है और जीवनकी पहचान बताया है। जीवन बोर धाम्ति का नाम नहीं। यह बोर धाम्ति तो पैरों और पीछोंको भी प्राप्त है और उनसे कहीं अधिक धाम्ति पत्थरों और अचल बड़ वस्तुवांकी प्राप्त है। जीवन धाम्ति नहीं वह तो निरन्तर गतिशील और अग्रान्त है। गति मनुष्यके बाताबरनमें अक्षम्युष्ट होने और उसमें नई कामना नई अभिलाषा और नए उल्साहके परिचाम स्वरूप पैदा होती है। इसलिए इन्द्रबाक धाम्तिको मृत्यु और बतिको जीवनका बोलक मानते हैं।

अत इन्द्रबाक बरुचल हृदयको कामनाओंसे बाली करने और अभिलाषाओंको बुरचल बाम्नेके स्वातपर कामना और अभिलाषाके उपासक है। उनको वह मनुष्य वह राष्ट्र और वह समाज पश्यते हैं जो नई कामनाओंके लिए ब्याकुल और उत्सुक हो। कामनासे कार्यका उत्साह पैदा होता है और कार्यसे मनुष्य अपने विचारके अनुसार समाजको परिवर्तित करता है और जीवनको नए सधिमें बालता है।

इन बातोंकी अभिव्यक्तिके लिए इन्द्रबाम्ने कथितामें मित्र मित्र प्रतीक लिए हैं और पुराने राज्योंकी नई टोका करके व्यक्त किया है। किसी मारुर्ष या उहेस्पकी कनन और उत्साहको वे इरक (प्रेम) का नाम देते हैं। कामनाको वे खुरी (अस्तित्त्व) कहते हैं और ये दोनों राज्द उनकी धारणीका मूल आधार हैं।

इन्द्रबाक कामनाकी ब्याकुलताको व्यक्तित्त्वका आधार मानते हैं और इन्हीं-लिए वे इन्मीम या वीतानको क्रिस्ततां अँबा स्वात देते हैं। मानवको इन बोलोंसे अधिक सम्मान प्रदान करता है।

वीतान या इन्मीसके सम्बन्धमें इस्माने जो बार्ने बतार्ई है उनके अनुसार इन्मीम भी पहले एक क्रिस्ता का और उसको क्रिस्ततांकी सिधा दीधा देनेका नाम



सीमा गया था परन्तु जब वह जाने मिट्टीसे मानवका पुतला बनाया और उसमें शक्ति डालकर प्रतिष्ठित किया कि मानव अबसे मेरा उत्तराधिकारी होगा और उसको सब सबका (सर्ववत्) करे। सभी प्रतिष्ठोंने इस आज्ञाका पालन किया परन्तु इल्लीसने कहा कि हम अग्निसे बने हैं हम मिट्टीसे बने इस मानवको क्यों सम्मान दें और बुदाने इस बिड़ोहका बन्ध उसे बुनियादमें मजबूत किया वहाँ वह मानवको अन्धकारके रास्तेसे बहकानेमें लगा हुआ है। इसी इल्लीसी परमेश्वरका परिणाम यह था कि आदमको जिन्होंने बना ने अपना उत्तराधिकारी बनाया था इल्लीसने उसकी पत्नी हीवा द्वारा बहुकामा और गेहूँके धानेपर उत्पत्ताया और काम ईश्वरमें फँसाकर मानवके इस पूर्वजके मनमें आकांक्षा और बिड़ोहकी चिनवायी मढ़काकर उन्हें हीवा सहित अन्न (स्वर्भ) से निकसवाया।

इकबालने इस निस्तेही टीका इस प्रकार की है कि प्रतिष्ठे अभिलाषाहीन है। उनके मनमें केवलमान भी कामना नहीं है। इसलिए वे इल्लीस या हीवाके भी नीचे हैं क्योंकि सैतानका एक मस्तिष्क था। उसके मनमें बिड़ोह ही की नहीं परन्तु एक चिनवायी अक्षय भी और उस चिनवायीने उस कार्यका मार्ग दिखाया। यह और बात है कि उसकी कामनाएँ उसे यकृत रास्तेपर भटकाने पर्यं और उनपर अन्धारी और मस्तिष्कका कोई नियन्त्रण नहीं रहा। मानवकी पक्षी सैतानसे भी महान है कि उसके पास कामना और अभिलाषा की पूर्वी भी है जो उसे कार्यक्षेत्रमें ले जाती है और उसके साथ-साथ वह अपनी अभिलाषाओंको नियन्त्रित करनेकी शक्ति भी रखता है।

इकबाल भटकी हुई वृत्ति या अभिलाषाकी आलोचना अवश्य करती है परन्तु उसे अभिलाषाहीन होनेसे कहीं अन्धका बाधते है। शक्ति शार्दशीलता और अपूर्व अभिलाषाको इकबालने स्वान-स्वानपर आदर्शके रूपमें अनेक प्रकारसे प्रस्तुत किया है। विशेषकर विभिन्न संकेतों और प्रतीकोंके रूपमें वह अन्धकी नीचताकी आह्वाने और इनके लिये कार्यक्षेत्रमें तन मन धनकी बाजी लगानेबाजी शक्तिही दिखाते है। धाहीनको उन्होंने इसी प्रकारसे प्रतीक बनाया है कि यह पक्षी दूसरोंके विपरीत कभी बोलना नहीं बनाता और सदा धिक्कार करके जाता है जँबा उड़ता है। एक स्वानपर दाहीन कीएकी जबाब देते हुए कहता है —

जो अबूतरके जपठनेमें गया है हम नहीं

वह मजा छापद अबूतरके लहूनें भी नहीं॥

अवका असह मजा किसी नीचकी प्राप्तिमें भी इतना नहीं होता जितना कि उसकी प्राप्तिके लिये बीड़-भूप करनेमें है। जीवन-संपर्षरा मूक शल्य नहीं है। शर्म या उत्साह और लज्जा है मूल उद्देश्य नहीं है बाकी सारे उद्देश्य बहाने माष है।

इकबालने इसी प्रकृतिसे संकेतों और प्रतीकोंका एक पूरा बन्धन बुझाया है। उनकी सबसे बड़ी लक्ष्यता नहीं है कि उन्होंने पुतले चन्दोंकी नए अर्थ और

संकेत दे दिये। इसके अन्तर्गत खिरब ( बुद्धि ) खबर ( ज्ञान ) आदि अनेक शब्दोंको उन्होंने मधीन बना दिया है।

परन्तु उनका सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक "मर्ब मोमित" है। यूँ साधारण रूपसे इसका अनुबाद अर्थसा ही हुआ परन्तु इहनाउने उसे एक महा-मानवके अर्थमें किया है। ऐसे मानवमें उनके अनुसार केवल बुद्धी ही नहीं होती कामना और अभिसाया ही की ज्योति नहीं होती बल्कि वह अपनी व्यक्तिगत कामनाओंको समाजकी सामूहिक कामनाओं और अभिसायाओंसे समन्वित कर देता है।

इहनाउनेके अनुसार कामना और अभिसायाके दो रूप हैं। एक केवल व्यक्तिगत जिसमें मनुष्य अपना भला चाहता है और उसका हित समाजके हितसे टकराता है। यही खुरी या व्यक्तिगत कामनाओंका दैतानी रूप है। इसमें संसार भरके सारे हत्यारे, चोर कुंठे और मुद्र प्रेमी समाज या जाते हैं परन्तु इसका एक दूसरा रूप यह है कि व्यक्तिकी कामना समाजके हितसे न टकराए और दोनोंके लिए लाभदायक हो। कामना और अभिसायापर अगर किसी रूपसे नियन्त्रण रखा जा सकता है तो इसी तरह कि उन्हें पूर्ण रूपसे समाज हितके अधीन कर दिया जाए।

जो व्यक्ति ऐसा कर पाते हैं वे केवल स्वयं ही अमर नहीं हो जाते बल्कि अपने यूनकी गया मार्ग दिखानेवाले सिद्ध होते हैं। यहाँ इहनाउने अन्वयमबादने बहुत निकट होकर यह सोचते हैं कि राष्ट्रों और देशों ही का नहीं शायद मानवताके विभिन्न मुकोंका उत्थान पतन भी केवल भौतिक और राजनैतिक कारणों ही से नहीं होता बल्कि उनका पीछे किसी न किसी महापुरुषकी विचार शक्ति और सामूहिक कामनाकी चित्तगारी भी होती है जो पूरे राष्ट्रके मनमें कार्यक्षेत्रमें क्रूर पड़नेकी आकांक्षा देती है।

इहनाउनेके महामानवकी विभिन्न टीकारों की बर्णना है। कुछने उसपर जर्मन दार्शनिक नीत्शेके सुपरमैन (Superman) महापुरुषका प्रभाव बताया है और इहनाउनेके अस्तिम्भके निकट आपित्त कर दिया। वे आलोचक यह भूल गए कि इहनाउने अस्तिम्भके मूल आधार राष्ट्रियता और जातीयभेदको नहीं ही मानते न वे यह स्वीकार करते हैं कि धूमियामें किसी रंगवालों या किसी देशके रहनेवालोंको यह अधिकार है कि वह अपनेको अन्य देशों या राष्ट्रोंसे उच्च और उच्च भीषित करें। कुछ और आलोचकोंने कहा है कि इहनाउने अरब सूफी विज्ञान अज्जुल करीम अल-जीरीकी की पुस्तक "इस्माने कामिक" से सहायता ली है। कुछ और लोग इस आदर्शकी बड़ कुटान और बिगोप कर मौलाना जलालुद्दीन रमीकी मसलवीको बताते हैं।

सच कुछ भी हो इहनाउनेके महामानवका रूप भयातक और डरावना नहीं है। वे केवल उसकी शक्ति ही का चित्रण नहीं करने न केवल उसे नीत्शेके महापुरुषके समान मुद्र प्रिय और पून पिपासु नीति और नियमसे मुक्त दिखाते हैं बल्कि इहनाउनेका महामानव जनमोक्ष भी है वह बाधका बनी कार्यक्षेत्रमें दुष्ट और

मोह और बाधनासे मुक्त है। उसके सब काम ईश्वरके उत्तराधिकारी होनेके रूपमें हैं बिनमें उसकी अपनी व्यक्तिगत भाकाशा सम्मिश्रित नहीं है।

उसका हर काम ईश्वरके लिए है। उसका हाथ भगवानका हाथ और उसका कार्य खुदाका कार्य है और इस स्वातन्त्र्यको वह मन मारकर और संसार छोड़कर संन्यास लेकर प्राप्त नहीं करता केवल कार्यसेवा द्वारा प्राप्त करता है।

ऐसा समझना स्वभाविक ही है कि इकबालने महा पुरुषका प्रतीक चुना चाहे कहीये हो परन्तु इनकी रचनामें कृपान और इस्लामके मूल तत्वोंका ही प्रभाव है। तथापि यह भी सत्य ही है कि अनेक धर्मों और दर्शनोंकी भाँति इस्लामकी भी कई रूपसे टीका हुई है। इकबाल भी ऐसा ही मानते हैं परन्तु उनके अनुसार इस्लामका सच्चा रूप यह है जो हजरत मुहम्मद और उनके चारों उत्तराधिकारियोंके युगमें माना और उपभोगमें आया गया।

इस्लामका यह रूप इकबालके अनुसार ईदगी प्रभाव और सुखी मतके प्रचलित रूपसे भिन्न है। इस्लाम इकबालके अनुसार व्यावहारिक धर्म है जो किसी एक भाँति राष्ट्र या रंग तक सीमित नहीं। इस्लाम सम्पासका नहीं कार्यशीलताका प्रचारक है। व्यक्तिगत काम मोह और कालसा के विपरीत परिणामकी विन्यासे मुक्त होकर अपने कर्तव्यका पालन करना और संसारको त्याग देनेके स्वातन्त्र्यसे ईश्वरकी इच्छाके अनुसार मानव समाजकी भलाई और नैतिक प्रवृत्तिके उद्देश्यसे परिचालित करनेका नाम है।

इस्लामके इस रूपकी बातकारी प्राप्त करनेपर इकबालको संकीर्ण और साम्प्रदायिक कहना कठिन है। वे इस्लामको एक धर्म एक सम्प्रदाय नहीं मानते बल्कि एक ऐसी नीति और नियम मानते हैं जो सारी मानवताके लिए मुक्तिका सन्देश है। वह जीवनका एक नया विधान है। इसीलिए वे मुस्लिम और कट्टर पन्थी मोलखियोंकी कड़ी आलोचना करते हैं जो इस्लामके बाहरी रूपको महत्व देते हैं और उस जीवन विधान और नियमोंको नहीं पहचानते जिनके संकेत इन बाहरी नियमोंमें भिच्छते हैं। उनके अनुसार इस्लाम पहला धर्म है जिसने धर्मके संकीर्ण बन्धने निरुलकर एक व्यावहारिक जीवन विधानका रूप दिया। संसार त्यागके स्वातन्त्र्य संसार परिश्रमके जसाहको महत्व दिया संसारकी सारी शक्तिशाली लक्षकारकर केवल एक ईश्वरपर विश्वासका प्रचार दिया और जातिभेद, राष्ट्र भेद, रंगभेद वर्णभेद और कुलभेदको समाप्त कर सारी मानव जातिको एक स्वतन्त्र व्यवस्था कर दिया और सबको अपने अपने कार्यक्षेत्रमें अपनी महानता सिद्ध करनेके समान अवसर दिये।

एक तरह इकबालका इस्लाम बड़ा विज्ञान और प्रज्ञान जीवन-आधार है। जिस प्रकार तुलसीदासकी रामायण और मिस्टनकी पैराडाईज लॉस्ट या बेटिकी "दिव्यान कामेडी" की केवल समाप्तन धर्म या ईसाईयतकी पुस्तकें कहकर संकीर्ण

वा साम्प्रदायिक नहीं कहा जा सकता जैसी प्रकार इकबालके वर्णनको भी कौरव धार्मिक वा साम्प्रदायिक घोषित करना ठीक नहीं है। पाकिस्तान बननेपर उस देशमें यह प्रवृत्ति उभरी है कि वह इकबालको इस्लामी धारण कहकर उन्हें पाकिस्तानवा श्रेष्ठ निर्माता घोषित करने लगे हैं। इसका आधार वे इकबालकी दो एन कविताओंमें डूँडते हैं जिनमें उन्होंने हिन्दुस्तानसे मुबारक और काश्मर जैसे सभी राष्ट्रोंके मुसलमानोंको एक हो जानेका सपना रिया है या उनका वह मापण जो उन्होंने मुस्लिम लीगके अधिवेशनमें समर्पित पदर रिया वा इसकी पुष्टिमें प्रस्तुत किया जाता है। परन्तु ये प्रमाण काफ़ी नहीं हैं। इकबालने जिस पाकिस्तानकी कल्पना की थी वह हिन्दुस्तानके टुकड़े करके बनाया जानेवाला राष्ट्र नहीं था।

यहाँ यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिये कि इकबालक यहाँ महामानवकी कल्पनामें कुछ उलझने हैं। "सिखा" और "बबाके सिखा" में वे केवल ऐसे मुसलमानोंकी बबानी फरमाव कर रहे हैं जो मुसलमान वर्गोंमें बगम पागसे मुसलमान रहे जाते हैं परन्तु उनकी जलोक लक्ष्योंमें महामानवका यह रूप केवल प्रथम द्वारा मुसलमान कह जानेवालों तक सीमित नहीं है बल्कि उन सबके लिए है जो इस्लामकी जीवन स्थानके रूपमें मानते हैं। ये ब लोम है जो समाजमें परिवर्तन करते हैं और जिनका जीवन एक प्रेरणा भी है और तपस्या भी।

इन व्यक्तियोंके व्यक्तित्वको इकबालने बड़ा महत्व दिया है। एक स्थान-पर तो यहाँ तक कह दिया है कि —

जुबीको कर बुलन्द इतना कि हर लकड़ीरसे पहुँचे।

जुबा बरसे जुब पूछे बता तैरी रजा क्या है ॥

[ अपने भाग्य सम्मान और कामनाओंको इतना उच्च रखना चाहिए कि स्वयं ईश्वर मानवसे उमकी इच्छा पूछने लगे। ]

इकबालके अनुसार मानव एक मजबूर और क्षणभर बाद मिटनेवाला बुलबुला नहीं है जो मिटनेपर अपना व्यक्तित्व छो देना है बल्कि वह एक ऐसा बस्तित्व है जो अमर है। इसलिए वे मुक्तियों और मक्तोंकी तरह इस बातको नहीं मानते कि आत्मा मृत्युके बाद परमात्मामें सम्मिलित होकर अपना व्यक्तित्व छो देगी। मुक्तियोंकी एक भारी संख्याने बलुआक मिट जाने और मृत्यु या समाधिके बाद परमात्मामें इस प्रकारसे घुल-मिल जानेको अपना उद्देश्य बनाया है कि "तू मैं बन जाए और मैं तुम बन जाऊँ।"

इकबाल मानवके व्यक्तित्वकी जिनमें भी उसका व्यक्तित्वक ना जाने की कल्पना नहीं करते। सांसारिक बन्धनोंमें मुक्त हो जानेपर भी वे मानव और परमात्माके ऐसे सम्बन्धकी मानते हैं जिसमें मानवके व्यक्तित्वमें बाधा नहीं पड़ती और वह परमात्माके अत्यन्त निवृत्त और सम्मिश्रित अवस्था रहता है। ये दोनों व्यक्तित्व उनके अनुसार अल्प अल्प भी हैं और एक दूसरेसे सम्पृक्त भी।

इकबालके व्यक्तित्वबादपर बर्गसक्ति वर्तनका प्रभाव भी बताया जाता है। जिस प्रकार बर्गसक्ति रचनात्मक परिणामवाद (Creative Evolution) को एक ऐसी शक्ति बताया है जो रचनात्मक संघर्षे अपनेको संसारमें अनेक रूपमें व्यक्त करती है और उभरति तथा समाप्त कल्याण की ओर से जाती है। यही श्रुती हुई शक्ति इकबालके यहाँ "खुदी" बन जाती है और उठीकी वह व्यक्तियों और राष्ट्रोंकी उन्नतिको सब और मूळ आधार मानते हैं।

इकबाल इस शक्तिको मृत्युसे जैसा और अमर मानते हैं। छाकी नामे में उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि ममभूत व्यक्तिको तो मृत्यु कर सकता है परन्तु परम व्यक्ति की मृत्युके साथ ही दूसरे अनेक व्यक्ति जन्म लेते हैं। जालीपर एक फूलके मुरझानेसे बागकी बहार नहीं सूट जाती; अनेक फूल बिलकर उसका स्थान से लेते हैं। और इस प्रकार जीवन प्रवाह चक्का रहता है। वे आचार्यजनको नहीं मानते और उन्होंने स्पष्ट रूपसे इस विश्वासका वर्णन किया है कि जीवन-मृत्यु कभी एकके रूपमें नहीं कौटवा और हर एक मरे दूसरे और नये रूप दिखता रहता है।

मृत्युकी इकबाल जीवनका अन्त नहीं मानते केवल उसका परिवर्तित रूप मानते हैं। वह केवल घड़ीको मृत्यु कर सकती है परन्तु आदर्श और कामना और कार्यकी जलासी हुई लहरको नहीं रोक सकती। मानव मर जाता है परन्तु उनके साहस जनन कामना और उत्साह और इतक विश्वास से पूर्ण किसे कार्य संसारमें परिवर्तन करते रहते हैं। इकबालके अनुसार "मोमिन" की सच्ची पहचान ही यह है कि मृत्युका स्वागत मुस्कराते होठोंसे कर सके। मृत्यु वास्तवमें यदि किसी जीवका नाम है तो वह संघर्षे जाने जाने या बक जानेका नहीं बरिक्त मरने कामना और उत्साहको न होनेका नाम है।

इकबालने इसी प्रकार समय और स्थान दोनोंके नये रूप अपनाए हैं। वे बर्गसक्ति तरह यह मानते हैं कि स्थान केवल भौतिक वस्तु है और भौतिक वस्तुएँ सब की सब क्षणिक विश्लेषणमें ध्वस्त या एनर्जी में परिवर्तित हो सकती हैं। और समय वास्तवमें जैसी छिरी हुई एनर्जी या शक्तिका नाम है जिसने संसारमें सायब बेतनाके साब-साय ही प्रवेश किया होगा। इस तरह स्थान और समय हर अक्षर एक ही रचनात्मक शक्तिके दो रूप हैं। कहा जाता है कि जब बर्गसक्ति इकबालकी मुलाकात हुई और इकबालने उसे हजरत मुहम्मदकी वह वाली सुनाई कि खुशाने कहा है कि मैं स्वयम् अमाना या समय हूँ तो बर्गसक्ति उठक पड़ा। इस वालीपर बहुत कुछ लिखा गया है और कुछ लोगोंका विचार है कि इसका अर्थ केवल इतना ही है कि खुशाने अमानेकी बात कहनेकी इसलिये यनाही की है कि समय और अमानेकी रचना भी तो स्वयम् खुशाने ही ने की है। इकबालका समय सम्बन्धी शाय बर्गसक्ति "नस्बे करतबा" के आरम्भमें था गया है।

अन्तमें ही शाय इकबालकी कविता-रचनाके सम्बन्धमें कहना है।

इकबालके पूर्व उर्दू घायरीका बड़ा धाम बबक ही का था। उनमें मूँ तो रोमांचक होती हैं परन्तु उनकी सीमित भाषा और प्रकृत प्रभासीमें हर युगमें परिवर्तन होते जाते हैं और नैतिक और कभी-कभी दार्शनिक और राजनैतिक विषय तक उसमें घुस गये हैं। फिर भी इकबालसे पहले पूरी घायरीमें केवल यादगिरी ही एक उदाहरण मिलता है जिसने बबकको दार्शनिक खोज और गहरे सूक्ष्म विचारका माध्यम बनाया। शालिन्गने उर्दू घायरीको मस्तिष्क दिया परन्तु यह खोज करनेवाला उन्हें करनेवाला मस्तिष्क था।

१८७४ में सर सय्यद अहमद खान और उनके साथियोंने घायरीमें कोरी अन्तर्मुखी बातों या रोमांचके स्वाभाव पर राष्ट्र और समाज क्रम्यापका रंग पैदा करनेकी बात बघाई और हासी आबाद शिखी इस्माईल और कुछ दिनों बाद अकबर और बकबस्तने राष्ट्र प्रेम और भक्तिताको घायरीका विषय बनाया और मर्मोंका युग आरम्भ हुआ।

बबकोंका दार्शनिक मूल केवल सूक्ष्म मर्मों ही था और चाहे घायर सूझी हों या न हो वह सब अपनी कवितामें रसास्वादि पैदा करनेके लिए सदा सूक्ष्ममर्मके विचार ही व्यक्त करता था।

इकबालने इस परम्पराको बिलकुल उलट दिया। उन्होंने पहली सफलता तो इसमें प्राप्त की कि बर्तनको घायरीका विषय बनाया जो उनकी बहुत बड़ी देन है। उनके दर्शन सास्त्रका महत्व है परन्तु उसमें भी नहीं बड़े महत्वकी बात यह है कि वे दर्शन जैसे कठिन विषयको अपनी रसीली सजीली घायरीमें समोझे और पूरी सुन्दरता और मिठाससे समोझेमें सफलता प्राप्त कर सके। इकबाल अकेले कवि हैं जिनका अपना दर्शन है जिनके पाम प्रस्तुत करनेको एक मीठा और स्पष्ट जीवन विधान है।

इकबालने घायरी और कलाका जो उद्देश्य अपने सामने रखा था उसमें व्यक्तिगत रोमांचका स्वाग न था। वे कलाको खुरी या उत्साह और धार्यप्रम की प्रकाशको प्रकट करनेका साधन मानते हैं। वह आर्ट जो मनुष्यमें बकाबट और निराशा जमाए, उनका अनुसार आर्ट नहीं है। आर्ट और सुन्दरताकी कसौटी ही यह है कि जनस जीवनना उत्साह बड़े और धार्यके प्रति मानवको आकर्षण हो।

इस कसौटीको इकबालने स्वयं अपनी कवितामें भी बरता है। यह केवल इस कारण सम्भव हुआ कि इकबालने परम्परागत आर्ट हुई शब्द प्रभासीको नए अर्थ और नई सीमाएँ प्रदान कीं। वे बबककी परम्परागत भलीभाँति परिचित थे परन्तु उनकी सीमाओंको उन्होंने दर्शन सास्त्र तक फैला दिया। उनकी कवितामें धाराब चाँको और पैमाना का इकद अकद और इत्म (ज्ञान) जैसे माध्यम राष्ट्र भी विदित् अर्थमें हैं। इस प्रकारसे न एक ओर तो बबक की राष्ट्र प्रभासीमें काम केकर उलक

रसीलेपनको इयायम रख सके और दूसरी ओर अपने दर्शन शास्त्रके धारे विधानको इससे कविता और कलाका रूप दे सके।

इकबालकी कलाकी एक दूसरी विशेषता यह है कि उनकी रचनात्मक धर्मिता अद्वितीय है। उनकी नज़्मोंमें मछीके बेकार वा केवल आभूषण मात्र दुकड़े बहुत कम मिलेंगे। एक घेरते दूसरे तक एक ऐसा रसारमक और रचनात्मक सूत्र है जो निरन्तर बढ़ता जाता है और पूरी कविताको एक विचार-सूत्रमें बाँध लेता है।

इकबालकी कविता कला इस कारण भी बड़ी महत्वपूर्ण है कि उनकी कविताएँ सुन्दर चित्रों कल्पनाओं और संयोजकी मधुर गुँथसे मरी हुई हैं। वे एक महान कलाकारकी भाँति जीवन ज्ञानके हर विभामसे पूरी स्वतन्त्रतासे अपने किए सामग्री ल लेते हैं और कविता और कल्पनाके आधारपर बर्तन इतिहास और राजनीति जैसे-विषयोंको रसात्मक और आकर्षक बना देते हैं। इकबालकी उपमाएँ और चित्र उनके संकेत और प्रतीक सभी एक मधुर और मनमोहक वातावरणको जन्म देते हैं और उनकी नज़्मोंमें एक ऐसा बाहू पैदा कर देते हैं कि पढ़नेवाला उनमें खोया रहता है।

इकबालकी कला शब्दावलीकी नहीं बरन् उत्साहकी कला है। जो कुछ वे लिखते हैं वह नहरे विश्वास और आदर्शका परिचय होता है और ऐसा प्रतीत होता है कि वे किसी भावनासे निकल होकर कविता कर रहे हैं।

टी एच इन्कियटने घायरीकी जिन तीन आबाजोंका उल्लेख किया है उसके अनुसार इकबालकी आवाज दूसरी श्रेणीकी है जबवा इकबाल अपने आपसे स्वयं अपने व्यक्तिगत दुख-मुश्कली बात न करके पूरे राष्ट्र बल्कि कभी-कभी पूरी मानवताकी सम्बोधित करने आते हैं परन्तु उनकी घायरी विशेषकर सम्बोधन की घायरी ही है और इस प्रकारकी घायरीमें उत्साह पैदा करना आसान होता है परन्तु उस पैदा करना वास्तव कठिन होता है। इकबालकी बड़ी सफलता यही है कि वे दर्शन शास्त्रीसे कहीं बड़े घायर और कलाकार थे। उनकी घायरी मुग़ राष्ट्र और देशकालकी सीमाओंसे ऊपर उठ चुकी है। वे लौय भी जो इकबालके विचारोंसे सहमत नहीं है और उनका दर्शनशास्त्रको स्वीकार नहीं करते उनका कलाके जाने भाषा टेकते हैं।

यहाँ हमें एक प्रश्नपर और विचार करना है। इकबालने समाजके किस रूपकी कल्पना की थी और वह मानव समाजकी रचना किस रेखाओंपर करना चाहते थे। यह पहले कहा जा चुका है कि इकबाल पश्चिम और पूर्व दोनोंकी प्रवृत्तियोंके आलोचक थे। एशियामें उन्हें कार्य बुद्धलता कामना और उत्साहका अभाव दिखाई देता था जिसके कारण आध्यात्मिक और नैतिक गुणोंके होनेपर भी वह राज नैतिक और मानसिक पराधीनतामें खोया हुआ है। इसके विपरीत योरोपका जीवनना

उत्साह, बुद्धि और अभिजापानी शक्ति उसकी शक्ति प्राप्त है परन्तु वह वैज्ञानिक प्रगति और औद्योगिक उन्नतिकी दृष्टिमें आत्मा और नीति ही नहीं बल्कि मानवताको जो बैठा है। उसके पास निमनिर्मोका धुँबी और भौतिक उन्नति और सांसारिक सुखके सामान तो बरबर्सा है परन्तु उसकी आत्मा सुखी नहीं है। वह उस शान्तिसे सन्तुष्ट है जो काफ़ी और बासनासे ऊपर उठनेसे पैदा होती है। योरोपके पास 'बुद्धि' तो है परन्तु "शैतानी बुद्धि" है जो समाजिक अत्याय और ऊँच-नीचके कर्मों परबल होती है।

इकबाल ऐसे समाजका स्वप्न देखते हैं जिसमें पूर्व और पश्चिम दोनों सम्प्रदायोंका समन्वय हो सके। इसका मूक आधार एशियाकी आध्यात्मिक शक्ति मानव प्रेम और नैतिकता होनी चाहिए और इसरी ओर योरोपकी बहु शक्ति और कार्यशीलता होनी चाहिए जो नई वैज्ञानिक जेतना ही जो काम नहीं देती बल्कि उन्नतिका एक मात्र रास्ता दिखाती है। उन्हें एशियाके अन्तर्मुखीपन कार्यशीलता और उत्साहहीन समाजसे भी शृणा है और योरोपकी मानवताहीन आत्माहीन बर्बरतापूर्ण समाजसे भी। इन दोनोंका समन्वय वह इस्लामी समाजकी कल्पनामें हुई है जो समाजिक भाईचारे, श्याय और मानवकी समानताके आधारपर स्थापित किया जाय।

क्या इकबालके इस सन्देशका नए भारत कर्पके लिए कोई महत्व है? इकबालको साम्प्रदायिक कह कर उनकी शिक्षाके महत्वसे शक्ति रहना दुर्भाग्यकी ही बात है। इकबालने जिस नीरस निराशावाद और सांसारिक उन्नतिसे मुँह मोड़कर मनमें जो आनेकी प्रवृत्तिकी आलोचना की है वह आज भी भारतमें भली-भाँति प्रचलित है। भारतवर्ष जिस नए समाजका निर्माण कर रहा है उसके लिए नए मानवकी रचना आवश्यक है और यह तभी हो सकता है कि इकबालके स्वरमें स्वर मिलाकर अपने समाजम श्याय निराशावाद अन्तर्मुखीपन और दुर्बलतासे घोर संशय किया जाय।

यह बार-बार कहा गया है कि इकबालका दर्शन केवल इस्लाम पर निर्भर करता है। परन्तु जिस प्रकार स्वयं इकबालने पूर्व और पश्चिमके विद्वानों और दर्शन शास्त्रियोंसे जुन जुनकर जुन प्रहण किए हैं उसी प्रकार इकबालके दर्शनसाधन और उनकी कवितास मूक दुर्गोंको जुनकर अपनातेकी आवश्यकता है। इकबालने मर्गुहरि, स्वामी रामतीर्थ, गुरु गानक श्री रामचन्द्रजी और श्रीकृष्णका स्वान स्वातपर बड़ी प्रथमास वर्णन किया है इसी प्रकार वे ईरानके हमी योरोपक नीरुधे मार्क सेमिन मुवाकिनी नैपोलियन बर्गसाँ और इसरे विद्वानोंका भी वर्णन करते हैं।

आज इकबालके दर्शन सास्त्रस नए भारत कर्पको यह सीख सेनी चाहिए कि जीवन पणमें है और जो व्यक्ति या राष्ट्र यदि और कार्यके उत्साहमें विश्वास रखते



## २ नया शिवाला

सब कहूँ दे ब्रह्मण गर तू बुरा न माने ।  
 तेरे सनमक्योंके बुत हो गए पुराने ॥  
 अपनेसे बैर रखना तू मे बुतोंसे सीखा ।  
 जयो जबस सिखाया बाइसको भी झुबानी ॥  
 तंग भाके मैने भाखिर बैरो हरमको छोड़ा ।  
 बाइस का बास छोड़ा छोड़े तरे छुसाने ॥  
 पत्परकी मूरतोंमें सम्झता है तू झुबा है ।  
 खाके वतनका मुझको हर खर्रा बेजता है ॥

आ घरियतके पबें एक बार फिर जूठा रें ।  
 बिछड़ोंको फिर मिला बें, मनो हुई मिटा बें ॥  
 सुनी पड़ी हुई है मुहल से दिल्ली बस्ती ।  
 आ एक नया शिवासा इस बेसमें बना बें ॥  
 बुनियाके तीपोंसे ऊँचा हो अपना तीरथ ।  
 बामाने आस्मासे उसका कल्पस मिला बें ॥  
 हर मुबह उठकें गाएँ मन्तर बह मीठे मीठे ।  
 सारे पुजारियोंको मय पीत की पिसा बें ॥  
 शक्ति भी शान्ति भी भक्तोंके गीतमें है ।  
 घरतीके वासियोंकी मुबती प्रीतमें है ॥

## २. नया विद्यालया

ए ब्राह्मण! यदि तू बुरा न माने तो एक सच बात कह दू कि तू जिन मूर्तियोंको पूजता है वे अब बहुत पुरानी हो गई हैं। तूने इन मूर्तियोंसे यह सीखा है कि अपनोंसे दुस्मनी करे और इसी प्रकार मुस्लाने खुदासे केवल यही सीखा है कि अपनोंसे रुझाई-झगड़ा किया जाए। मैंने सग आकर मस्जिद और मन्दिर दोनोंको त्याग दिया है मुस्लानेके उपदेश और तरी बचाएँ सभी छोड़ दी हैं। तू समझता है कि खुदा परम्परकी मूर्तियोंमें है, मेरे लिए तो अपने पेशकी मिट्टीका हर अणु देवता ही जान पड़ता है।

भा, हम आपसमें मिलाकर एक हो जाएँ और एक दूसरेको रीर समझना छोड़ दें जो फूटसे बिछुड़ गए हैं उन्हें फिर मिला लें और अपने को दो अलग अलग अस्तित्व समझने वालोंको एक बना दें। एक जमानेस मनकी दुनियामें सम्नाटा छाया है इस देशमें अब एक नया मन्दिर बनानेका समय आ गया है। यह मन्दिर दुनियाके सारे तीर्थोंसे ऊँचा हो और उसका कल्प आकाश तक पहुँचता हो। हर प्रजातको उठकर उसके पुजारी भीठे मन्त्र पढ़ें और सब प्रेम और प्रीतिकी मदिरा पिएँ। भक्तोंके गीतमें शान्ति भी है और शक्ति भी। धरतीके वासियोंकी मुक्ति प्रीतिमें है।



## ३ खिञ्जर रात

बर तर मख अम्बेवाए सुबो खयाँ है खिम्बगी ।  
 है कमी जाँ और कमी तस्तीमे जाँ है खिम्बगी ॥  
 तू इसे पैमानए इमरोखो फर्वासे न नाप ।  
 काबिबाँ पैहम रयाँ हर बम कबाँ है खिम्बगी ॥  
 अपनी बुनिया आप पैदा कर अयर खिम्बोंमें है ।  
 सिरें आबम है कमीरे कुन फकाँ है खिम्बगी ॥  
 खिम्बगालीकी |हकीकत कोहकनके बिलसे पूछ ।  
 जूए शीरो तीनाम्बो संगे गराँ ह खिम्बगी ॥  
 बाबपोमें घुटके रह जास्ती है एक जूए कम भाब ।  
 और आबापीमें बहरे बेकराँ है खिम्बगी ॥  
 आशकारा है यह अपनी कुरबते तसबीरसे ।  
 गर्ब एक मिट्टीके पैकरमें गिहाँ है खिम्बपो ॥  
 कुलजमें हस्तीसे तू उभरा है मानिम्ब हुयाब ।  
 इस खयाँ खाने में तरा इन्तहाँ है खिम्बगी ।  
 खाम है अब तक तो है मिट्टीका एक अंबार तू ।  
 पुछता हो जाए है तो है शमसीरे बे जिन्हार तू ॥

[“किय पढ़” इन्द्रबाबकी कम्बी मम्मोंनो हें जिसमें कवि पैगम्ब किय से जीवन और संसारकी स्थितिकें सम्बन्धमें प्रश्न करता हें। किय हृदय मुहम्मदसे बहुत पढ़के हो गए से और उनके बारेमें विश्वास किया जाता कि उनकी रूही दुनिया तक मृत्यु नहीं और वह अब भी भटके हुए लोगोंको मार्ग दिखाते हैं—

मीके इन्द्रबाबकी इस कवितासे केवल वे भाग विभे जाते हैं जिनमें कवि प्रश्न पर किय जीवन आधार और राजनता तथा गणनबाबपर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। इन बाणोंकी पढ़ते समय याद रखना चाहिए कि यह कविता उम समय लिखी गई थी जब कम्में समाजवाद पूरी तरह दुर्भ भी न हुआ था और उसकी चर्चा जनताघारदकी पत्रानपर आजकी तरह न थी।]

जीवन श्म और हानिस कहीं ऊँचा ह। कभी प्राण है थी कभी प्राणोंका वसिदान। तू इसको आज और कलक प्याले द्वारा नाम क्योंकि जिन्दगी कभी समाप्त होनेवाली नहीं और हर क्षण आग बढ़ती रहती है। यदि अपनेको जीवित कहता है तो अपनी दुनिया आप ही पैदा कर क्योंकि जिन्दगी मानव पिता (आदम) का भेद। और यही वह धर्मकारिक मन्त्र ह जिसमें ईश्वरने संसारकी रचना की जीवनकी बान्ताबिकता तो फरहादके दिलस पूछनी चाहिए जिनमें अपने प्रिय पीरीको प्राप्त करनेके लिए ऊँचे-ऊँचे पहाड़को काटकर बूझकर नहर बनाई थी। जीवन भी इसी प्रकारक कठोर परियमका नाम। जिसके प्रतीक नहर विपलास पहाड़ और फरहादका कुल्हाड़ा हैं गुलामीमें जीवनकी लालसा भटकर एक छापी-सी सहरकी भाँति रा जाती है और स्वतन्त्रतामें यहीं नहर एक महासागर बन जाती है। या जीवन साससा अभिलाषा केवल अपनी विजय पानीकी गकितस ध्यक होगी है यद्यपि यह जीवन धारा एक मानवक रूपमें एक मिट्टीक पुनलस छिपी रहती है। तू जीवनके महासागरमें एक घुसबलका भाँति उभरा ह हर क्षण पाटा देनवाले म्यान तेरी इस जिन्दगीकी परीक्षाए हें। जयतन तेरे अन्दर जीवन-अभिलाषा कभी है उम समय तक ता कबल मिट्टीक मृति ममान है, परन्तु यदि यह अभिलाषा पक्की हा जाए तो एक एसं तलवारकी भाँति हो जाएगी जिसका बार मचुक होता है।

### ३ खिजर रात

बार तर भरा भयेषाए सुबो जयाँ है खिम्बगी ।  
 है कभी जाँ और कभी तस्सीमे जाँ है खिम्बगी ॥  
 तू इसे पैमानए इमरोको फरसि म माप ।  
 आविर्दाँ पैहम रबी हर बम बबी है खिम्बगी ॥  
 अपनी बुनिया आप पैदा कर अगर खिम्बोंमें है ।  
 सिरें आबम है खमीरे कुम फकी है खिम्बगी ॥  
 खिम्बगानीकी हुकीकत कोहकमने बिकसे पूछ ।  
 जूए धीरो तीभाबी संये गरी ह खिम्बगी ॥  
 बम्बगीमें घुटके रह जाती है एक जूए कम आब ।  
 और आठाबीमें बहरे बेकराँ है खिम्बगी ॥  
 भावाकारा है यह अपनी कुरबते तसबीरसे ।  
 गवें एक मिटटीके पैकरमें मिर्ही है खिम्बगी ॥  
 कुकजमें हस्तीसे तू खभरा है मानिख हुबाब ।  
 इस जयाँ खामें में तेरा इम्तहाँ है खिम्बगी ।  
 खाम है अब तक तो है मिटटीका एक अंवार तू ।  
 पुछा हो जाए है तो है खमशीरे बे जिम्हार तू ॥

## ३ शिखर राह

[“शिखर राह” इकवाचकी सम्मी नज्मोंमें है जिसमें कवि पैगम्बर किख से जीवन और संसारकी स्थितिके सम्बन्धमें प्रबल करता है। किख हजरत मुहम्मदसे बहुत पहले हो गए थे और उनके बारेमें बिस्वास किया जाता है कि उनकी रूखी दुनिया तक मृत्यु नहीं और वह सब भी भटके हुए लोगोंको मार्ग दिखाते हैं—

नीचे इकवाचकी इस कवितासे केवल वे भाग दिने जाते हैं जिनमें कविके प्रबल पर किख जीवन आसार और राजसत्ता तथा अनर्थबन्धपर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। इन अंशोंको पढ़ते समय याद रखना चाहिए कि यह कविता छठ छमय लिपी गई थी जब कसमें समाजवाद पूरी तरह पुष्ट भी न हुआ था और उसकी चर्चा जनसाधारणकी जवानपर आजकी तरह न थी।]

जीवन लाभ और हानिसे कहीं ऊँचा है। कभी प्राण है और कभी प्राणोंका बसिदान। तू इसको आज और कलके प्याले द्वारा न माप क्योंकि जिन्दगी कभी समाप्त होमेवासी नहीं और हर क्षण आगे बढ़ती रहती है। यदि अपनेको जीवित कहता है तो अपनी दुनिया आप ही पैदा कर क्योंकि जिन्दगी मानव पिता (आवम) का भेद है और यही वह चमत्कारिक मात्र है जिससे ईश्वरन ससारकी रचना की। जीवनकी वास्तविकता तो ऊँचाईके दिससे पूछनी चाहिए जिसने अपनी प्रिय क्षीरीको प्राप्त करनेके लिए ऊँचे-ऊँचे पहाड़ोंको काटकर दूधकी नहर बनाई थी। जीवन भी इसी प्रकारक कठोर परिश्रमका नाम है जिसक प्रतीक नहर विशाल पहाड़ और ऊँचाईका कुल्हाड़ा है। गुलामीमें जीवमकी लालसा घटकर एक छोटी-सी सहरकी भाँति रह जाती है और स्वतंत्रतामें यही सहर एक महासागर बन जाती है। यह जीवन लालसा अभिलाषा केवल अपनी विजय पानीकी क्षमिन्स व्यक्त होती है यद्यपि यह जीवन धारा एक मानवके रूपमें एक मिट्टीक पुतलमें छिपी रहती है। तू जीवनके महासागरमें एक बुलबुलेकी भाँति उभरा है। हर क्षण घाटा बनेबास स्थान लेती इस जिन्दगीकी परीक्षाएँ हैं। जयतक तर अन्दर जीवन-अभिलाषा बचती है उस समय तक तो कबल मिट्टीकी मूर्ति समान है परंतु यदि यह अभिलाषा पक्की हो जाए तो एक एसी तलवारकी भाँति हो जाएगी जिसका बार अचूक होता है।

हूँ सबारुतके लिए जिस दिक्में मरनेकी लड़प ।  
 पहले-अपने पैकरे झाकीमें जाँ पैदा करे ॥  
 फूँक डाले यह खमीनो आत्मामे मुस्तधार ॥  
 और जाकस्तरसे आप अपना जहाँ पैदा करे ॥  
 जिन्बगी को हूँजते पिन्हीं को करबे जायकार ।  
 ता यह बिगारो क्ररोपे जाभिर्दा पैदा करे ॥  
 झाके मझरिऊ पर चमक जाए मिसाले आक्रसाब ।  
 ता अबच्छा फिर ज्ही जाले, गर्रा पैदा करे ॥  
 सूप गरबूँ मात्स्य सखगीरका भेजे सझीर ।  
 रातके तारोंमें अपने राखदाँ पैदा करे ॥  
 यह धड़ी महशारकी है तू भरसए महशारमें है ।  
 पेश कर पाक्रिऊ अगर कोई अमल बपतरमें है ॥

---

जो सच्चाईके लिए जान वेनकी छालसा रखता हो उसे चाहिए कि अपन मिटटीक बने धरीरमें पहले प्राण (शक्ति) पैदा करे। इस मांगकी दुनिया का (जो उसे पूर्वजोंसे मिली है) फूँक डाले और इस दुनियाकी राखसे अपने लिए नए ससारकी रचना करे। जीवनकी छिपी हुई शक्तिको व्यक्त कर दे ताकि इस चिनगारीसे एसी रोशनी पैदा हो जो अमर हो। पूर्वकी दुनियापर सूरजकी भाँति चमक जाए ताकि ईरानके प्रसिद्ध बदर्शाकी घरती फिरसे पुनने युगकी तरह लाख और कीमती पत्थर पैदा करने लगे। आसमान तक अपनी आवाज और फरयादके दूतको भेज और रातके तारोंको भी अपना मित्र बना ले। यह समय प्रणयके बाद अपने जीवनका हिसाब देनेका है यदि तैरे पास कार्यका अर्थ हो तो प्रस्तुत कर।

---



४. सततनत

आ बताऊं तुझको रम्ये आयाए इन्मस मुलूक ।  
 सस्तनत मङ्गलामें शास्त्रिकी है एक चाबूगरी ॥  
 क्याबसे खेदार होता है खरा मेहकूम भगर ।  
 फिर मुला बेती है उसको हुनमरीकी साहिरी ॥  
 चाबुए महमूबकी तासीर से जदमे भयाउ ।  
 बेखती है हस्फए गरबनमें साजे बिसबरी ॥  
 खूने इसराईल आजाता है आखिर जोस में ।  
 लौक बेता है कोई मूसा तिलिस्मे सामरी ॥  
 सरबरी खेबा क्रकत उस जाते बे हुमता को है ।  
 हुनमरी है एक वहीं बाजो बुताने आखरी ॥१॥

है वही साजे कुहन मगरिकका जमहूरी निखाम ।  
 जिसके पबोंमें महीं घर भज नबाए क़ैसरी ।  
 बेप इस्तब्बाब जमहूरी क़बामें पाए कोब ।  
 तू समझता है यह माखापी की है नीलम परी ॥  
 मजसिसे आईनो इस्माहो रियायातो हङ्क ।  
 तिलिस्मे मगरिकमें मजे भीठे असर टबाब माबरी ॥  
 गरमिए गुक़तारे माखाएँ मजसिस भल भनी ।  
 यह भी एक सरमाया बारी की है, जगे खरगरी ।  
 इस सराबे रंगों बू को गुलसिता समझा है तू ।  
 माह ए नाबा क्रकतको आदायी समझा है तू ॥२॥

## B. राज्य

खिय कहते हैं कि आ तुझको वह भेद बताऊँ जो खुदाने कुरान में ' इन्नल मुल्क ' वाली आयतमें व्यक्त किया है । इस आयतका अर्थ यह है कि जब कोई नया राज्य स्थापित होता है तो नए राजा पहलेके सम्मानित लोगोंको जलील करते हैं और नयोंको सम्मान देकर मिला लेते हैं और जमीनपर उबल-पुबल पदा करते हैं राजसत्ता कबल शक्तिशाली राष्ट्रोंकी जादूगरी ही है । अगर कभी प्रजा राजाकी इस जादूगरीको समझने लगती है और नींदसे जाग जाती है तो सत्ताधारी फिर उस किसी न किसी प्रकारसे सुला देते हैं । सत्ताधारी ( मेहमूद बादशाह ) ने जादू से मुसाम ( महमूदके प्रिय गुलाम अयाजकी भाँति ) गरदनकी जजीर और लौक को भी अभूषण समझने लगते हैं । परन्तु एक न एक दिन यह भ्रम उसी प्रकार टूट जाता है जैसे मिथमें फिरऔनके विरुद्ध ( जो कि अपनको खुदा कहसकाता था । हजरत मुसा की क्रोम का धूम जोशमें आया और फिर औन की तरह सत्ताधारी तस्तेसे उतारकर फेंक दिए जाते हैं और यह सिद्ध हो जाता है कि सत्ता केवल एक खुदा की है और घोष सब उन मूर्तियोंकी भाँति हैं जिन्हें हजरत इब्राहीमके बाप अजाब बनाया करते थे ॥१॥

पश्चिममें जो राजसत्ता गणतन्त्रके नामसे प्रसिद्ध है वह भी वास्तव में एसा बाजा है जिसमें बादशाही के ही स्वर भरे हैं । जुल्म और बबरता ही का राक्षस है जो आज्ञादीकी नीरमपरीका सुन्दर रूप धारण करके उछल-बूद दिखा रहा है । लोपत्तमा जनहित सुधारकी बातें और सबिधानके अधिकारोंकी बातें बस ऐसी मोठी ओपधियोंकी भाँति हैं जिनका उद्देश्य कबल नींद साना और सुपाना ही होता है । लोक समामें जो जोर-शोरके भाषण हाथ हिसल-हिसलकर होते हैं, वह कबल पूंजीपतियोंके एक तमागसे अधिक कुछ नहीं है । ऐ मूर्खें तू इन चिजों और सुगन्धोंके भ्रमको पुप्पवाटिका समझ बैठा है । तेरी समझपर दुख होता है कि हाथ सुने पिजरे ही को भ्रममें अपना घोंसला मान लिया है ॥२॥

## ५. साकी नामा

हुमा खेमा खन कारवाने बहार । हरम बन गया बामने कोहसार ॥  
 मुक्तो नरगिसो सीसलो नस्तरन । सहीबे भखस साका खनी कफ़न ॥  
 वहाँ छुप गया परबए रगमें । सहुकी है गरबिशा रगे संगमें ॥  
 क्रिया नौली-नौली हबामें सुवर । ठहरते महीं आशर्यामें तयूर ॥  
 वह नुए कुहिस्ताँ जखकती हुई । मटकती लखकती सरकती हुई ।  
 जछलती फिसलती सम्भसती हुई । बड़े पेख खाकर निकलती हुई ॥  
 दके खब तो सिल भीर बेती है यह । पहाड़ोंके बिस भीर बती है यह ॥  
 खरा बेख एक साक्रिए साका फाम । सुनाती है यह सिम्बमी का पयाम ॥  
 पिना बे मुझे वह मए परबा सोख । कि आती नहीं क्रस्से गुल रोख-रोख ॥  
 वह मय जिससे रौशन खमीरे हमल । वह मय जिससे है मस्तीए काएनाल ॥  
 वह मय जिससे है सौखो साखे भजल । वह मय जिससे खुस्ता है राखे भखस  
 उठा साक्रिया परबा इस राखसे ।  
 लड़ा बे ममोले को दाहबाय से ॥१॥



बमाबम रवां ह यमे तिनबगी । हर एक शयसे पैबा रमे बिदगी ॥  
 इसीसे हुए है बबमकी नमूब । कि शोलेमें पोखीबा है मौजे बूब ॥  
 गरां गरबि ह सुहबते भाबो पिल । खुश आई जसे मेहनते भाबो पिल ॥  
 यह साबित भी ह और सम्पार भी । अमासिर के फंभोंसे बेजार भी ॥  
 यह वहबत ह कसरतमें हर बम असीर । मगर हर कहीं बेचगुं बे नखीर ॥  
 यह आरुन यह बुतखानए प्रस जहात । इसीने तराशा है यह सोमनाथ ॥  
 पसम्ब उसको तकरार की बू नहीं । कि तू में नहीं और मैं तू नहीं ॥  
 मनोतीसे है अंजुमन आकरी । मगर ऐन मेहफ्रिसमें बिसबत नशी ॥  
 बमक जसकी बिबलीमें तारे में है । यह चाँदीमें सोनेमें पारे में है ॥  
 इसीके ब्याबां इसीके बबूल । इसीके हे कौटे इसीके हैं फूल ॥  
 कहीं इसकी ताकतसे कुहसार बूर । कहीं इसके फरबेमें निबरोसो हूर ॥  
 कहीं बुरा शाहीम सीमाब रग । सूरसे चकोरोंके आकूबा बंग ॥

कबूतर कहीं माझ्याने से बूर ।

फड़कता हुआ जालमें भासबूर ॥२॥

जीवन-धारा हर क्षण चल रही है और हर वस्तुसे जीवनकी गति व्यक्त होती है, जैसे हर शोलमें धुएँकी लहर भी छिपी रहती है इसी प्रकारसे भौतिक वस्तुओंमें बल्कि हर शरीरमें यही मौजूद है। इस जीवन धारा (धुदी) पर कीचड़ और पानीका यह प्रतिबन्ध भारी है परन्तु उस यही प्रतिबन्ध अच्छा लगा है। यह धारा ठहरी हुई भी लगती है और हरदम गतिमान भी दिखाई पड़ती है और भौतिक वस्तुओंमें घिरे होनपर भी भौतिकवादके पिंजरेसे असन्तुष्ट भी है। यह एक हाकर भी अपनेको हजारों और अनेक रूपोंमें आहिर करती है परन्तु हर स्थान पर अद्वितीय और सर्वश्रेष्ठ रहती है। यह ससार जो एक ही दिशाओंके मूर्ति स्थान की शक्ति है उसीने इन भौतिक मूर्तियोंकी रचना की है। संसार शक्तिको अपनेको बार-बार दुहराना पसन्द नहीं और वह (आकाशमनके स्थान) हर बार नई वस्तुएँ और आत्माएँ सामन लाती है और हर व्यक्ति दूसरसे विभिन्न होता है। व्यक्ति और मैं और तू की भावनासे ही ससारकी यह सभा सजी है परन्तु सभाके बीचमें भी यह शक्ति सबसे अलग रहती है। इसकी अनेक बिजलीके तारेमें है यह चाँदीमें सोनेमें और पारेमें हैं। इसीने जगल बनाए हैं इसीने बबूल इसीके काँटे और फूल हैं। कहीं इसकी शक्तिसे पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं और कहीं सर्वश्रेष्ठ प्ररिक्ता जिज्ञास और हूरे भी इसकी शक्ति-आलमें फँसी है। कहीं यह पुरा (वाजके नर बच्चे) को दाहीन (दयेन-वाज) बनाता है और उसके पंजोंको शिबारके धूनसे रँगता है। कहीं कबूतर अपने पोंससे दर जासमें ब्याकुरु और तड़पता हुआ दिखाई देता है ॥२॥

क्रमेण नगर है सुकूनो सिखात । तड़पता है हर खर्राए काएनात ।  
 ठहरता नहीं कारखाने बुजुद । कि हर सहसा है ताका खाने बुजुद  
 समझता है तू राख है खिन्वगी । प्रकृत खीरु परवाश है खिन्वगी ॥  
 बहुत जसने बेबे हैं पस्तो बलम्ब । सफ़र जसको खमिससे बड़कर पसम्ब ।  
 सफ़र खिन्वगीके लिए बर्गोसाख । सफ़र है हृणीकृत हृतर है मजाख ॥  
 उससकर सुसजामेमें लज्जत इसे । तड़पने फड़कनेमें राहत इसे ॥  
 हुआ जब इसे सामना मौतका । कठिन था बड़ा धामना मौतका ॥  
 जतर कर जहाने मकाफ़ातमें । रही खिन्वगी मौतकी धातमें ॥  
 मखाके हुई से बनी खीर खीर । उठी बइसो कोहसारसे प्रीर खीर ॥  
 गुल इस शाखसे टूटते भी रहे । इसी शाखसे फूटते भी रहे ।  
 समझते हैं नाबाँ इसे बे सबात । उभरता है मिट मिटके मकसे हयात ॥  
 बड़ी तेज खीर खीर बड़ी जूद रस । मखलसे मखद तक रमे यक नप्रस ॥

समाना कि खरीरे मय्याम है ।

बनों के जकट फेरका नाम है ॥३॥

वास्तवमें ध्यान्ति केवल भ्रम है, तड़पना ही जीवनका भेद है और विश्वका हर जर्न (अणु) तड़पता है। जीवनका काफ़िला ठहरता ही है और हर क्षण जीवन अपनी नई क्षान और दृष्य विद्याता है। समझता है कि जीवन एक भेद है—नहीं—वल्कि जीवन कवल उड़ानका स्साह है और कुछ नहीं। उसने बहुत ऊँच-नीच दखी है। उसे ठहरनेसे धिक यात्रा और गति ही पसन्द है। ज़िन्दगीकी गति ही सारा साज्मान है। असली सफ़र (गति) ही ह् ध्यान्ति भ्रम है। उसे उरभकर उरभनेमें मन्ना मिरुता है और पड़पने-फडकनेमें मानन्द। जब उसे मृत्युका नामना हुआ और मृत्युको धामनेका कठिन कार्य आ पड़ा और दोनों इस निपाके कार्य क्षेत्रमें उतरकर एक दूसरकी धातमें रहीं तो ज़िन्दगी दो े जाने (समूहका रूप धारण) की शक्तिसे जोड़ा-जोड़ा बनकर मैदान और पहाड़ोंसे समूहके रूपमें क़ौन बन बनकर उठी। इस धाखासे रू तो टूटते रहे, परन्तु उसीक साथ साथ नए फूल बन भी लेते रहे। रू ही जीवनको मर्त्य और विनाशी समझते हैं, बरन् ज़िन्दगीका रूप तो मट मिटकर और भी उभरता है। यह जीवन शक्ति बड़ी तीव्र गतिकी है। और हर स्थानपर धीम्र पहुँचती है। ससारके जन्मसे उसक अन्त होने तकका फ़ासला उसक लिए एक साँसमें पूरा हो जाता है। जमाना जो क दिनोंकी ज़ोर-सा है दर असल साँसोंके जाने-जान ही का नाम है ॥३॥



यह मौजे नफ़्त क्या है तलवार है । झुबी क्या है तलवार की धार है ।  
 झुबी क्या है राखे बुलने ह्यस्त । झुबी क्या है बेदारिए काएनात ॥  
 झुबी जलवा बबमस्तो खिसफ्त पसन्द । समन्दर है एक घूब पानीमें बन्द ॥  
 मँघरे उजालेमें है ताबनाक । मनोतौ में पेदा मनोतौसे पाक ॥  
 अखल उसके पीछे अबद सामने । न हूब उसके पीछे न हूब सामने ॥  
 शमानेके बरयामें बहूतो हुई । सितम उसकी मौजोंबे सहसो हुई ॥  
 तजस्तुसकी राहें बबस्तो हुई । बमाबम निपाहें बबस्तो हुई ॥  
 चुबक उसके हाथोंमें संगे गरी । पहाड़ उसकी खबसे रेगे रबी ॥  
 सफ़र उसका भाषाओ आगाव है । यही उसकी तजबीमका राख है ॥  
 किरम चाबमें है शरर संप में । यह बेरंग है बूबकर रगमें ॥  
 इसे बास्ता क्या कमो बेश से । मशेबो फ़राओ पसो पेश से ॥  
 अखससे है यह कशानकदामें असौर । हुई फ़ाके आबममें घूरत पखौर ॥

झुबीका नशोमन तारे बिसमें है ।

फ़सक जिस तरह मौबके तिसमें है ॥४॥

साँसोंकी यह सहर तसवारकी भाँति है और खुदी इसकी धार । खुदी जीवनके मन्दरका भेद है, यही विश्वके जागरणकी प्रतीक है । खुदी जाहिर रूपमें व्यक्त होकर मस्त है परन्तु उसकी मिसाल उस समुद्रकी भाँति है, जिसकी सारी शक्ति एक बूँद पानीमें समा गई हो । भेधेरे उजासेमें ज्यादामान है । व्यक्तियों ही द्वारा व्यक्त होती है फिर भी व्यक्तियोंके बाहरी रूपसे मुक्त है । उसकी कोई सीमा, कोई समय नहीं है । सप्ताहका अन्त-दिन उसके पीछे है और अन्तिम दिन उसके आगे । जमानेकी नदीमें बहती और उसकी सहरोंके बपेड़े धाती नए-नए रूप धरती और पेटरे बदसती और राजके नए रूप धारण करती खली जाती है । उसके सामने सारी पत्थर हलक हैं और उसकी चोटके आगे पहाड़ रखे ज़रोंकी भाँति हैं । गति और यात्रा ही उसका मारम्भ और अन्त है और यही उसके अमर होनेका भेद है । यह चन्द्रमा में किरण बतकर और पत्थरमें चिनगारी बनकर रहती है । और व्यक्त रूप धारण करके भी वह इन वस्तुओंका रंग नहीं अपनाती-रंगमें टूटकर भी उससे मुक्त रहती है । इसे भौतिक मामलोंसे कोई मतलब नहीं । उसे न कामका भय है न अशिक्षका सापस । वह ऊँचाई-नीचाई मोड़-नेचसे नहीं भबरती । यह जन्म ही से ब्याकृष्टतामें घिरी है और मानव रूपमें व्यक्त हो गई है । खुदीका स्थान ठरे मनमें है परन्तु वह उसमें सीमित नहीं । जैसे आसमानका प्रतिबिम्ब आँसोंके लिए पड़ता है परन्तु आकाश उसमें सीमित नहीं होता ॥५॥

सुधीके निगहबाको हे चहरे नाब । बह-नाँ जिससे जाती रहे उसकी भाब ॥  
 बही नाँ है उसके लिए अजमन्ब । रहे जिससे बुनियामें गर्जन बुल्ब ॥  
 क्रूरक्रान्ते मेहमूबसे बर गुबर । सुधीको निगह रब अयाखी न कर ॥  
 बही सखबा है साएके एहतराम । कि हो जिससे हर सखबा तुझपर हराम ॥  
 यह आसम यह हंगामाए रँगो सीत । यह आत्म कि है खेरे फनमि मौत ॥  
 यह आत्म यह बुतबानाए अशमोगोश । अहां सिम्बगी है प्रकृत सुबोनोश ॥  
 सुधीकी यह है मजिसे अम्बली । मुसाक्रिद यह तेरा मशोम नहीं ॥  
 तिरी भाग इस चाकवासे नहीं । जहाँ तुझसे है तू जहाँ से नहीं ॥  
 बड़े जा यह कोहे परी तोड़कर । तिकिस्मे खमानो मकाँ तोड़कर ॥  
 सुधी बोरे मौसा जहाँ उसका सेब । खमीँ उसकी सेब-आस्माँ उसका सेब ॥  
 जहाँ और भी हैं अभी बे मुमुब । कि खाली नहीं है खमीरे बुजुब ॥  
 हर एक मुस्तखर तेरी यमघारका । तिरी खोक्विये फिकरो किरबार का ॥  
 यह है मक्तबे गरबिमे रोखगार । कि तेरी सुधी तुझ पे हो आशकार ॥  
 तु है क्रान्तहे आत्ममे सुधी जिसत । तुझे क्या बताऊँ तिरी सरनबिस्त ॥  
 हकीकत पे है जामाए हर्फ तंग । हकीकत है आईना गुफ्तार बंग ॥  
 क्रूरखाँ है सीनेमें शमए मकृत । मपर तामे गुफ्तार कहती है बस ॥

“अगर एक सरे मूए बर तर परम

क्रूरछे तजस्का बिसोखब परम” ॥५॥

खुदीके रक्षकने लिए वह भद्र विप है जिसस सम्मान जाता हा । उसके लिए वही रोटी राजी अच्छी है जिसस दुनियामें सर ऊँचा रह, बान्साहोंकी भी धानस प्रभावित न हा । आत्म-सम्मानका देख और गुलामी न कर । बबल वही सजदा मानवक योम्य है जिसस हर अय सजदा उसपर हराम हो जाता हो । यह संसार जो रंग और सुरकी दुनिया ह और जिसपर मृत्युका राज है । यह ससार जो अख कानका बनाया हुआ एक मूर्ति-स्थल समान है और जहाँ जीवन बबल खाने और पीनेका नाम है यह खुदीकी पहली ही मजिल है और ऐ यात्री ! यह तेरा घर नहीं है । तेरी आत्माकी चिनगारी इस ससारकी मिट्टीकी नहीं है । तू इस ससारके लिए नहीं बल्कि ससार तर लिए बना है । बड़े जा यह भारी पहाड़ काटकर यह जमानका जादू यह समयका मायाजास छोड़ दे । खुदी खुदाके घरकी भाति है और ससार उसका दिवार है । घरती-आकास उसके दिवार है । अभी और भी दुनियाएँ ऐसी हैं जो प्रगट नहीं हुई हैं । हर एक तेरे आक्रमणका प्रतीक्षक है तेरी कम्पना और कायकुशलताका प्रतीक्षक है । संसार अज्ञाना उद्देश्य ही यह है कि सरी खुदीकी शक्ति तरे ऊपर खुले । तू तो इस अच्छाई-बुराई की दुनियाका विजयी है । भला तुझे तरी किस्मतका हास क्या बताऊँ । बास्तविकता दार्थोंके बपड़ोंमें पूरी तरह नहीं समाती । बास्तविकता बपण है और दार्थ उसक लिए जग या धर्म्य की भाति है । मरे सीनमें सौमकी धमा जल रही है परन्तु दार्थ शक्ति और बास्तमकी शक्ति कहती है कि समाप्त करो कि "अब अगर इस स्थानसे एक पर भी आगे मारोग तो सच्चाई और ईश्वरत्व की ज्योतिसे पर जल जाएम" ॥५॥\*

\* यह तेरे हृदयके एक प्यरमी घायरम लिपा है यह मेभूराजका प्रयोग है । मेभूराज हजरत मुहम्मदके जीवनकी एक महत्वपूर्ण घटना है । यह घटना हम प्रकार है कि एक रातको जिवील अरिस्त जो भगवानक सबसे अधिक निवट रहनेवाला है आकर हजरत मुहम्मदके कहा कि भगवान तुमको शिकनके लिए बुलाने है । हजरत मुहम्मद जिवीलक साथ हा लिए जिवीलने हजरत मुहम्मदको सब आसमागोंकी संर करवाई । अब वह खुदाके स्थानके बाड़ी दूर रह गया तो कहा कि अब मैं और आप गरी जा सकता । अपर जाऊँगा ता मेरे पंख जल जाएँगे ।

## ६ मार्जिन्दे कर्तवा

सिलसिलाए रोखो शब नका गरे हाबिसात ।  
 सिलसिलाए रोखो सब मसले हपातो ममात ॥  
 सिलसिलाए रोखो शब तारे हरीरे बो रंग ।  
 जिससे बनाती है खात अपनी कबाए सिफात ॥  
 सिलसिलाए रोखो शब साबे अखल की फुर्या ।  
 जिससे बिचाती है खात खेगे बने मुमकिनत ॥  
 तुझको परबता हूँ यह, मुझको परबता हूँ यह ।  
 सिलसिलाए रोखो शब सैरफ्रीए काएनात ॥  
 तू हो अघर कम अघार, में हूँ अघर कम अघार ।  
 मीत हूँ तेरी बरात, मीत हूँ मेरी बरात ॥  
 तेरे शबो रोखकी और हज्जेकस्त हूँ बया ।  
 एक खमानेकी रौ जिसमें न दिन हूँ न रात ॥  
 आनीओ फ्रानी तमाम मुमुखाहाए हुनर ।  
 कारे जहाँ बे सवात, कारे जहाँ बे सवात ॥  
 मज्जसो माझिर फ्रना बातिओ आहिर फ्रना ।  
 मज्जो कुहन हो, कि, नी मज्जिसे माझिर फ्रना ॥१॥

## ६ मस्जिदों के कर्तव्य



[ यह नगम स्पेनमें लिखी गई थी और उम मस्जिदोंको देखकर लिखी गई जिस कभी मुसलमानोंने बनाया था और जो अब मुसलमानोंके स्पेनमें चले जानेके बाद उजाड़ पड़ी है। ]

यह रात दिनकी बगमाला ही घटनाओंकी रचना करती है। यही जीवन और मृत्युका मूल है। यह दो रंगोंवाले रंगमक तारोंकी भाँति है जिससे अस्तित्व अपनी बाहरी परिभाषाओंका ताना बाना बुनता है। यह दुनियाकी रचनाके पहले जिनका संगीत है जिससे ज्ञान या अस्तित्व (बुद्धि) सम्पादताया की ऊँच मीच दिखाता है। यह तुझको और मुझको सभीको परखता है कि वह बिदकको परखनवाला है। यदि तू या मैं कोई भी छोटा निकले तो फिर उसके भागमें मृत्यु ही है। तब रात दिनकी वास्तविकता इसके अतिरिक्त और क्या है कि एक समयकी एहूर है जिसमें न दिन है न रात। कलाके सारे चमत्कार सबके सब ही मिटन वाले हैं क्योंकि दुनियाक सार कार्य ही समाप्त होनेवाले हैं। समीका अन्त मृत्यु ही है। मौत ही आरम्भ है बहा अन्त है वहीं अन्त है और वही भीतरी भेद है। चाहे चित्र पुराना हो या नया उमका अन्त मृत्यु ही है ॥१॥

१ - है-मगर उस नकामें रंगे सबाते बवाम ।  
 जिसको किया हो किसी मर्बे कबुवाने तमाम ॥  
 मर्बे कबुवाका भमरु इशकसे साहब क्रोण ।  
 इशक है भससे हयात मौत है उसपर हराम ॥  
 तुंबो सुबक सर है गरबे खमानेकी रौ ।  
 इशक छुब एक सेक है सेक को खेता है घाम ॥  
 इशक की तकबीममें भसरे रबाके सिवा ।  
 और खमाने भी हैं जिनका नहीं कोई नाम ॥२॥

इशक बसे जिनाईक इशक बिसे मुस्तफा ।  
 इशक कबुवाका रसूस इशक कबुवाका कलाम ॥  
 इशककी मस्तीसे ह पेकरे विस ताब नाक ।  
 इशक ह सेहबाए खाम इशक है कासुसकिराम ॥  
 इशक प्रक्रीहै हरम, इशक भमीरे खुनुब ।  
 इशक है इन्नुसबीस उसके हखारों मकाम ॥  
 इशकके मिखराबसे नयमए तारे हयात ।  
 इशकसे नूर हयात इशकसे नारे हयात ॥३॥

ऐ हरमे कतबा । इशक से तेरा खुनुब ।  
 इशक सरापा बवाम जिसमें नहीं रफतो बूब ।  
 रंग हो या खिदतो संप खंग हो या हर्फे सौत ।  
 मोखजाए फ्रमकी है खूने जिगरसे नुमुब ॥  
 कतराए खूने जिगर सिसको बनाता है विस ।  
 खूने जिगरसे सबा सोखो सुदरो सुख ॥  
 तेरी प्रजा बिक क्रोख मेरी नबा सीना सोख ।  
 तुमसे बिसोंका हुनूर मुझसे बिसोंका कुमुब ॥४॥

हाँ ऐसे चित्रोंमें जो अमर होनेकी शक्ति होती है या किसी ईश्वर भक्तके हाथों पूरे हुए हों। ऐसे ईश्वर भक्तका काम वास्तवमें प्रेम और उत्साहसे प्रज्वलित होता है क्योंकि यही जीवन आधार है और मृत्युसे मुक्त है। यद्यपि जमानेकी लहर बड़ी ही तब और बागों ओर फैल जानेवाली है परन्तु इच्छा (प्रेम और उत्साह) स्वयं एक लहर है और उस लहरको रोक सती है। प्रेमकी शायरीमें तो आधुनिक कालके अतिरिक्त ऐसे और भी कई युग हैं जिनका कोई नाम नहीं है ॥२॥

प्रेम ही जिवील ऊरिष्ठाकी सौस ह जिससे वह खुदाका सम्बेध हजरत मुहम्मद तक पहुँचाता था और यही हजरत मुहम्मद खुदाके रसूल का दिल है। इसीके नभस मिटटीस बना हुआ इसान प्रज्वलित हुआ। यही कश्मा नगा खाने वाली शराब है यही वह प्यासा ह जिसमें प्रसिद्ध महाप्राणियों ने शराब पी है। यही कावेमें बँठा हुआ इस्लामका विधायक है यही क्रौबोंका नवृत्त करनेवाला है। यही राही है और इसकी हजारे भजिसे हैं। इसीके माखूनमे जीवन-बीणाक तार बज उटते हैं यही जीवनकी ज्योति है और मही जीवनकी आग है ॥३॥

आ स्पेनमें बनी हुई मस्जिद तु भी प्रेमक ही हाथों बनी थी। या कि तनामका तमाम अमर है और जो जाने जान वाला नहीं है। कलाकी कोई भी प्रणाली हा—भाहे रगकी चित्रकारी हा या इंटर-पत्थर द्वारा भवन रचना हा या संगीत हो या कविता जो सुर और शब्द की कणार्थें हैं —इन सबका आधार केबल परिधम और खूने जिगर ही है। खूने जिगरकी एक रूँ पत्थरमें मानवके दिलकी घटकन पैदा कर देती है। इसीमे हर प्रकारका सजीव जन्म सता है। ऐ मस्जिद तेरा बातावरण मनको ज्वालिमान करनेवाला है और मरा मन सीमेमें आग पैदा करता है। तुझमे मन आकर्षित हाता ह और मुझसे मन ग्यूस जाते हैं ॥४॥



भर्षों मुझसासे कम सीनए आबम नहीं ।  
 गरबे कफ़े ब्राकको हब है सपहरे बुबूब ॥  
 पैकरें मुरी को है सबबा मयस्तर तो क्या ।  
 उसको मयस्तर नहीं सोखो गुबाखे बुबूब ॥  
 काफ़िरे हिम्बी हूँ मैं बेब मेरा खौफ़ो धौक ।  
 बिन्में सलातो बुखे सब वे सलातो बुख ॥  
 शौक मेरी सय में है शौक मेरी नय में है ।  
 नसमए "अस्ताह हूँ" मेरे रगो पयमें है -- ॥१॥

ईश्वरके स्थान अर्घसे मानवके हृदयका महत्त्व कम नहीं है यद्यपि मिट्टीसे बने मानवकी सीमा तो आकाश ही प्रतीत होती है । क्रिस्तोंको सज्जवा और पूजाका जबसर तो प्राप्त ह परन्तु उन्हें पूजाका आनन्द उसकी वेदना प्राप्त नहीं क्योंकि वे अभिमायाहीन हैं । मैं हिन्दुस्तानका रहनेवाला काफ़िर हूँ परन्तु मेरा प्रेम और उत्साह तो देखो कि मेरे मनमें भी खुदा और हजरत मुहम्मदकी भक्ति है और ओलोंपर भी । मेरी रूममें मेरी आबाबमें यही प्रेम और उत्साह भर गया है और यही “अल्लाह बही है” का सगीत मेरी रग रग में बस गया है ॥५॥

---

## लेनिन (खुदाके हुजूरमें)

ऐ मनऊसो आक्राऊने पैदातिरे आयात ।  
 हुऊ यह ह कि हें सिन्दा ओ पम्पबा तिरो घात ॥  
 में कैसे समझता कि तू ह या कि नहीं है ।  
 हरबम मुतग्यर बे खिरबके मगरिम्मात ॥  
 मेहरम नहीं फिरतके सरोरे अक्ली से ।  
 बीनाए कबाकिब हो कि बानाए मबातात ॥  
 मान आँखने बेबा तो यह आत्म हुवा सावित ।  
 में जिसको समझता या कसीसाके कुराकात ॥  
 हम बंदे दाबो रोजमें जकड़े हुए बंदे ।  
 तू चाँकिने आसारी मिगारबए मानात ॥१॥

एक बात मगर मुझको इजाबत हो तो पूछू ।  
 हुऊ कर न सके जिसको हकीमोंके मझाकात ।  
 जब तक में जिया बेमए मद्रलाकके नीचे ।  
 काँटेकी तरह बिरुमें छटकती रही यह बात ॥  
 गुफ्तारके उसलूब वे काबू नहीं रहता ।  
 जब रहके मन्बर मुतलातिम हो ज्याकात ॥२॥

बहु कौन-सा आवम है कि तू जिसका है माबूब ?  
 बहु भादने प्लाकी कि जो है खेरे समावात ? ॥  
 मशारऊ के खुदाबन्द सफ़वाने फिरेंगी ।  
 मगरिबके खुदायन्द बरखमन्वा फलिरवात ॥  
 यौरपमें बहुत रीगनीए इस्मो हुगर है ।  
 हुऊ यह है कि बे अश्मए हैवा है यह शुस्मात ॥  
 रानाइ तामीरमें रौनऊमें, सफ़ा में ।  
 गिरदीसे कहीं बड़के हें बँकोंके इमारत ॥३॥

## ॥ लेनिन (खुदाके हुजूरमें)

ऐ खुदा जिसकी निदानिया सांसों और ससारमें ब्यक्त है। सच तो यह है कि तेरा ही ब्यक्तिरब है जा अमर है और जीवित है। मैं जैसे समझता कि तू है या नहीं है क्योंकि हर क्षण दुनियाक बुद्धिजीवी अपने बिचार बयस्ते रहते थे। चाहे ताराका देखनवामे हा या धनम्पति शास्त्र के पण्डित हां कोई भी प्रकृतिके अनन्त भेदोंमें परिचित नहीं। अब मृत्युके बाद स्वय अपनी आँखसे देखा तो यह सिद्ध हुआ कि जिसे अवतक में पादरियोंकी बकवास समझता था। अब ईश्वरका अस्तित्व सिद्ध हुआ हम दिन और रातकी बड़ियोंमें जकड़े हुए मानव है और तू जमाने युग और क्षणोंको जन्म देनवाला है ॥१॥

यदि तरी आजा पाई तो एक बात पुछूं जिसे बुद्धिजीवियोंकी कितायें भी सुझा नहीं पाई हैं। जबतक आकाशके नीचे में जीता रहा यही बात मममें छटकती रही। जब आराममें बहुतसे बिचार तुफान मचा रहे हों तो बात कहनके तरीकेपर भी पूरी तरह नियन्त्रण नहीं रहता ॥२॥

प्रश्न यह है कि वह कौन-सा मानव है कि तू जिसका गुना है? क्या यह वह मानव है जो आकाशके नीचे बना हुआ है। मगर पूरबके गुना या मालिक ता योग्यमें बसनबाग राट्ट बन बैठे हैं और पदिषममें बमकत हुए जरों (परमाणु) का राज है। यों ता योरापमें कला और विज्ञानका बड़ा प्रभाव है परन्तु सच यह है कि यह एम अन्धकार मयी धरतीकी भाँति है जिसमें अमृत नहीं है। (कहा जाता है कि अमृत एक एम प्रदगमें है जा अगधरमें घिरा रहता है) रचना की सुन्दरता शाभा और मफाईमें गिन्जाम बहो अधिक बकौक टपतर है ॥३॥

खाहिरमें तिजारत ह हकीकत में जुमा है ।  
 सुब एकका साखोंके लिये मर्गे मज्जाजात ॥  
 यह इस्म यह हिकमत यह तबन्दुर यह हुकूमत ।  
 पीते है सहू बेटे है तासीमें मसाबस्त ॥  
 बेकारोओ उरपानीओ मझवारो ओ इफ्तसास ।  
 क्या कम है किरंगी सबमिज्मत के फ़ुदाहात ॥  
 यह कौन कि फ़राने समाची से हो महकम ।  
 हब उसके कमामातको है बर्को बुझारात ॥  
 है बिकके लिये मौत मसीनोंकी हुकूमत ।  
 एहसासे मुरबतको कुबस बेटे है आलात ॥४॥

आसार तो कुछ कुछ नखर भाते ह कि आखिर ।  
 तबबीरको तक्रबीरके सातिरने किया मात ॥  
 मझानेकी बुम्बाब में भाया है तखलबुल ।  
 बंटे है इसी क्रिममें पीराने घ़राबात ॥  
 जेहरों पे जो मुर्छी नखर आती है सरे ग्राम ।  
 या घाका है या साघरो मीमाकी करामात ॥५॥

तू ज़ाबिरो आबिल है मगर तेरे ज़ही में ।  
 हैं तस्ब बहुत बंदए मखदूरके अवकात ।  
 कब डूबेगा सरमाया परस्तीका सखीना ।  
 बुनिया ह तिरौ मुतखिरे रोखे मकाफ़ात ॥६॥

यों तो इनका व्यवसाय तिजारत ही प्रतीत होता है परन्तु वास्तवमें उनकी अथ व्यवस्था एक प्रकारका जुआ ही है जिसमें एक को जो मूद मिस्रता है वह लाखोंके लिए मृत्युका संदेश बन जाता है। यह विज्ञान यह दर्शन शास्त्र यह बुद्धिमानी और यह राजनीति—सब भ्रम ही हैं। दून पीते हैं एकता और समानताकी गिफ्त देते हैं। बकारी नम्रता धराव और गरीबी ही योरपकी सारी समताके भ्रमत्कार हैं। वह राष्ट्र या जनता जो ईश्वरकी दीक्षासे वधित हो वह केवल भाप और विजली ही के भ्रमत्कार दिखा सकती है। मशीनोंकी प्रधानता और हकूमत दिसके लिये मौत्र ह क्योंकि ऐसे यन्त्र प्रेम और उच्च भावनाओं को कुचल देते हैं ॥४॥

कुछ कुछ इसका पता लगता है कि तदबीरको लकड़ीर (भाग्य) न मात दे सी है और पश्चिमी सम्प्रदायकी नीब ही डीबीडोल ही उठी है और योरपके कुछ बुद्धिजीवी इसी चिन्तामें डूबे हुए हैं। मुखपर जो धामकी लाली दिखाई देती है। वह या तो धरावके नमोक कारण है या पाठहर और शृंगारके प्रसाधनक कारण है ॥५॥

ऐ खुदा तू न्यायी और सर्वशक्तिमान है। मगर तेरी दुनियामें मजदूरों और निधनोंके दिन रात बडे बठिन हैं। आखिर पुंजीबानकी भाव कब डूबगी तरी दुनिया उनके दण्डका विम देखनेकी प्रतीक्षामें है ॥६॥

## ८ फरिश्तोंका गीत

अक्स है बे समाम अभी इस्क है बे मुकाम अभी ।  
 नशा गरे अक्स तिरा नश्र ह नातमाम अभी ॥  
 फुस्के बुबा की घातमें रिबो प्रलीहो मीरो पीर ।  
 तेरे जहाँ में है बही परबिन्ने सुष्हो धाम अभी ॥  
 तेरे अभीर मास मस्त, तेरे प्रकीर हाक मस्त ।  
 बदा ह कूचागद अभी खजाजा असन्द बाम अभी ॥  
 बामिशो बीनो इस्मो फ्रन बम्बगोए हवस तमाम ।  
 इस्के मिरह कुशाएका प्रन्द नहीं है माम अभी ॥  
 जौहरे बिम्बगी है इस्क जौहरे इस्क है कुशो ।  
 माह कि है यह तेरो तेर परबिगिए नियाम अभी ॥





## १. फुमनि खुवा

उठो मेरी बुनियाके एरोबोको जगा बो ।  
 काके उमराके बरो बीबार हिला बो ॥  
 परमाओ गुलामोका कहू सोजे यहीं से ।  
 कुजके प्ररोमायाको शाहीं से कड़ा बो ॥  
 सुकतानिए जम्हूरका माता है जमाना ।  
 जो नकसे कुहम तुमको नखर माए मिटा बो ॥  
 जिस खेतसे बेहकाको मयस्सर नहीं रोखी ।  
 उस खेतके हर जोशए गम्बुमको जला बो ॥  
 क्यों कासिको मझमूहमे हायल रहे परदे ।  
 पीराने कलीसाको कलीसासे उठा बो ॥  
 'हऊ रा मसुबुदे, सनम रा बतबाफे ।'  
 बेहतर है चिराणे हरमो बेर बुझाबो ॥  
 में माबुसो बेबार हूँ मरमरकी सिल्लेसे ।  
 मेरे लिए मिट्टीका हरम और बना बो ।  
 तहजीबे नवी फारपहे वीसा परा है ।  
 आवांजे जमुं क्षाएरे मजरिहको सिखा बो ।

## २. खूदाका हुक्म

(करिप्तोंको)

उठो, मेरी बुनियादके गुरीबोंको जगा दो और ममीरों और घनवानोंके महलोंकी दीवारें हिसा दो। गुलामोंके खूनको उनके मनके उत्साहसे गर्म करो और जो शक्तिहीन चिड़ियाकी भाँति हैं उनको चिड़ियोंके शिकार करनेवाले बाजसे सड़ा दो। अब जनता राजका युग भा रहा है आ भी पुणनी रेखाएँ तुमको दिखाई दें उन्हें मिटा दो। जिस खेतसे किसानको रोटी और राजों न मिन्ने उस खेतके गहूँके हरे दानेको फूँक दो। ईदबार और उसकी प्रजाके बीचमें क्यों परदे पड़े रहे। गिरजोंके पादरियाका, जो दोनोंके बीचमें पड़ गए हैं गिरजोस उठा दो। हक (सत्य ईदबार) सज्जमें हो और मूर्तियां कावेका तबाफ़ (पत्र) सगा रही हों। अच्छा यही है कि कावा और मन्दिरक चिराय बुझाकर उनके भेदभाव मिटा दो। मैं स्फटिक और बहुमूल्य पत्थरक बने हुए सबनों और मन्दिरोंसे उकठा गया हूँ भरे लिए मिट्टीका एक कावा और बना दो। मैं पश्चिमी सभ्यता कीर्णोंकी बनी दुनिया है इसे तोड़नेके लिए पूर्वके कविको दीवानापन और पागलपनके बिधानको सिखा दो।

---

## १० जिब्रीसो हथलीस

जिब्रीस—हम हमे डीरीना कसो हँ षहाने रंगो यू ?।

हथलीस—सोखो साखो बरों बाखो जस्तुनु धी धारजू ॥

जिब्रीस—हूर धड़ी मज्जलाक पर रहती हँ तेरी मुज्जुगू ।

क्या नहीं मुमकिन कि तेरा चाक बामन हो रजू ॥

इ०— आह ए जिब्रीस तू बाकिऊ नहीं इस राखसे ।

कर गया सरमस्त मुझको दूढकर मेरा सुवू ॥

अब यहाँ मेरी गुजर मुमकिन नहीं मुमकिन नहीं ।

किस हजर बामोज हँ यह भाकमे वे काखो कू ॥

जिसकी भीमोडीमें हो सोखे बुझने कारणमात ।

उसके हज्जें "तऊमतू" अफठा हँ या "का तऊमतू"

जि०— जो बिए इकार से तुने मुनामाते बुलन्ध  
वधम यखामे प्ररिछोकी रही क्या भाबक ।

इ०— हँ मेरी जुरमतसे मुझे काकमे खोले मुम् ।

मेरे फ़ितने नामाए व्यक्तो छिरबका तारो पु ॥

बेचता हँ तू प्रकृत साहिम्से रश्मे ख़रोशर ।

कौन तूझीके तमाचे घा रहा हे, में कि तू ? ॥

बिब्य भी बे बस्तोपा इत्यास भी वे बस्तो पा ।

मेरे तूझी धम ब धम बरया ब बरया जू ब जू ॥

गर कभी छिलवत मयस्सर हो तो पूछ अस्ताहसे ।

किस्ताए भाबमको रंगों कर गया किसका कू ॥

म खडकता हँ बिने यखामे काटे की तरह ।

तू फकत 'अस्ताह हू' 'मस्ताह हू' 'मस्ताह हू' ।

## १० जिन्दगीलो इब्लीस

फरिस्ता जिन्दगील इब्लीस (सीतान) से पूछता है कि ऐ साषी यह रग और सुगन्धका ससार कैसा है। इब्लीस कहता है कि यह भौतिक संसार केवल दुःख और आनन्द - अभिरूपा और खोज वेदना और पीड़ाका ससार है। जिन्दगील कहता है कि अब भी हर क्षण आकाश पर तेरी चर्चा होती है। क्या यह सम्भव नहीं है कि तेरा फटा हुआ दामन फिर रफू हो जाय अबवा भगवानसे तू क्षमा मांगकर फिर फरिस्तोमें सम्मिलित हो जाए। इब्लीस कहता है कि ऐ जिन्दगील तू इस भदको नहीं जामता। मेरा प्याला टूटकर मुझको मस्त कर गया है। अब उस ससारमें मरा जाना असम्भव है। मुझे प्रतीत होता है कि वह सपाट दुनिया कैसी नीरस फीकी है और कैसी मौन है। जिसके निरास होनपर सारे विश्वकी आन्तरिक शक्ति और तप निर्भर हो उसके लिये यह कहना उचित है कि निरास न होना चाहिये या यह कहना कि निरास होना चाहिये।

जिन्दगील कहता है कि तूने सजवा करनेको मना करके सम्मानका स्थान खो दिया और तेरी इस यातस खुदाकी दृष्टिमें फरिस्तोकी आबरु गिर गई।

इब्लीस जवाब देता है कि मेरे साहससे मिट्टीके पुतलमें आगे बढ़ना उरसाह पैवा हुआ है। मेरी दरारतें बुद्धि और समझवारीके बस्त्रोंका ताना-बाना बनी हुई हैं। तू तो किनारे पर छड़ा अगुछाई और सुराईका सपप देखता है इस संधपमें बूदकर सूफामके थपेड़े तू खा रहा है या मैं? खिबर और इत्यास जैसे पैगम्बर बिवाह हैं परन्तु मेरे उठाए हुए सूफान हर सह्र, हर समुद्र और हर नदीमें हैं। यदि कभी तुझे अस्साहसे एकान्तमें भिखना हो तो यह पूछना कि यह किसका रक्त था जो आदमक किस्तको रगीन कर गया। मैं अस्साहके दिलमें आज भी कांटा बनकर घटकता हूँ और तू तो केवल उसकी प्रशंसा करनेवाला ही है यही कहता है कि "वही अस्साह है" वही अस्साह है", वही अस्साह है।"

## ११ मुहब्बत

उधसे शबकी चुस्के थीं अभी ना आशाना खमसे ।  
 सितारे आसमाके बेक़बर ये सस्तते रम से ॥  
 इमर अपने लिबासे नीमें बेगाना-सा सगता था ।  
 न था बाकिर अभी गरबिषके आइने मुसस्मसे ।  
 अभी इमकाके खुसमत खानेसे उभरी ही थी बुनिया ।  
 मखाके खिम्बगी पोक्षीबा था पहनाए आसम से ॥  
 कमासे मजमें हस्ती की अभी थी इस्तबा गोया ।  
 हुबेबा थी नगोनेकी तमना खदामे ख़ातम से ॥१॥

सुना है आसमे आसामें कोई कीमियापर था ।  
 सख़्त थी जिसकी ख़ाके पा में बड़कर सापर जमसे ।  
 लिबा था अर्शके पाए पे एक अक्सीरका मुस्फ़ा ।  
 छुपाते थे ख़रिष्टे जिसको खदमे कहे आशम से ।  
 निगाहें ताकमें रहती थीं लेकिन कीमियागरकी ।  
 यह इस मुस्खेको बड़कर जानता था इस्मे आशमसे ॥  
 बड़ा तस्बीह ख़्वातीके ख़हामे अर्शकी खानिब ।  
 तमनाए बिली आख़िर खर आई सइए पैहम से ॥२॥

फिराया क्रिके अख़वा ने उसे खदमे इम्का में ॥  
 छुपेगी क्या कोई शी ख़ारगाहे हक़के मेहरमसे ॥  
 खमक तारेले मांगी ख़ाबसे बाने खिगर माया ।  
 उड़ाई तीरगी थोड़ी-सी शबकी चुस्के बरहम से ॥  
 तड़प खिजलीसे पाई हूरसे पाकीख़यी पाई ।  
 हुरारतली ग़रत हाए मसीहे इस्ने मरयमसे ॥  
 खरासे फिर ख़ुबीयत से शाने बे मियाखी सो ।  
 मसकते आख़िरो उख़्ताबगी तख़्ख़ीरे शबकमसे ॥  
 फिर इस अख़्वाको घोला खदमए हूबां के पानीमें ।  
 मुरख़्ख़ने मुहब्बत नाम पाया अर्श आशमसे ॥३॥

११ मुहूर्त्त

रातकी दुल्हनके बाल अभी घुंभराले न बने थे और आकाशके तारे अभी चलनेके मन्त्रसे परिचित न थे। चाँद अपने नए वस्त्रोंमें बेजोड़ सा लगता था कि अभी चलनेके मामले हुए विधानसे जानकारी न रखता था। अभी सम्भावनाके अन्धकारमय सप्ताहसे विश्व उभरा ही था और उसकी आत्मामें जीवन प्रेम और उत्साह छिपा हुआ था। जीवनकी ब्यबस्था की सीमा तक पहुँचनेका अभी आरम्भ ही हुआ था और अँगूठीके मनसे नगकी अमिलापा प्रगट हो रही थी।

सुना है दूसरी दुनियामें एक कीमियागर था जिसके पाँवोंके मीचे मिट्टी भी आकर गुड़ हो जाती थी। अर्घ ( ईश्वर स्थान ) के पाए पर एक इक्कीरका नुस्खा लिखा था जिस फ्रिस्टे आदमीकी मन्त्रोंसे छिपाते थे परन्तु कीमियागर निरन्तर उसीकी खोजमें लगा रहता था वह इसकी इस्मे आजम (महामन्त्र) से भी बढ़कर जानता था। एक दिन पूजा के वहाने मासा रुकर अशकी ओर बढ़ा और बराबर कोक्षिप्त करनेसे आखिर एक दिन मनकी कामना पूरी हुई।

फिर इस नुस्खेके तत्त्वोंकी खोजमें पूरी दुनियामें इधर-उधर भटका, भसा कौनसी भीड़ ईश्वरकी सभाके भेद जाननेवालेकी मिगाहोंसे छिप सकती है। उसने तारोंसे चमक और चाँदसे उसके दिलका बाग मांगा और रातके बिखर बालासे थोड़ा-सा अन्धेरा मांगा। विजलीसे सड़प प्राप्त की अप्पराओंसे गुड़ता पाई। हजरत ईसाके प्राणों ( जो मुर्दोंको जीवित कर देते थे ) से चमीं सी। जरा से फिर खुदासे बे-परवाही और स्वतन्त्रता की फ्रिस्टोंसे पूजा नम्रता सी और ओसकी प्रकृतिसे छात्रसारी सी फिर इन वस्तुओंको अमृतमें घोला और इस मिश्रणमें महान अशासे मुहूर्त्त या प्रमका नाम पाया।

मुहम्मिसने यह पानी हस्तिए नौञ्जेस पर छिड़का ।  
 पिरह बोली हुनरने उसके गोपा कारे आलम से ॥  
 हुई बुन्दिया मयी शरौने सुलठे लबाबकी छोड़ा ।  
 गसे मिलने लगे उठ उठके अपने अपने हमबम से ॥  
 झिरामे मास पाया माप्रताबौने सितारौ ने ।  
 अठक सुर्चौने पाई, बास पाए मरामा शरौने ॥

---

कीमियागरने यह पानी नए पैदा हुए जीवनपर छिड़का और उसकी बसाने ससारके सारे कार्योंकी कठिनाइयोंको सुलझा दिया। इसका प्रभाव यह हुआ कि सोई हुई पुनियामें गतिका जन्म हुआ और परमाणुओंने नींदके मञ्चेको छोड़ दिया और उठ उठकर अपने अपने ओझोंसे मिलने लगे। सूरज और तारोंने मस्तीसे घमडसे बसना सीख लिया। कलियोंने चटकना सीखा और साराके फूलके बागोंने प्रेमका दाग पाया।

---



१२ गजलें

फिर, बिराणे लालासे रौशन हुए कोहो बमन ।  
 मुझको फिर नगमों पे उक्ताले लगा मुँह बमन ॥  
 फूस हँ सेहरामें या परियां इत्तार मन्बर इत्तार ।  
 ऊँचे ऊँचे मोले नीसे पीसे पीसे पेरहन ॥  
 बर्ग गुलपर रख गई शबूनमका मोती बाबे सुम्ह ।  
 और चमकाती है उस मोतीको सूरजकी फिरम ॥  
 हुस्ने बे परवाको अपनी बे नक्राबी के सिमे ।  
 हों अगर सहरोंसे बन प्यारे तो साहर अच्छे कि बन ॥  
 अपने मनमें डूब कर पाबा सुराणे सिन्वगी ।  
 तू अगर मेरा नहीं बनता न बन अपना तो बन ॥  
 मनकी बुनिया ? मनकी बुनिया सोखो मस्तो बरबो दौक ।  
 तनकी बुनिया ? तनकी बुनिया सुबो लीबा मकरो फ्रन ॥  
 मनकी बौस्त हाथ आती है तो फिर जाती नहीं ।  
 तनकी बौस्त छाब है आता है धम आता है धम ॥  
 मनकी बुनियामें न पाया मने अक्ररंगी का राज ।  
 मनकी बुनियामें न बेचे मेने धँसो बरहमन ॥  
 पानी पानी कर गई मुझको इस्मर को यह बात ।  
 तू मुझा अब पीरके आगे न तन तेरा न मन ॥

फिर झाले के फूससे पहाड़ और वादियोंमें प्रकाश फैला है और मुझको बाघ बघीरोंके पखेरू फिर गानेकी प्रेरणा देने लगे हैं। जगसमें फूल नहीं है ऐसा प्रतीत होता है कि उम्दे, पीले और नीले बस्त्र पहने परियाँ (अपसरार्यें) खड़ी हैं। गुलाबके फूसके पत्तोंपर ओसके मोती प्रभातकी हवा रख गई हैं और उस मोतीको सूरजकी किरणोंने और भी बमका दिया है। यदि खनीले और स्वतन्त्र सुन्दरताको अपनको प्रगट करनेके लिये नगरोंसे जगस अच्छे सगते हों तो मला नगर मले या जगस। ऐ मानव! अपने मनमें बूबकर बीवमका भेद पाछे यदि मेरा नहीं बनता तो न सही अपना ही बमजा। मनकी बुनियामें उत्साहकी जलन और मस्ती प्रेम और सगन है और तनकी बुनियाँ चाटे और साम छस-कपट और घोखा ही है। मनकी बुनियामें मैंने अंग्रेजोंका राज न देखा न मुस्ला और ब्रह्मणोंका ही पता पाया। मुझको एक क़ज़ीर की यह बात पामी पानी कर गई (सज्जित कर गई) कि यदि तू बूसरेके आगे झुक गया तो फिर न मन ही तेरा है न सन (दारीर) ही तेरा है।

सितारसे आगे जहाँ और भी है ।  
 अभी इसकाके इमतिहाँ और भी है ॥  
 तही जित्बगीसे नहीं यह फ्रवाएँ ।  
 यहाँ सकुड़ों कारवाँ और भी है ॥  
 क्रमास्त न कर आरुमे रौंगे बू पर ।  
 जमन और भी अपशिर्वाँ और भी है ।  
 अपर खो गया एक नशोमन तो क्या राम ।  
 मद्रामाले आहो फ्रुगौँ और भी है ॥  
 तू पाहीं है परवाय है क्रान तेरा ।  
 तिरे सामने आसर्माँ और भी है ॥  
 इसी रोखो सबमें जमझकर न रह जा ।  
 कि तेरे जमानो मकौँ और भी है ॥  
 गए बिन कि तमहा था मे अंजुमनमें ।  
 यहाँ अब मेरे राजदरौँ और भी है ॥

सितारोंसे आगे भी अभी बहुतसे ससार हैं। अभी प्रेम और उत्साहकी और भी परीक्षाएँ हैं। जीवनसे यह वातावरण बधित और खाली नहीं है अभी इनमें सबको जाफ़िले और भी हैं। इस रग और सुगन्धकी बाहरी दुनियापर ही सन्तुष्ट न हो क्योंकि अभी बहुतसे वाद्य और बहुतसे घोंसले और ठिकाने और भी हैं। अगर एक स्थान या ठिकाना खो गया तो खेद ही क्या है? अभी क्रियाद करनेके और भी कई स्थान हैं। तू बाज पखेरेकी भाँति है, उरा काम सदा उड़ते रहना ही है तरे सामने अभी और कई आकाश हैं। इसी रात-दिनके चक्के उलझकर न रह जा। तेरे लिए समय और स्थानकी यही सीमाएँ नहीं ह तेरे युग और स्थान और भी हैं। वह समय गया जब इक़्बाल को यह शिकायत थी कि वह इस सभामें अकेला है अब इस सभामें उसका भेद जानने वाला और भी हैं।

---